बीकानेरी कहावतें : एक अध्ययन

(राजस्थान विश्वविद्यालय की एम ए (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध)

अमरसिंह राठौड
एम ए

भूमिका लेखक—

डा० कन्हैयालाल शर्मा
एम. ए. पी-एच डी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डूंगर महाविद्यालय बीकानेर

प्रकाशक
राठौड़ प्रकाशन, रानी बाजार, बीकानेर (राजस्थान)

मूल्य
रु. १०.००

बीकानेरी कहावतें : एक अध्ययन

लेखक अमरसिंह राठोड

प्रकाशक
राठोड प्रकाशन
रानी बाजार
बीकानेर

मुद्रक
राजश्री प्रिन्टर्स
के० ई० एम० रोड,
बीकानेर

BIKANERI KAHAWATEN EK ADHYAYAN
AMAR SINGH RATHORE Price Rs 10/—

प्रातः स्मरणीय गुरुवृन्द—

डा० स्वर्ण लता अग्रवाल

डा० कन्हैयालाल शर्मा

डा० ब्रज मोहन शर्मा

डा० देवी प्रसाद गुप्त

डा० मदन केवलिया

डा० ईश्वरानन्द शर्मा

डा० ब्रज नारायण पुरोहित

जिनके चरणों में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ,
को सादर समर्पित !

भूमिका

आधुनिक हिन्दी-गवेषणा भाषा-विज्ञान और लोक-साहित्य के अध्ययन की ओर विशेष रूप से प्रवृत्त है। ग्रियर्सन के उपरांत देश के विभिन्न विद्वानो का ध्यान इसकी विभिन्न बोलियो, विभाषाओ और भाषाओ के अध्ययन की ओर गया है, जिससे उनके द्वारा स्थापित तथ्यो का पुनर्मूल्याकन हुआ है और अध्ययन को नयी दिशा मिली है। लोक-साहित्य के अध्ययन मे उसके विविध रूपो और भेदो ने अध्येताओ को आकृष्ट किया है। इन अध्ययनो मे लोकगीतो और लोक-कथाओ के बाद तीसरा स्थान लोकोक्तियो को मिला है। लोकोक्तियो के अनेक कोष व संग्रह प्रकाशित हुए हैं और उन पर अनेक गवेषणापूर्ण प्रबंध भी लिखे गये है। राजस्थान मे हाड़ोती कहावतें, भीलो की कहावतें मेवाडी कहावतें, राजस्थानी कहावतें आदि उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। इसी परम्परा का निर्वाह करते हुए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया गया है।

जनश्रुति है कि बीकानेर से सरस्वती लुप्त हो गई है। कभी यहां सरस्वती (नदी विशेष और साहित्य) की अबाध धारा प्रवाहित थी। सरस्वती नदी तो लुप्त होकर 'नाली' रूप मे अपने अवशेष छोड गई है पर लोक-साहित्य की धारा आज भी अबाध रूप से यहा प्रवाहित है, अलबत्ता अलंकृत साहित्य-धारा कुछ दशक पूर्व अवश्य शुष्क-सी दीख पड रही थी, वह भी अब सवेग प्रवाहित है। अलंकृत साहित्य का अध्ययन तो कमरे के भीतर मेज-कुर्सी पर किया जा सकता है। इस प्रकार वह सरल होता है। पर लोक-साहित्य के अध्ययन मे क्षेत्रीय कार्य मे अनेक कठिनाइया आती है, जिनका अनुभव इन पंक्तियो के लेखक ने 'हाड़ोती बोली और लोक-साहित्य के अध्ययन काल मे किया है वे वर्णन सीमा मे दुर्बन्ध्य होती है। अपने एम ए उत्तरार्द्ध के शेष प्रश्नपत्रो को तैयार करते हुए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की सामग्री का संचयन और उसका वैज्ञानिक रीति से अध्ययन-विश्लेषण असाधारण परिश्रमशीलता और लगन की अपेक्षा रखते हैं जिनका परिचय लेखक ने दिया है।

क्षेत्र-विशेष की कहावतो का अध्ययन उसके व्यापक लोक-जीवन का सर्वांगीण अध्ययन होता है। शताब्दियो से लोक-मानस मे घर किये कालानुकूल भाषा के परिधान मे सज-संवर कर प्रस्तुत होने वाली कहावतें नवीनता मे प्राचीनता और प्राचीनता मे नवीनता की परिचायिका होती है। परिवर्तनशीलता तो उनके कलेवर और अतस् दोनो की विशेषता है। ये अनुभवों के दीर्घकालीन अध्ययन-विश्लेषण से उद्‌भूत होती है और अपनी उपयोगिता के बल पर लो मे स्थान बनाये रखती है। लोक-मानस की ये अक्षय निधियां जड़ता से

पर सदैव सचेतन बनी रहती है। इनमें इतिहास और वर्तमान एक साथ प्रतिध्वनित होता है, व्यक्ति और समाज का एक साथ चित्रण मिलता है तथा चेतन और अवचेतन दोनों इनमें सक्रिय मिलते हैं। सौंदर्यशास्त्र की सूक्ष्मताएं, जो लोकमानस को शताब्दियों से प्रभावित किये हुए है, इनमें मिलती है और मिलता है इनमें भाषा का बनता-बिगड़ता स्वरूप। अतः इनका अध्ययन अनेक दृष्टियों से संभव है।

'बीकानेरी कहावतें' में लेखक ने लघुशोध-प्रबंध की सीमाओं में बंधकर अपेक्षाकृत व्यापक दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसमें कहावतों के सैद्धान्तिक और ऐतिहासिक स्वरूप की व्याख्या के साथ-साथ कथ्य और शिल्पगत अध्ययन–विश्लेषण हुआ है। शोध-प्रबंध के तीसरे व चौथे अध्याय अत्यन्त मनोयोग व परिश्रम से लिखे होने के कारण पाठक के मन पर लेखक की गहरी सूझ-बूझ व अध्ययन विश्लेषण की क्षमता की छाप छोड़ेंगे। लेखक ने बीकानेर के क्षेत्रीय जीवन की गहराई में घुसकर उसमें से लोकोक्ति-मौक्तिक संग्रह किये हैं। किसी अन्य भाषा की लोकोक्ति संग्रह-कोषों के आधार पर भाषा रूपान्तर के साथ उन्हें अपनी बनाकर प्रस्तुत करने के दोष से वे मुक्त हैं, जो अनेक ऐसी पुस्तकों में मिलता है। अनेक ऐसे उदाहरण पुस्तक में है जो भाषा व वस्तु-निरूपण की दृष्टि से बीकानेर-क्षेत्र के नहीं प्रतीत होते पर लेखक ने तो बीकानेरी बातों की कहावतों के स्थान पर 'बीकानेर जिले की लोक प्रचलित कहावतों' को आधार-सामग्री के रूप में ग्रहण किया है, इसलिए वस्तु-निरूपण भी देश-सीमा से व्यापक बन गया है। वस्तु-परिधि के इस विस्तार से अध्ययन की उपादेयता बढ़ी है।

श्री अमर सिंह राठौड़ का यह अध्ययन उनके गंभीर चिन्तन और शोध-दृष्टि से प्रसूत है। सामग्री संकलन, विश्लेषण-वर्गीकरण और प्रस्तुतीकरण आदि उनके व्यवस्थित अध्ययन के परिचायक हैं। इसलिए उनका यह लघु शोध प्रबंध उनकी कहावतों सम्बन्धी भविष्यवाणी के समान ही 'नई संभावनाएं और शोध की दृष्टियों' को बढ़ायेगा। मुझे अपने उदीयमान शिष्य की आरंभिक रचना की 'भूमिका' लिखकर प्रसन्नता हुई है। मेरी कामना है कि जिस परम्परा को लेखक ने आगे बढ़ाया है वह शोधार्थियों, छात्रों एवं विद्वानों को प्रेरणा देती रहे। मैं इस अध्ययन का हृदय से स्वागत करता हूं।

डॉ. कन्हैया लाल शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डूंगर महाविद्यालय बीकानेर

दिनांक १५ जुलाई, १९७०

प्राक्कथन

कहावतें हमारी बोल-चाल मे जीवन और स्फूर्ति की चमकती हुई छोटी-छोटी चिनगारियां हैं। वे, हमारे भोजन को पौष्टिक और स्वास्थ्यकर बनाने वाले उन तत्वो के समान हैं, जिन्हे हम जीवन तत्व कहते है। कहावतो मे सचमुच ऐसी ही प्रतिभा है।

राजस्थानी भाषा मे कहावतो का एक अक्षुण्ण भण्डार है। पिछले कुछ वर्षों मे विद्वानो का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और उन्होने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से इन पर अपनी विचार-सामग्री प्रस्तुत की। डा० कन्हैया लाल सहल ने सर्व प्रथम राजस्थानी कहावतो पर मौलिक और विद्वतापूर्ण शोध-सामग्री तैयार कर, दिशा निर्देशन का कार्य किया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध बीकानेर क्षेत्र की कहावतो के अध्ययन और विश्लेषण को लेकर तैयार किया गया है। 'बीकानेरी कहावतो' से तात्पर्य बीकानेर जिले मे लोक-प्रचलित कहावतो से है। यहा केवल बीकानेरी बोली बोलने वाले ही निवास नही करते है बल्कि और अनेको प्रकार की बोलिया यहा बोली जाती हैं।

अत शुद्ध बीकानेरी बोली की कहावतो के अतिरिक्त दूसरी बोली और भाषा मिश्रित कहावतें भी 'बीकानेरी कहावतो' के अन्तर्गत ली गई हैं।

'अध्ययन' को पूर्ण वैज्ञानिक और स्पष्ट बनाने का प्रयास किया गया है। सम्पूर्ण अध्ययन को पाच सोपानो मे विभक्त करके 'अध्याय' नाम से अभिहित किया गया है। पहले अध्याय मे बीकानेर परिचय विभिन्न दृष्टिकोणो के आधार पर दिया गया है। दूसरा अध्याय कहावतो के स्वरूप निर्धारण और उनके महत्व को प्रतिपादित करता है। तीसरे अध्याय मे कहावतो के उद्भव और विकास पर विचार किया गया है। चौथे अध्याय मे कहावतो का वर्गीकरण शिल्पगत और कथ्यगत, आधार पर किया गया है। पाचवें तथा अन्तिम अध्याय मे बीकानेरी कहावतो के भविष्य पर विचार किया गया है। यह ध्यातव्य है कि चौथा अध्याय ही प्रस्तुत शोध विषय की आत्मा है।

कहावतो का सकलन एक दुष्कर कार्य है। इसके सकलन मे मुझे एक लम्बा समय खर्च करना पडा है। प्रस्तुत विश्लेषित कहावतें कुछ अपनो तथा बाकी अन्य लोगो के मस्तिष्क के सचित कोष की निधि हैं। श्रद्धेय गुरुवर डा ब्रजनारायण जी पुरोहित से मुझे बहुत सी कहावतें प्राप्त हुई है, इसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। परम् पूजनीया 'मा' का मौखिक कहावती साहित्य, मेरा लिखित कहावती साहित्य बन गया है। प्रात स्मरणीय पापाजो ठा सावलसिह

जी राठोड की सतत प्रेरणा तो इस 'प्रबन्ध' के रूप मे फलित हुई ही है ।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध मे विषय मे श्रद्धेय गुरुवर डा० कन्हैयालाल जी शर्मा (अध्यक्ष हिन्दी विभाग) डा० ब्रजमोहन जी शर्मा डा० देवीप्रसाद जी गुप्त, डा० ईश्वरानन्द जी शर्मा, डा० ब्रजनारायण जी पुरोहित (प्राध्यापक वर्ग, हिन्दी विभाग) से प्राप्त अमूल्य दिशा-निर्देश एव मार्ग-दर्शन हेतु उन्ही का यह एक तुच्छ शिष्य धन्यवाद ज्ञापित करने की धृष्टता नही कर सकता । हा, मन ही मन कोटिश प्रणाम गुरुजनो को अर्पित है ।

राजस्थानी साहित्य के गण्यमान्य विद्वान सर्व श्री नरोत्तमदास जी स्वामी, अगरचन्दजी नाहटा डा० मनोहर शर्मा, स प्राप्त अमूल्य सुझावो व परामर्शों के लिए, धन्यवाद ज्ञापित करना मेरा पावन कर्त्तव्य है ।

मेरे अन्तरग मित्र श्री नरपतसिंह जी सोढा एव श्री ज्ञानमल जी सेवग एम ए, के अथक सहयोग का इतना ऋण मुझ पर रहा है कि मैं अनेकानेक धन्यवाद देकर भी उऋण नही हो सकता ।

परम् श्रद्धेय गुरुवर डा० मदन केवलिया का परिश्रम और निर्देश ही अपने साकार रूप मे प्रकट हो सका है । डा० साहब के चरणो मे बैठ कर ही यह लघु शोध-प्रबन्ध लिखा गया है । अपने अध्ययन-अध्यापन के कार्य मे व्यस्त होते हुए भी गुरुजी ने जिस गुरुत्व स्नेह से मुझे निर्देशन प्रदान किया उसके लिए मेरा अन्तर्मन गुरु-भक्ति मे बारम्बार उनको नमन करता है ।

श्रद्धेय भाई साहब श्री नन्दलालसिंह जी राठोड, इस लघु शोध प्रबन्ध को प्रकाशित कराने के लिए धन्यवाद के पात्र हैं । डा० पूनम दइया और मित्र सरल जी का मुद्रण व्यवस्था के लिए आभारी हू ।

उन विद्वानो के प्रति भी आभार प्रदर्शन मेरा कर्त्तव्य है, जिनके ग्रथो व विचार सामग्री स मैं लाभन्वित हुआ ।

गुरुवर डा० कन्हैयालाल जी शर्मा ने अपने अमूल्य और व्यस्त समय को न देखते हुए आशीर्वाद स्वरूप भूमिका लिखने की अनुकम्पा की इसके लिए डा साहब को मेरे अनेकानेक प्रणाम अर्पित हैं ।

अन्त म, जैसा भी प्रयास बन पडा है वह मा भारती के मन्दिर को अर्पित है ।

दिनाक —
१३ वी मार्च १९७० ई

अमरसिंह राठोड

राजकीय डूगर स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बीकानेर

बीकानेरी कहावतें : एक अध्ययन

अमरसिंह राठौड़

अनुक्रमणिका

अध्याय / १

बीकानेर परिचय

बीकानेर का प्रागैतिहासिक स्वरूप

विश्व के प्रमुखतम देशो मे भारत का नाम लिया जाता है। सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से भारत अद्वितीय है। भारत का संविधान गणात्मक है तथा सम्पूर्ण देश उन्नीस इकाइयो मे विभक्त है। इन इकाइयों को 'राज्य' की संज्ञा दी गई है।

राजस्थान भारतवर्ष का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण राज्य है, इसे पहले राजपूताना के नाम से जाना जाता था। यह प्रदेश वीर-भूमि वाला प्रदेश है। बीकानेर राजस्थान का एक गौरवशाली भू-भाग है। भौगोलिक दृष्टि से इसकी स्थिति राजस्थान राज्य के उत्तर पश्चिम मे है। इस जिले के चारो ओर दूर-दूर तक बालू के टीले फैले हुए दृष्टिगत होते हैं। पौराणिक मतो के अनुसार बीकानेर का पुराना नाम 'जांगल देश' था।[1] जांगल देश से अभिप्राय रेतीला, बैर और घास के शुष्क प्रदेश से भी है।[2] इसके साथ ही साथ यह भी उचित जान पड़ता है कि बीकानेर के राजा जांगल प्रदेश के स्वामी होने के कारण 'जंगलधर-बादशाह' कहलाते हैं। इसकी पुष्टि राज्य-चिन्ह के लेख से होती है।[3] इन बातों के अलावा भूगोल-शास्त्रीय इसे प्रारम्भ म रेगिस्तान स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार जो

---

१. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा—बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० १
२. गौरी शंकर आचार्य—बीकानेर परिचय-पृ० ५
३. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा—बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० २

जूरेसिक क्रीटेशियम तथा इप्रोसीन के युगों में बीकानेर और जैसलमेर का भाग समुद्र से घिरा हुआ था, जो समुद्र 'टेथिस' के नाम से था।[1] टेरशरी युग में जाकर इस स्थिति में परिवर्तन हुआ और यह भाग पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों के परिवर्तन के कारण ऊपर उठने लगा। धीरे-धीरे इस भू-परिवर्तन में भूमि ऊपर उठती गई और समुद्र समाप्त होकर रेतीला भाग निकल आया। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि इस प्रदेश का नाम 'जांगल' बाद में रख दिया गया होगा। इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण में भी इसके मरुस्थल रूप में परिवर्तित होने की एक सुन्दर कथा है।[2]

इन सभी बातों से स्पष्ट हो जाता है कि कभी इस जगह पर एक विशाल समुद्र लहराया करता था तथा कालान्तर में वह विलीन हो गया और वर्तमान भू-भाग की सृष्टि हुई। इसकी पुष्टि में आज भी इस भू-भाग पर शंख, कौड़ी और गोल पत्थर (Pebbles) आदि उपलब्ध होते हैं।

बीकानेर के रेतीले भू-भाग पर आज कोई नदी नहीं बहती किन्तु, पुरातत्त्व की खोजों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इसकी पश्चिमी सीमा पर पहले 'सरस्वती' नदी बहा करती थी।[3] इसके अतिरिक्त सिंधु नदी की सहायक घग्गर भी, जो पहले 'हाकड' के नाम से प्रसिद्ध थी, इसके उत्तरी भाग में बहती हुई सिंधु में जाकर मिलती थी।[4] कालान्तर में भूमितल के ऊपर उठ जाने से वह बन्द हो गई, किन्तु उसके सूखे मार्ग का पता अब भी चलता है। वर्षा-ऋतु में पानी इसी मार्ग से हनुमानगढ़, सूरतगढ़ होता हुआ अनूपगढ़ पहुंच जाता है, जिसे आजकल 'नाली' की संज्ञा दी जाती है।

---

१. गौरी शंकर आचार्य—बीकानेर परिचय पृ० ५

२. वाल्मीकि रामायण के युद्ध कांड के बाइसवें सर्ग में लिखा है कि जिस समय रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ाई की, उस समय समुद्र ने राम को मार्ग देने से इन्कार कर दिया। श्री राम के प्रार्थना करने पर भी वह अपनी बात पर कटिबद्ध रहा, फलस्वरूप राम ने क्रोधित होकर अपना बाण सम्भाला। इस पर समुद्र डर गया तथा प्राण-दान की भिक्षा मांगी। राम ने वह बाण उत्तर दिशा में स्थित द्रुम कल्प की दिशा में चला दिया। कहते हैं उसी दिन से वहां का पानी सूख गया और मरुस्थल की उत्पत्ति हो गई।

३ गौरीशंकर आचार्य—बीकानेर परिचय–पृ० ७

४. वही — वही — पृ० ७

ऐतिहासिक परिचय—(स्थापना)

जहां भारतवर्ष वर्षो तक विदेशी आक्रमणकारियों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा, वहां उसका यह वीर प्रसूत भू-भाग राजस्थान अपने कुशल और प्रतापी शासकों के शौर्य तथा भौगोलिक दुर्गमता के फलस्वरूप अपनी स्वाधीनता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखा। इसके भी एक खण्ड बीकानेर जिले की रेतीली प्रकृति और जनसंख्या की स्वल्पता के कारण आक्रमणकारी तनिक भी इस ओर आकर्षित नहीं हुए। राठौड़ों का बीकानेर राज्य पर अधिकार होने से पूर्व यह राज्य बहुत से भागों में विभक्त था। राठौड़ों से पूर्व यहां पर बहुत सी जातियों का शासन रहा था।[1] इन जातियों के क्रमिक इतिहास के बारे में तो कुछ नहीं कहा जा सकता किन्तु इतना अवश्य कह सकते है कि राव बीका से पहले इस क्षेत्र पर जाटों का अधिकार था।[2]

जोधपुर के शासक राव जोधा के पुत्र राव बीका ने ही बीकानेर की आधारशिला रखी थी, और उनके वंशज ही अंत समय तक इस पर शासन करते रहे। बीकानेर-स्थापना के विषय में एक कथा प्रचलित है—एक दिन राव जोधा अपने दरबार मे बैठे थे और उनके पुत्र बीका दरबार में कुछ देर से आये तथा आते ही अपने चाचा कांधल के कान में कुछ कहने लगे। इस पर राव जोधा ने मजाक करते हुए कहा कि आज चाचा-भतीजे में क्या कानाफूसी (Whisper) हो रही है, क्या कोई नये राज्य की स्थापना करने की योजना बनाई जा रही है ? कहते है कि इस ताने को सुनकर उसी दिन राव बीका और कांधल ने नये राज्य की स्थापना करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।[3]

राव बीका नये राज्य की स्थापना हेतु एक अच्छी सी सेना का संगठन करके ३० सितम्बर, १४६५ ई० (वि० सं० १५२२) को जोधपुर से रवाना हुये। इस समय उनके साथ केवल सौ घोड़े और पांच सौ राजपूत थे।[4] बीका ने प्रथम पड़ाव मंडोर में डाला, तदुपरान्त देशनोक पहुंचे, जहां उन्हें करणीजी के दर्शन हुए। करणी जी के आशीर्वाद व आज्ञा से चांडासर में रहने लगे। वहां से फिर कोडमदेसर पहुचे और यहीं पहुंच कर सर्व प्रथम अपने को राजा घोषित

१. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा—बीकानेर का इतिहास (पहला भाग) पृ० ६६
२. कर्नल टॉड—राजस्थान का इतिहास— पृ०५१२
३. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा—बीकानेर का इतिहास (पहला भाग) पृ० ९०
४. वही — वही —पृ० ९१

किया। यहा से जागल पहुचकर सांखलो के चौरासी गावो पर अपना अधिकार कर लिया। करणी जी की सहायता से ये पुगल में भाटी राव शेखा जी की पुत्री रग-कुवरी से विवाह करने मे सफल हुए।[1]

सन् १४७८ ई० मे बीका जी ने कोडमदेसर म एक गढ बनवाना प्रारम्भ किया जिसके फलस्वरूप इन्हे भाटियो से युद्ध करना पडा। इसम बीका जी सफल तो हुये, किन्तु भाटियो ने अपनी छेड-छाड को फिर भी बद नही किया। इस पर बीका जी ने गढ को कही अन्यत्र बनाने की योजना बनायी। नापा सांखला की सलाह से सन् १४८५ (वि स १५४२) मे नये किले की नीव राती घाटी' पर डाली, जो वतमान किले से लगभग दो मील दक्षिण पश्चिम मे भग्नावशेष रूप मे आज भी विद्यमान है। इसी किले के आस-पास बीका जी ने १२ अप्रेल सन १४८८ (स १५४५) को अपने नाम पर बीकानेर नगर बसाया।[2] बीकानेर की स्थापना के सम्बन्ध म यह कहावत प्रचलित है—

'पनरै सै पैंतालवे सुद बैसाख सुमेर।
थावर बीज थरपियो बीकै जी बीकानेर॥"[3]

Baisakh, the month, the day, the second fifteen four five the year And sixth days of the week when Bika founded Bikaner[4]

---

१ Captain P W Powlett Gazettear of the Bikaner State

२ "बीकानेर की राजधानी क निर्माणार्थ जो स्थान पसन्द किया गया, उसका स्वामी एक जाट था। बीका जी ने जाट से स्थान की माग को और आश्वासन दिया कि तुम्हारा नाम जोड कर इस राज्य का नाम रखू गा। उस जाट ने बीका जी का प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार करते हुए भूमि दे दी। तत्पश्चात उस मरुभूमि मे राजधानी का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ और जिस राज्य की प्रतिष्ठा राव बीका ने की, उसका नाम 'बीकानेर' रखा गया। यह द्रष्टव्य है कि उस जाट का नाम 'नेरा' था।" —कर्नल टाड— —पृ० २ ३

राजस्थान का इतिहास—पृ० ५१२

३. गौरीशकर हीराचन्द ओझा—बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग)पृ० ९३.

४ Captain P. W. Powlett gazettear of the Bikaner state- p. 3

भौगोलिक परिचय

वर्तमान बीकानेर जिला २७.१५ से २६.१५ अक्षांश उत्तर मे तथा ७२.२० से ७४.४० पूर्वी देशान्तर मे स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल १०,१५० वर्ग मील है। प्रशासन की सुविधार्थ यह जिला दो उपखण्डों मे विभाजित है। जिसमे चार तहसीलें हैं। बीकानेर तथा लूनकरणसर तहसीले उत्तरीखड व नोखा तथा कोलायत तहसीलें दक्षिणी खड मे स्थित हैं। इस जिले मे १३० ग्राम पचायत तथा २६ न्याय पचायतें, चार पचायत समितियाँ और ६८० ग्राम हैं।[1] इसके उत्तर-पूर्व मे गंगानगर और चूरू, पूर्व मे चूरू, दक्षिण-पूर्व मे नागौर-चूरू, दक्षिण-मे जोधपुर और नागौर, दक्षिण-पश्चिम मे जैसलमेर और जोधपुर तथा पश्चिम म पाकिस्तान की सीमायें लगती हैं, और उत्तर पश्चिम मे गगानगर जिले से मिलता है।

बीकानेर जिले का अधिकांश भाग रेतीला है। जिसमे २७ से १०० फुट की ऊचाई वाले रेतीले टीले पाये जाते हैं। कोलायत में कुछ कडी जमीन भी है, जिसे 'मगरा' कहा जाता है। समुद्र तट से बीकानेर जिले की ऊचाई ७०० से १२०० फुट है। बीकानेर नगर स्वय आस-पास के धरातल से ७३६ फुट ऊची चट्टान पर बसा हुआ है। जिले मे कोई नदी नही है, नाले अवश्य है जो वर्षा होने पर पानी से भर जाते है।

यहाँ की जलवायु शुष्क एव गर्म है। साल भर मे वर्षा का औसत ५० सेंटी-मिटर है। वर्षा-ऋतु का यहा विशेष महत्व माना जाता है। इस सम्बन्ध मे एक कहावत द्रष्टव्य है—

"बोर मतीरा बाजरी, मेलर काचर खाए।
अनधन धीणा धूपटा, बरसालै बीकाणे॥"

वर्षा-ऋतु के साथ ही साथ यहा श्रावण मास का भी विशेष महत्व है। यथा—

"सीयालै खाटू भलो, उनालै अजमेर।
नागाणो नित-नित भलो, सावण बीकानेर॥"

वर्षा की कमी के कारण जिले मे जगलो का अभाव है। यहा खेजडा कीकर, बबूल के पेड प्राय मिलते हैं। रेत के टीलो पर फोग, खींप, भुरट्,

---

१. जिलाधीश, बीकानेर के कार्यालय से प्राप्त सूचना।

फरोस तथा गाठिया घास मिलता है। यहा की मुख्य उपज बाजरा, मोठ तथा गवार है। खाद्यान्न की दृष्टि से यह जिला आत्मनिर्भर नही है। यहा का मतीरा भारत प्रसिद्ध है।

इस जिले का मुख्य उद्योग पशु-पालन है। दुग्ध-विक्रय बहुत से लोगों का जीवन-निर्वाह का साधन है। यहां की गाय तथा ऊट भी भारत-प्रसिद्ध हैं। राजस्थान भर में अच्छी नस्ल के ऊट यही से भेजे जाते हैं। यहां का दूसरा प्रमुख पशु भेड है। यह आर्थिक दृष्टि से बडा लोकप्रिय है। राजस्थान राज्य मे सर्वाधिक ऊन बीकानेर मे ही होती है, और प्रतिवर्ष लगभग बीस लाख पौंड अच्छे किस्म की ऊन भी यहां पैदा की जाती है। यह ऊन देश भर म प्रसिद्धि प्राप्त है।

भू-गर्भ की दृष्टि से यह जिला बहुत ही सौभाग्यशाली है। जामसर की जिप्सम की खाने विख्यात हैं। भारत भर मे पाये जाने वाले जिप्सम की ९० प्रतिशत मात्रा इन्ही खानो स प्राप्त होती है। यहा पर लाल पत्थर भी उपलब्ध है और पलाना मे कोयले की खानें तो प्रसिद्ध हैं ही, कोलायत म खडिया मिट्टी भी पाई जाती है।

सामाजिक परिचय

बीकानेर जिले म प्राय प्रत्येक जाति निवास करती है। हिन्दुओ म—ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य (बनिये), खत्री, जाट, कायस्थ, विश्नाई, चारण, सुनार, कुम्हार, लुहार नाई, दर्जी, धाबी, गूजर, अहीर, कलाल, वैरागी, गोस्वामी, (गोसाई), स्वामी (साध) छीपा, भडभू जा, रेगर, मोची, चमार, नायक, मघवाल आदि कई जातिया हैं। इन जातियो म कई उपजातियाँ भी बन गई हैं। जगली जातियो म भीणे, थोरी, बावरी और सासी आदि हैं। मुसलमानो म—सैयद, शेख, पठान और मुगल आदि कई जातियाँ हैं।

यहा का प्रमुख धधा कृषि है। राजपूत लोग प्रमुख रूप से सैनिक सेवाओ मे नियुक्त है। वैश्य या महाजन वर्ग मुख्य रूप से व्यापार करते है। यहा के मोहता, डागा, भू धडा, रामपुरिया, सेठिया, कोचर, दम्माणी आदि व्यापारी भारत के प्रमुख व्यापारियो मे स्थान रखते हैं। अन्य जातियो के लोग मुख्यत नौकरी दस्तकारी और अन्य प्रकार की मजदूरी का कार्य करते हैं।

खान-पान की दृष्टि से शहर और गाँवो म कुछ भिन्नता पाई जाती है। गाँवो मे मुख्य भोजन बाजरा व मोठ का होता है। विशेष अवसरो पर गेहूँ व चावल का प्रयोग भी किया जाता है। चावल तो किसी मागलिक अवसर तथा

त्योहार विशेष पर ही प्रयोग मे लाया जाता है। गावो मे प्राय दूध, दही व सूखी सब्जियां काम मे ली जाती हैं, जिसमें—सागरी, फली, काचर, सेलरी, फोफलिया, केरिया, आदि प्रमुख हैं। शहर मे लोग गेहू और हरी तरकारी का प्रयोग करते हैं। मास और मछली का प्रयोग भी कुछ लोगो द्वारा किया जाता है। मूंग और मोठ विभिन्न रूपो मे काम में लिया जाता है। पापड और भुजिया की यहा बहुत खपत है। रसगुल्ला और भुजिया दोनो ही भारत-प्रसिद्ध होने के कारण काफी मात्रा मे बाहर जाते हैं। मिश्री भी यहा की अच्छी मानी जाती है।

यहा स्त्रियो की दशा विशेष खराब नही हैं। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से इनकी दशा म काफी सुधार हुआ है। समाज मे स्त्रियों का स्थान पुरुषो के बराबर ही माना जाने लगा है। गावो म पढी-लिखी स्त्रियो की सख्या बहुत कम है। शिक्षा के कारण बाल-विवाह में भी पर्याप्त कमी हुई है। तथा छूआछूत की भावना भी कमजोर पडती जा रही है। शिक्षण-सस्थाओ मे नि शुल्क शिक्षा की व्यवस्था उपलब्ध है।

जिले का प्रत्येक गांव लगभग सडको से जुडा हुआ है। यातायात के हर प्रकार के साधन यहा उपलब्ध हैं। यात्रा के आरामदायक और सुरक्षित साधन अब उपलब्ध हो गये हैं।

बीकानेर क्षेत्र म रहन-सहन का स्तर अच्छा है। फिर भी उच्चवर्ग के स्तर और निम्नवर्ग के स्तर मे जमीन-आसमान का अन्तर है। पहनावे में यहा मुख्य रूप स पुरुष लोग धोती कुर्ते तथा स्त्रियो मे लहगा, चोली तथा ओढनी का प्रयोग होता है। शहर मे पुरुष और स्त्रियो द्वारा आधुनिक पोशाको का प्रयोग किया जाता है। पर्दा-प्रथा समाप्त प्राय है। मुसलमानो मे भी बुर्के की प्रथा दम तोडती जा रही है। विवाह मे दहेज की प्रथा प्रचलित हैं। अन्तर्जातीय विवाह नगण्य की सी सख्या मे हैं। हिन्दू मुर्दों को जलाया और गाडा जाता है। मुसलमान मुर्दों को केवल गाडा ही जाता है।

बीकानेर म प्राय अकाल पडा करता है। अत अकाल के समय लोग दूसरे राज्यो मे भी अपने पशु-धन को चराने के लिय ले जाते हैं। वैसे यहा के लोग बडे ही धैर्यवान और सहनशील हैं। अकाल से घबराते नही हैं, क्योकि हर तीसरे साल अकाल यहा का महमान होता है। अकाल के विषय में एक कहावत भी यहां प्रचलित है—

"पग पूगल धड कोटडे, बाहू बायडमेर।
भूल्यो चुक्यो जोधपुर, ठावो जैसलमेर॥"

धार्मिक परिचय :

बीकानेर जिले में प्राय सभी मत मतान्तरो के मानने वाले और सभी धर्मावलम्बी लोग निवास करते हैं। मुख्यत वैदिक (ब्राह्मण), जैन, सिक्ख तथा इस्लाम धर्म को मानने वालो की सख्या अधिक है। ईसाई, आर्य समाजी तथा पारसी धर्म के अनुयायी भी थोडे बहुत यहा रहते हैं। वैदिक धर्म मानने वालो मे शैव, शाक्त तथा वैष्णव आदि हैं। इनमे वैष्णव अधिक हैं। इस्लाम धर्म के अनुयायियो मे भी दो वर्ग—(क) शिया और (ख) सुन्नी, इस जिले म निवास करते हैं। अलखगिरि नाम का नवीन मत भी प्रचलित है। विश्नोई नाम का धार्मिक सम्प्रदाय भी यहा हिन्दुओ मे विद्यमान है।[1]

बीकानेर जिले म त्योहारो का अत्यधिक महत्त्व है। दीपावली होली, दशहरा, शीतला सप्तमी, अक्षय तृतीया, रक्षा बधन, रामनवमी आदि मुख्य त्योहार प्रत्येक वर्ग के द्वारा खुशी के साथ मनाये जाते हैं। तीज तथा गणगौर स्त्रियो के अपने प्रमुख त्योहार हैं। तीज और गणगौर की सवारिया परम्परागत ढग से निकाली जाती हैं। त्योहारो के दिन शहर मे विशेष चहल पहल होती है। स्त्रिया लोक गीतो के सामूहिक स्वर म त्योहारो का अभिनन्दन करती हैं। ईदुल फितर इदुल जुहा मुबरात आदि त्योहार मुसलमानो द्वारा भी विशिष्ट परम्पराओ म मनाये जाते हैं। अल्प सख्यक वर्ग भी अपने अपने त्योहार मनाते है। त्योहार के अतिरिक्त बीकानेर क्षेत्र मे लगने वाले मेले भी उल्लेखनीय हैं। मेलो के प्रति जन-रुचि बहुत मिलती है। प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को श्री कोलायतजी मे बडा मेला लगता है। 'कोलायत' भारत-प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। इस मेले मे ऊट बैलों आदि का क्रय विक्रय होता है। बीकानेर से तीस मील दक्षिण-पश्चिम म इसकी स्थिति है। यहा पर एक विशाल जलाशय है जिसके किनारे कपिल मुनि का मन्दिर है। ऐसी मा यता है कि यहा कपिल मुनि का आश्रम था, जहा उन्होने अपनी माता को साख्य और योग का उपदेश दिया था।[2] मुख्य मन्दिर क अतिरिक्त और भी अनेक छोटे-छोटे मन्दिर हैं। मुसलमानो का मेला जिसे 'भुट्टो' कहते हैं, गजनेर म लगता है। गजनेर बीकानेर के दक्षिण पश्चिम में बीस मील दूर स्थित है। श्रावण

---

१. गौरीशकर हीराचन्द ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, (पहला भाग) पृ० १८

२ (क) गौरीशकर आचार्य– बीकानेर–एक परिचय, पृ० ८५,

(ख) य करुणा कर कृपालु भगवान् कपिल स्वकीय अत्यल्पे वयसि स्वमात्रे देव हूत्ये जगदुद्धारक साख्ययोगच स विस्तर प्रोवाच उपदिष्टवान्।
—पण्डित विष्णुदत्त शर्मा-श्री कपिलायतन तीर्थ महात्म्यम्, पृ० ३५

के महिने मे 'दियवाडी' और भाद्रपद मे 'देवीकुण्ड सागर' मे विशाल मेले लगते हैं। इन मेलो मे बहुत से लोग इकट्ठे होते हैं। भाद्रपद की शुक्ला एकादशी को सुजानदेसर मे रामदेवजी का मेला लगता है। देशनोक जो बीकानेर नगर के दक्षिण मे बीस मील की दूरी पर स्थित है, मे करणीमाता का विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर की विशेषता है कि चूहों की एक विशाल सख्या इधर उधर घूमती रहती है। यहा भी वर्ष मे दो बार, चैत्र और अश्विनी के शुक्ल पक्ष मे प्रतिपदा से नवमी तक भारी मेले लगते है। मेले मे राजस्थान के कोने-कोने से यात्रीगण आते हैं। बीकानेर से लगभग पचास मील दूर (नोखा तहसील में) 'मुकाम' नामक बिश्नोइयो का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहां भी प्रतिवर्ष अश्विनी और फाल्गुन मे मेले लगते हैं। भारत के कोने-कोने से भारी सख्या म बिश्नोई सम्प्रदाय के लोग यात्रियो के रूप म आकर यहा हवन आदि करते हैं। यहा पर एक रेत के धोरे (टीला) का बड़ा महत्व है।[1]

इन मन्दिरो के अतिरिक्त बीकानेर मे और भी अनेकों मन्दिर है। शहर का कोई भाग ऐसा नही जहा पर मन्दिर न हो। यहा लोक-देवताओ की विशेष प्रतिष्ठा है, जिनमे—भैरूजी, देवी, हनुमानजी, मायाजी, हरिरामजी, मावलिया तथा पित्तरजी प्रमुख हैं। शहर म—चिन्तामणि का मदिर, लक्ष्मीनाथजी, भाडासर जी धुनीनाथजी, रतनबिहारीजी, नागणेचजी के मन्दिर, प्रमुख मदिरो मे से है।[2] यहा मूर्तिपूजा भी बहुतायत से होती है। स्त्रिया तुलसी, पीपल तथा खेजडी की पूजा भी करती है।

इस क्षेत्र मे मन्दिर और देवस्थानो की एक विशाल सख्या होते हुए भी जन साधारण म आस्तिकता के प्रति आस्था का अभाव सा दृष्टिगत होता है। धर्म और ईश्वर के प्रति बौद्धिकता व वैज्ञानिक तर्कों की कसौटियां भी बनती जा रही हैं।

इतिहास-विकास परिचय

बीकानेर जिले का इतिहास राव बीका से प्रारम्भ होता है। १२ अप्रेल,

---

१ ऐसा माना जाता है कि बिश्नोई सम्प्रदाय के प्रवंतक सत जम्भेश्वर इसी धोरे पर निवास करते थे। इसी धोरे पर उनका स्वर्गवास हुआ था, परन्तु उनके शव को 'मुकाम' मे दफनाया गया, जहा आज भी मन्दिर बना हुआ है। —एक श्रुति कथा।

२ गौरीशकर हीराचन्द ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० ५४२

१४८८ से लेकर २० मार्च १९४९ तक बीकानेर एक राज्य के रूप मे रहा, जिसमे वर्तमान बीकानेर, चूरू तथा श्रीगंगानगर जिलो का क्षेत्र माना जा सकता है।[1] लगभग पाच सौ वर्षों तक बीकानेर राज्य पर एक ही वश (राठौड) शासन करता रहा। सन् १९४९ मे बीकानेर राज्य का विलीनीकरण भारत सघ मे हो गया और राजस्थान नामक एक नये राज्य का यह भू-भाग अभिन्न अग बन गया। कालान्तर मे बीकानेर राज्य को तीन जिलो मे विभक्त कर दिया गया।[2] इस प्रकार बीकानेर अपने वर्तमान स्वरूप मे इतिहास के एक लम्बे विकास की प्रक्रिया को सम्पन्न करता हुआ पहुचा है।

राजनीतिक परिचय

बीकानेर की राजनीति का एक लम्बा इतिहास है। इसके अध्ययन की सुविधार्थ इसे दो वर्गो मे विभक्त किया जा सकता है—

(क) स्वतन्त्रता पूर्व और (ख) स्वातन्त्र्योत्तर

(क) स्वतन्त्रता पूर्व—बीकानेर की स्थापना से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक यहा एक वश (राठौड) शासन करता रहा। इसका एकमात्र कारण यहाँ के वीर और योद्धा शासक थे। वे राज्य रक्षार्थ अपने प्राणोत्सर्ग मे कभी नहीं हिचकिचाये। राजनीतिक दृष्टिकोण से इस काल को भी दो भागो मे विभक्त कर सकते हैं। प्रथम मुगलो के शासनकाल का समय और दूसरा अग्रेजो के शासन-काल का समय। बीकानेर के शासको का मुगलो के साथ मित्रतापूर्ण सम्बध रहे थे। इन सम्बधो को हम उनकी दुर्बलता का परिचायक नही कह सकते। समय-समय पर उन्होंने युद्धो मे मुगलो के साथ वीरोचित टक्कर ली थी। बाबर की मृत्यु के बाद जब कामरान ने अपनी सेना सहित भटनेर (हनुमानगढ) पर चढाई कर दी, उस समय यह किला खेतजी (काधल के पौत्र) के अधिकार मे था, उन्होने वीरता के साथ मुगल सेना के साथ लोहा लिया। खेतजी वीरता से लडते हुये इस युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुये तथा भटनेर के किले पर मुगलों का अधिकार हो गया। अब कामरान अपनी सेना लेकर बीकानेर की ओर अग्रसर हुआ। यह समाचार पाकर राव जैतसी भी राठौडी सेना लेकर आगे बढे। एक दिन जब कि मुगल सेना का पडाव मौजा छत्रियो के पास था, राठौड सेना ने छापा मारकर कामरान को बडी हानि पहुंचाई, जिससे उसे डरकर दिल्ली की तरफ लौट जाना

---

१. डॉ० करणीसिह—बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध, पृ० १

२ बीकानेर, श्री गगानगर, चूरू।

पडा।[1] जैतसी जोधपुर के राजा मालदेव से युद्ध करता हुआ मारा गया। इससे बीकानेर का एक बहुत बडा भू-भाग जोधपुर के अधीन हो गया। कालान्तर मे राव कल्याणमल अपनी चतुराई तथा शेरशाह की सहायता से यह भाग फिर अपने अधिकार मे लेने म सफल हुये। वह मुगलो से मित्रता करने से भी सफल हुये। अकबर के समय बीकानेर के महाराजा कल्याणमल ने जो मित्रता मुगलों के साथ स्थापित की, वह मुगलों के पतन काल तक चलती रही। बीकानेर के नरेशो म-महाराजा अनूपसिंह, महाराजा गजसिंह तथा महाराजा रतनसिंह को मुगल बादशाहो की ओर से विभिन्न अवसरो पर 'माहीमरातिब' का सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुआ, जो इस बात का द्योतक है कि मुगल दरबार म बीकानेर का स्थान बडा उच्च रहा था।[2]

कालान्तर म औरगजेब की धार्मिक कट्टरता और असहिष्णुनीति के कारण राज्य के केन्द्र से सम्बन्ध टूट से गये। ज्यो-ज्यों मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर होता गया, त्यो त्यो बीकानेर नरेशो ने अपनी मित्रता म कमी करनी प्रारम्भ कर दी।

अंग्रेजो के आगमन से देश म एक नई राजनीतिक व्यवस्था उत्पन्न हुई। देश के कई स्थानो पर 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' का अधिकार हो गया। मराठो की शक्ति छिन्न-भिन्न हो चुकी थी, राजपूत आपस मे लड रहे थे। ऐसी अवस्था मे भी बीकानेर नरेश महाराजा गजसिंह ने अपने राज्य की रक्षा कुशलता के साथ की। मुगलो की तरह अंग्रेजो से भी बीकानेर नरेशो ने मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखे। बीकानेर नरेशो ने अपने राज्य मे अनेको राजनीतिक और कई अन्य सुधार-कार्य किये। महाराजा डूगरसिंह का नाम भी इस क्षेत्र मे लिया जाता है। उनके कोई सन्तान न होने के कारण अपने भाई गगासिंह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया,[3] जो सात वर्ष की आयु म (३१ अगस्त १८८७ ई०) बीकानेर के राज्य-सिंहासन पर आरूढ हुये।[4] महाराजा गगासिंह का शासन काल बीकानेर मे राज्य के इतिहास म स्वर्णकाल कहलाता है। गग नहर निर्माण तथा कई अन्य जनहित निर्माण कार्य, उनकी चिरस्मृति बन गये हैं। उन्होने कई बार

---

१ गौरीशकर हीराचन्द ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० १३०,३२

२ गौरीशकर आचार्य—बीकानेर एक परिचय, दूसरा भाग—पृ० ४८६

३ गौरीशकर हीराचद ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास (दूसरा भाग) पृ० ४८६

४. वही — वही — पृ० ४६२,

अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे भारत का प्रतिनिधित्व भी किया ।[1]

राष्ट्रीय आन्दोलन की लहर से बीकानेर भी न बच पाया । स्वतन्त्रता आन्दोलन के सचालन हेतु यहा 'सद् विचारिणी सभा', 'प्रजामडल' जैसी अनेक सस्थायें स्थापित की गई ।[2]

बीकानेरी नरेशो ने राष्ट्रीय आन्दोलन को दबाने का प्रयास अवश्य किया, किन्तु यह लहर दब नही पायी । १५ अगस्त १९४७ के दिन स्वतन्त्रता प्राप्ति पर बीकानेर में भी खुशिया मनाई गई । स्टेडियम मे खुद महाराजा सादूलसिह जो ने तिरगा झडा फहराया । रात्रि मे स्वतन्त्रता प्राप्ति की खुशी मे 'लालगढ पैलेस' मे एक राजकीय भोज का भी आयोजन किया गया ।[3]

स्वातन्त्र्योत्तर राजनीतिक परिचय

१५ अगस्त सन् १९४७ के दिन वर्षों से पडी गुलामी की जजीरो को तोडकर भारत देश स्वतन्त्रता की सास लेने मे सफल हुआ । अनेको ज्ञात-अज्ञात देश भक्तो के बलिदान और जन-साधारण मे व्याप्त राष्ट्रीय भावना के फलस्वरूप स्वतन्त्रता सुलभ हो सकी । स्वतन्त्रता प्राप्ति तक देश के कोने-कोने मे फैल चुकी थी । बीकानेर भी इस लहर से अपने को अछूता न रख सका और यहा भी राष्ट्रीय आन्दोलन किये गये जिनमे काग्रेस का हाथ मुख्य रूप से रहा ।

बीकानेर का स्वतन्त्रता से पूर्व का इतिहास तथा राजनीतिक स्थिति राजाओ से सम्बन्धित है, किन्तु स्वतन्त्र्योत्तर इतिहास और राजनीति जनता और उसके दलो का इतिहास व राजनीति है । सन् १९५२ मे देश म प्रथम आम चुनाव हुये । इस चुनाव मे बीकानेर जिले मे काग्रेस, स्वतन्त्र, जनसघ, समाजवादी आदि दलो ने भाग लिया । बीकानेर शहर में काग्रेस नही जीत पाई ।

सन् १९५७ मे बीकानेर क्षेत्र मे राजस्थान विधान सभा के लिए एक स्थान हरिजनो के लिये सुरक्षित कर दिया । इस समय तक काग्रेस की स्थिति भी सुदृढ हो चुकी थी । अत केवल बीकानेर निर्वाचन क्षेत्र को छोडकर अन्य सभी तहसीलो से काग्रेसी उम्मीदवार निर्वाचित हुये । बीकानेर मे समाजवादी दल

---

१. गौरीशकर हीराचद ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास दूसरा भाग) पृ० ५४०

२ सम्पादक सत्यदेव विद्यालकार, बीकानेर का राजनीतिक विकास और प० मघाराम वैद्य, पृ० १७

३ डॉ. करणीसिह—बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सबध—पृ० ३८२

को विजय श्री प्राप्त हुई। महाराजा डा० करणीसिंह, निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में भारतीय लोक सभा के लिये निर्वाचित हुये। सन् १९६२ के तीसरे आम चुनाव में भी बीकानेर शहर से समाजवादी दल की विजय हुई और बाकी क्षेत्रों से कांग्रेस की। महाराजा बीकानेर भी फिर लोक सभा के लिए चुने गये। कांग्रेस अब तक पैर नहीं जमा सकी थी। किन्तु सन् १९६७ के आम चुनाव में कांग्रेस की अद्भुत विजय हुई।

सन् १९५२ से लेकर आजतक भारतीय लोक सभा के लिए महाराजा डा० करणीसिंह इस क्षेत्र के प्रतिनिधित्व के लिये निर्वाचित होते आये है। इसके लिये उनका अपना व्यक्तित्व और बीकानेरी जनता का सस्कार ही काम करता है। जनसघ और साम्यवादी पार्टी भी दिनोदिन मजबूत होती जा रही है।

शैक्षणिक एव साहित्यिक परिचय

शिक्षा एव साहित्य के क्षेत्र मे बीकानेर का स्थान सर्वोच्च नही कहा जा सकता, तो नीचा भी नही कहा जा सकता। यद्यपि स्वतत्रता-पूर्व शिक्षा का प्रचार-प्रसार अपेक्षाकृत कम था, किन्तु बीकानेर नरेशो मे शिक्षा के प्रति अद्वितीय लगाव था। सस्कृत के और ज्योतिष के महान विद्वान यहा पैदा हुये हैं। एक समय बीकानेर को भारत का दूसरा 'काशी' कहा जाता था।

इस समय जिले के पन्द्रह महाविद्यालयो मे विभिन्न विषयो म लगभग ३५३६ छात्र और ८५० छात्रायें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जिले मे विभिन्न स्तर की ५६५ शालायें हैं।[1]

शिक्षा के क्षेत्र म जहा बीकानेर को गौरवशाली स्थान प्राप्त है, वहा साहित्य के क्षेत्र म भी इसके अपने कीर्तिमान हैं। लगभग पच्चीस साहित्यिक सस्थायें वर्षो स साहित्य के सृजन, प्रचार एव प्रसार के कार्यों मे सलग्न है। 'सार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्सीट्यूट तथा 'हिन्दी विश्व भारती' जैसी देश-प्रसिद्ध सस्थाओ के कार्य उल्लेखनीय हैं। इन सस्थाओ ने शोध के क्षेत्र मे नई दिशाए प्रदान की हैं। एक विशाल सख्या मे साहित्यकार भी विभिन्न विधाओ मे साहित्य सृजन करते रहे हैं। उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, आलोचना आदि के जाने माने रचयिता बीकानेर मे हैं।

लोक-साहित्य के प्रकाण्ड विद्वानो का कार्य क्षेत्र भी बीकानेर रहा है।

---

1 Statistical Abstract Rajasthan 1967, Published by Director of Economics & statistics Rajasthan, Jaipur से प्राप्त आकडे।

राजस्थानी भाषा के विद्वान और साहित्यकार बीकानेर के गौरव है सर्वश्री नरोत्तम दास स्वामी, अगर चन्द नाहटा, स्व० सूर्यकरण पारीक, ठा. रामसिंह, ठा जुगल सिंह खिची आदि भारत प्रसिद्ध राजस्थानी विद्वानो की जन्म-भूमि भी यही भू-भाग रहा है। लोक गीत, लोक-कथायें आदि पर विशेष शोध परक कार्य यहा हुये हैं। कहावतो का सकलन भी मोटे रूप से किया गया है, किन्तु इन पर अभी तक विस्तृत रूप से विचार नही किया गया।

==

अध्याय / २

कहावतों का स्वरूप एवं महत्त्व

कहावतो का महत्त्व

विश्व के समस्त देशो एव जातियों मे कहावतो का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। ससार मे कोई भी भाषा ऐसी नही जो कहावत-युक्त न हो। कहावतो का जन-जीवन के साथ अटूट और घनिष्ठ सम्बध होता है। उनमे मानव-जाति के समस्त जीवन का दीर्घकालीन अनुभव सचित रहता है, जो पीढी दर पीढी होता हुआ वर्तमान तक पहुच जाता है। उन्हे मानव-जाति के अलिखित कानून-सग्रह का नाम भी दिया जा सकता है।[1] कहावतो मे पथ-प्रदर्शन की अथाह शक्ति छुपी रहती है। मनुष्य समाज मे कैसे रहे, कैसा व्यवहार करे तथा किस मार्ग का अनुसरण करे—इत्यादि बातो का स्पष्ट निर्देशन कहावतो द्वारा किया जाता है। कहावतें न केवल मनुष्य-मस्तिष्क का उद्‌बोधन ही करती हैं, बल्कि उसे व्यवहार पटुता का पाठ भी पढाती हैं। अत. वे मानव-स्वभाव और व्यवहार कौशल के सिक्के के रूप मे प्रचलित होती हैं।[2] कहावतें मनुष्य के विवेक और बुद्धि के विकास म बडी उपयोगी सिद्ध होती हैं। सामान्यत मनुष्य कुछ खोकर ही सीखता है, मगर कहावतो से वह सीखना प्रारम्भ करदे तो फिर उसे कुछ खोना न पडे। मगर वह कहावतो की सीख का मूल्य चुकाना प्रारम्भ कर दे तो फिर मैं समझता हूँ कि वह उसका मूल्य कभी भी नही चुका सके।

---

१. नरोत्तमदास स्वामी, मुरलीधर व्यास—राजस्थानी कहावता, भाग एक पृ० ३

२. डॉ० कन्हैयालाल सहल, राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन—पृ० १

विभिन्न जातियो के जीवन-चरित्र और उत्थान-पतन उनकी कहावतों मे परिलक्षित होते हैं। जाति के रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार तथा उसके नैतिक-अनैतिक मूल्यो का अध्ययन कहावतो के माध्यम मे किया जा सकता है। देश-भेद होने पर भी बहुत से देशो और जातियोमे कुछ कहावतें समान रूप से व्यवहृत होती हैं, क्योकि मानव-प्रवृति की व्याप्ति तो सब जगह समान रूप से होती हैं। अत: विश्व-एकता के दर्शन कहावतो मे किये जा सकते हैं।

कहावतें सफल अभिव्यक्ति का बहुत बडा साधन है। बहुत से अवसरो पर नाना प्रकार से बताई बातें भी समझ मे न आने पर कहावतो के द्वारा तुरन्त समझा दी जाती हैं।

कहावतें लोक-साहित्य का एक महत्वपूर्ण अग हैं। लोक-साहित्य के अन्य अगो की तरह इनका इतिहास भी अति प्राचीन है। जन-जीवन की नस-नस मे कहावतें व्याप्त हो गई हैं। कहावत के द्वारा किया गया निर्णय हर समझदार व्यक्ति के लिए आवश्यक हो जाता है। किसी कथ्य की प्रामाणिकता का कहावत से बडा कोई प्रमाण नही होता। इसीलिए कहावती जगत् एक विलक्षण लोक है। बडे-बडे ऋषि-मुनियो की उक्तियो को भी यदि सामान्य जनता स्वीकार न करे तो वे लोकोक्तियो के गौरवपूर्ण-पद पर आसीन नही हो सकती। कहावतो की बडी महिमा है, कोई उनकी अवमानना न करे।

कहावतो को अति प्राचीन काल से ही सम्मान मिलता चला आ रहा है। ये चिरतन सत्य के रूप मे स्वीकार की गई हैं। स्वय ईसा मसीह ने जन-साधारण को कहावतो द्वारा उपदेश दिया था। अरस्तू ने सर्व प्रथम कहावतो का सग्रह किया। कहावतें तो पता नही कितने ही मस्तिष्को के ज्ञान का निचोड होती हैं। काल-समुद्र मे अनेक लहरियाँ आती हैं, और बहुत सी चीजें उन लहरो मे समा जाती है, किन्तु ये ज्ञानोक्तिया अपने को सत्य के बल पर ही सुरक्षित बनाये रखती है।

साहित्यिक दृष्टि से कहावतो का अपना विशिष्ट महत्व है। कहावतें भाषा का शृङ्गार हैं।[1] कहावतो के प्रयोग से भाषा मे सजीवता एव चुस्ती आ जाती है। साहित्य की विभिन्न विधाओं को सशक्त अभिव्यक्ति देने के लिये इनका प्रयोग आवश्यक सा है।

हिन्दी और राजस्थानी के बहुत से साहित्यकारो ने कहावतो की सहायता

---

१. डा० कन्हैयालाल सहल, राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन—पृ० ३

से अत्यन्त ही प्रभावपूर्ण रचनायें प्रस्तुत की हैं। लोकोक्तियो से परिपूर्ण कहानी और उपन्यास जन-साधारण के अधिक निकट पहुचने वाले और विशिष्ट छाप छोडने वाले बन पडते है। कहावतो का महत्त्व साहित्य मे, भोजन मे नमक के समान होता है।

योरप मे शिक्षण पद्धति मे भी कहावतो का बडा महत्व समझा जा रहा है। अध्यापक छात्रो के मस्तिष्क के विकास और उनकी उर्वरा शक्ति की वृद्धि के लिये कोई लोकोक्ति वाद-विवाद के रूप मे रख देते हैं, अथवा जिसके आधार पर छात्रो को उसके उद्भव की कथा को खोजनी पडती है।

शिक्षा और शिक्षण-पद्धति मे ही कहावतों का उपयोग नही होता, अपितु जापान जैसे देश मे तो खेलों में भी कहावतो का उपयोग किया जाता है। ताश के विशिष्ट प्रकार के खलो मे कहावतो का उपयोग होता है।

हमारे यहा भी बच्चे खेल-मेल मे कहावतो का उपयोग करते है और इन्हीं के द्वारा जीवन-सग्राम की तैयारी मे जुट रहत हैं।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि स भी कहावता का बडा महत्व है। अर्थ-तत्व और शब्द-तत्व क सदर्भ म कहावतो का अपना विशिष्ट महत्व है। बहुत स शब्दो क अर्थ अपन आपको खो दत है, किन्तु लोकोक्तिया म ये पूर्णतया सुरक्षित मिलते हैं।

कहावतों का क्षेत्र बडा विस्तृत है। मानव-जीवन स सम्बध रखने वाला कोई भी क्षेत्र कहावतो की तेज आंख से नही बच पाया है। जीवन की विभिन्न रगो की सजावट कहावतो म हुई है। उनमे कही गभीर अनुभवजन्य चातुर्य भरा है, तो कहीं प्रतिदिन के गृहस्थ-जीवन का पथ-प्रदर्शक व्यावहारिक ज्ञान छलछला रहा है। कही सुकुमार भावो की सुमधुर योजना दृष्टिगत होती है, तो कहीं कोमल कल्पनाओ का निराला माधुर्य अपनी छटा बिखेर रहा है। कही लक्ष्य न चूकने वाले चुटीले व्यग्य-बाण सीधे हृदय मे पैठ जाते हैं तो कही-कही विनोदमय और मधुर हास्य के छीटे रोम रोम खिला दत हैं।[1] कहावतो के अध्ययन का महत्व अब प्रतिदिन बढता ही जा रहा है। जिस प्रकार शिलालेखो और सिक्को के अनुसधान से ऐतिहासिक तथा राजनीतिक व्यवस्था एव मूल्यो की स्थापना का

---

१ प्रो० नरोत्तमदास स्वामी, प० मुरलीधर व्यास—राजस्थानी कहावता भाग–पहली, अवतरणीका, पृ० १

पता लगाया जाता है, उसी प्रकार कहावतो के आधार पर तत्कालीन समाज आचार-विचार, राजनीतिक अवस्था और धार्मिक व्यवस्था का उद्घाटन किया जा सकता है। कहावतें वो दीप हैं, जिनके आलोक से अतीत भी चमक उठता है।

गोर्की के शब्दों मे—"जाति-विज्ञान और संस्कृति के विद्वानों का कथन है कि जनता की विचारधारा जन कथाओ, कहावतो और मुहावरो आदि म व्यक्त होती है। यह बात सोलह आने सही है। कहावतें और मुहावरे श्रमिक-जनता की सम्पूर्ण सामाजिक एव ऐतिहासिक अनुभूतियो के संक्षिप्त रूप हैं। लेखक के लिए इस सामग्री का अध्ययन करना आवश्यक है। मैंने कहावतो और मुहावरो आदि म बहुत कुछ सीखा है।"

कहावतो की माया सर्वत्र अपना जाल फैलाये बैठी है। कहावत वह कुंजी है, जिसम जग खाये मस्तिष्क के ताले भी आसानी से खोले जा सकते हैं। बातो के युद्ध में कहावती कटार पैनी मार करती हुई विजय श्री दिलाने म अत्यंत ही सहायक सिद्ध होती है। कहावती कटाक्ष के सामने बडे बडे लोगो की बोलती बन्द हो जाती है।

नीति सम्बन्धी कहावतें ठोठ से ठोठ मस्तिष्क मे भी अपने ज्ञान का आलोक फैला देती है। कहावतें अपने आप म बडे भारी तर्क होती है जिनके सामने किसी अन्य दलील तथा तर्क की कोई आवश्यकता नही रह जाती। कहावतो के व्यग्य-बाण अद्भुत हैं। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' की तरह ही कथनी और करनी मे अन्तर वाले व्यक्ति के लिए कहा जाता है—'आप स्यामजी बैंगण खावै व दूसरा नै परमोद सिखावै।"

इस प्रकार हम देखते है कि कहावतें अपने आप मे जन साधारण के शक्तिशाली आयुध होते हैं। उनम अथाह शक्ति का भडार छुपा रहता है। वे इतिहास भी है राजनीतिक युक्तियां भी है। एक ओर यदि भाषाविज्ञान का एक प्राचीन अंग है, तो दूसरी ओर सामाजिक चेतना। इसी प्रकार साहित्य का प्राण और मानव के विभिन्न मनोवैज्ञानिक तथ्यो की उद्घाटक तथा जाति व समाज की उत्थान पतन का चिट्ठा भी है। इनके अलावा समाज की मनोवृत्ति व नैतिक मूल्यो का प्रतिबिम्ब भी कहावतो के दर्पण म स्पष्टत देखा जा सकता है।

कहावतो के शक्ति निर्माण म कतिपय महत्वपूर्ण उपकरण भी प्रयुक्त होते हैं जिनकी चर्चा हम आगे कर रहे हैं।

कहावत की व्युत्पति

कहावत शब्द की व्युत्पति के सम्बंध मे अभी तक विद्वान एक मत नही हो पाये हैं। विभिन्न विद्वानो के अनुसार कहावत की व्युत्पति के सम्बन्ध मे सम्मतिया इस प्रकार है —

(१) प० रामदहन मिश्र के अनुसार, 'कहावत' का मूल रूप 'कथावत्' है। कथाओं की तरह कहावतें भी लोक-प्रसिद्ध है। इनका आधार कथाओं का खडित-मडित रूप है इसी से कहावतो को लोकोक्ति भी कहते हैं।

(२) डा० वासुदेव सरण अग्रवाल के अनुसार प्राकृत 'कहाप्' धातु से भाव वाचक सज्ञा बनाने के लिये 'त' प्रत्यय जोडकर 'कहापत–कहावत' बन सकता है।

(३) आचार्य कशव प्रसाद मिश्र के अनुसार 'कू धातु के आग अरबी का 'आवत' प्रत्यय लगकर 'कहावत' शब्द बना है।

(४) डा० सिद्धेश्वर वर्मा के अनुसार हिन्दी शब्द कहावत' का अभिधेयार्थ है, 'उक्ति'। इसकी व्युत्पति हिन्दी कहना' से हुई है, जिसके आगे दो प्रत्यय जुडे हैं—(१) आव जैसे कि सुझाव मे देखा जाता है (२) और 'अत' प्रत्यय कहावत की सक्षिप्तता और सारगर्भिता का सूचक है।

(५) डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या के अनुसार —" The origin of the word kahawat would appear to be old Indo-Aryan kathay, katha— early M I A. cansasative or denomination affie (Star) ant katha-payanta > kadhavayanta > kahavaanta > kahavanta > kahavat

उपर्युक्त मतो के अलावा और भी अनेको विद्वानो ने कहावत की व्युत्पति के सम्बन्ध मे अपने अपने तर्क प्रस्तुत किये हैं। इन सबके आधार पर डा० कन्हैया लाल सहल ने कहावत की व्युत्पति के सम्बन्ध म निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले हैं।[1]

(१) यदि 'कहावत' शब्द सस्कृत के किसी शब्द से हिन्दी में आया है तो 'कथावार्ता' एक ऐसा शब्द है जिससे उसका घनिष्ठ सम्बन्ध जान पडता है। 'कथा-वार्ता' का प्राकृत रूप 'कहावत' तो ध्वनि और अर्थ दोनों की दृष्टि से कहावत शब्द से अत्यधिक मिल जाता है।

(२) यदि 'कहावत' शब्द सादृश्य के आधार पर प्रचलित हुआ है तो

१ राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन–पृ० ८

'लिखावट' 'सजावट' आदि के सादृश्य पर 'कहावट' (कहावत) शब्द का बन सकना असम्भव नही है। यहा यह भी उल्लेखनीय है कि राजस्थानी भाषा में कथन के अर्थ मे 'कुहावट', कुवावट' आदि शब्द बोलचाल मे अब भी प्रयुक्त होते हैं।

कहावत की परिभाषा

कहावत की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध मे विचार करने के पश्चात उसके स्वरूप और लक्षण पर भी विचार करना आवश्यक है। कहावत की ठीक-ठीक और सुनीश्चित परिभाषा करना तो असम्भव प्राय ही है। यही कारण है कि असंख्य मात्रा मे कहावत की परिभाषायें उपलब्ध होती हैं।

आर सी ट्रेन्च ने संक्षिप्तता सारगर्भिता और सप्राणता (चटपटापन) को कहावत के तीन तत्त्व माने हैं।[1] कहावतो की कसौटी पर कसने से पता चलता है कि कहावतो के लिए उक्त तीनो गुण अपरिहार्य तो अवश्य हैं किन्तु कहावत मात्र के लिए अनिवार्य गुणो के रूप मे ग्रहण नहीं किये जा सकते। क्योकि बहुत सी ऐसी कहावतें प्रचलित हैं जो अपेक्षाकृत लम्बी भी हैं सारगर्भित भी नहीं हैं और उनमें चटपटापन भी नही प्राप्त होता।

किसी वैयाकरणिक ने कहावत को 'कहावत वह उक्ति है जिसका कोई निर्माता न हो' की संज्ञा दी थी। लॉंडरसन ने "लोकोक्ति एक व्यक्ति की विदग्धता और अनेक का ज्ञान बताया है।"[2] कुछ प्रसिद्ध परिभाषायें निम्नलिखित हैं —

(१) अरस्तू[3]—'संक्षिप्त और प्रयोग के लिये प्रयुक्त होने के कारण विध्वंस और विनाश मे से बचे हुए अवशेष को कहावत कहा जाता है।'

(२) टेनीसन[4]—"कहावतें वे रत्न हैं जो पाच शब्द लम्बे होते हैं और जो अनन्त काल की अंगुली पर सदा जगमगाते रहते हैं।"

(३) जुबर्ट[5]— ज्ञान का संक्षिप्तीकरण ही कहावत है।"

---

1 Lessons in Proverbs P 7
2. A Proverb is the vit of one & the wisdom of many
3. A proverb is the remanant of the ancient philosophy preserved amidst—very many destructions on account of its brevity and fitness for use
4 Jewels five words long thaton the streched forefinger of all time spartely for ever
5. "Proverbs may be said to be the abridgments of wisdom"

(४) इरेसमस[1]—"कहावतें वे प्रसिद्ध और सुप्रयुक्त उक्तिया हैं–जिनकी एक विलक्षण ढग से रचना हुई है।"

(५) डिजरेली[2]—"कहावतें पाडित्य के अंश हैं, जो मानव सृष्टि के आदिमकाल मे अलिखित नैतिक कानून का काम देती थी।"

कहावतें और मुहावरे

भाषा की दृष्टि से मुहावरे और लोकोक्तिया दोना ही बड़े महत्व की चीज हैं। बहुत से लोग तो इनको एक ही मानकर चलते हैं, किन्तु ऐसा करने वाले वास्तव मे भूल करते हैं। मुहावरे और लोकोक्ति दो भिन्न नाम हैं।

लोकोक्ति और मुहावरे मे सबसे बडा अन्तर तो उनके शाब्दिक कलेवर का है। अंग्रेजी और हिन्दी मे प्राय सर्वत्र लोकोक्ति को वाक्य और मुहावरे को खड-वाक्य अथवा पद माना गया है। इससे स्पष्ट है कि लोकोक्ति मुहावरो की अपेक्षा अधिक शब्दो वाली होती है, अथवा लोकोक्ति और मुहावरे म सबसे पहला या बुनियादी भेद वही है, जो एक वाक्य और खड-वाक्य मे होता है।

मुहावरा वास्तव मे लक्षणा या व्यञ्जना द्वारा सिद्ध वह वाक्याश है जो किसी एक ही बोली या लिखी जाने वाली भाषा मे प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थ से विलक्षण हो। 'लाठी खाना' एक मुहावरा है क्योकि इसम 'खाना' शब्द अपने साधारण अर्थ मे नही आया है। लाठी खाने की चीज नही है, पर बोल चाल मे लाठी खाना मे तात्पर्य लाठी प्रहार सहन करने मे है।[3]

इस प्रकार मुहावरे और कहावतें तात्विक अन्तरो द्वारा अपने भिन्न-भिन्न स्वरूपो म प्रयुक्त होते हैं।

---

1. 'Wel-known and wel used dicta framed in a sort of out of the way form & fashion"
2. "These fragments of wisdom, the proverbs in the earliest ages serve as the unwritten laws of morality."
उद्धृत—राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन, डा० कन्हैयालाल सहल
3. गगाप्रसाद शुक्ल, हिन्दी मुहावरे, पृ० ७-८

= =

अध्याय / ३

कहावत का उद्भव एवं विकास

कहावती शिशु का उद्भव

जन-सागर में बिखरे हुए लोकोक्ति रत्नो को देखकर एक प्रश्न उठता है, इन अमूल्य रत्नो को किसने बिखेरा ? इस प्रश्न का उत्तर आसानी से नही दिया जा सकता। इतना अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है कि मनुष्य-मन की सरस अनुभूति का उत्स कहावतो के रूप में प्रस्फुटित हुआ होगा। किसी साहित्य की विधा की तरह एकान्त मे बैठकर कहावतो का निर्माण नही किया गया किन्तु जीवन की प्रत्यक्ष वास्तविकताओ ने कहावतो को जन्म दिया है। भोगे हुए यथार्थ तथा भोगे हुए क्षण ही कहावतो के रूप मे हमारे सामने उपस्थित होते हैं। कहावतो मे बुद्धि की प्रधानता नही बल्कि हृदय पक्ष की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। अत: कह सकते हैं कि कहावतो के जन्मदाता बुद्धि-वर्ग न होकर जीवन द्रष्टा थे। कहावत कब जन्मी किसने इसको जन्म दिया, किसने इसका पालन पोषण किया और कहा-कहा इसने अपने जीवन के समय को व्यतीत किया ? इन सब प्रश्नों का जवाब नही मिल सकता। क्योकि कहावत रूपी शिशु का जन्म जब होता है तो किसी को पास नही बैठने दिया जाता।[1] प्रतिदिन के अनुभव से अनुभूत उच्चरित उक्तिया ही कहावत के रूप मे प्रचलित होकर पीढी दर पीढी पैतृक सम्पत्ति के रूप मे चलती रहती है। यद्यपि कहावत के उद्भव के विषय में

1 Rarely indeed is one permitted to sit in at the birth of a proverb or to name its author '—*Introductory note to* stevenson's Book of Proverbs Maxims & Familiar Phrases

कुछ कहना अपनी निश्चयात्मकता को व्यक्त करना नही है, क्योकि इसके उद्भव के विषय म कोई निश्चित और नपीतुली प्रक्रिया नही मिलती।

उद्भव के प्रमुख आधार

कहावत के उद्भव के विषय मे विभिन्न आधारो के नाम गिनाये जाते हैं। डा० कन्हैयालाल सहल के अनुसार कहावत की उत्पत्ति के मुख्य रूप से तीन आधार हैं —

(क) लोक कथायें (ख) ऐतिहासिक घटनायें (ग) प्राज्ञ वचन।

(क) लोक-कथाय

लोकानुभव प्राय घटनामूलक होता है। कोई घटना घटित होती है और हमारे जीवन अनुभव मे वृद्धि करती हुई लुप्त हो जाती है। किन्तु अपने पीछे सदा-सदा के लिये कहावती सकेत छोड जाती है। प्रत्येक अनुभव के पीछे कोई न कोई घटना अवश्य छुपी रहती है। यही घटना 'कहना' के रूप मे सुनी-सुनाई जाती है। कहावतो मे विविध लोक-कथाओं का अस्तित्व निहित रहता है। चूकि लोक कथाओ के माध्यम से अनेक नीति की बातो का प्रचार प्रसार लोक-जीवन मे किया जा सकता है इसलिए कहावतो का आधार बना कर लोक-कथाओ का प्रचार होता है। जनसाधारण मे वे उक्तिया प्रचलित हो जाती हैं जो लोक कथाओ के गर्भ मे छुपी रहती हैं।

घटना व ऐतिहा घटना

(ख) ऐतिहासिक घटनायें

कहावतो के उद्भव में ऐतिहासिक घटनाओ का महत्वपूर्ण हाथ रहता है। कभी कभी किसी ऐतिहासिक व्यक्ति से निकला वाक्य भी कहावती महत्व प्राप्त कर लता है। मारवाड विजय जो कि एक कठिन सघर्ष के पश्चात प्राप्त हुई थी पर शेरशाह ने कहा था— एक मुट्ठी भर बाजरे के लिये मैंने दिल्ली का राज्य खा दिया होता —यह वाक्य तत्पश्चात ही कहावत के रूप म प्रयुक्त किया जाने लगा। लोकमान्य तिलक का 'स्वतत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' तथा सन १९४२ के क्रांति के समय दिया गया 'करो या मरो' का नारा भी कहावत के रूप मे प्रचलित हो गया। पडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रचारित 'आराम हराम' है, तथा लालबहादुर शास्त्री द्वारा दिया गया नारा—'जय जवान जय किसान' भी लोकोक्ति के रूप म प्रतिष्ठित हो गये हैं।

ऐतिहासिक घटनाओ से उद्भूत होने वाली कहावतो का विस्तृत विवेचन ऐतिहासिक वर्गीकरण के प्रकरण में किया गया है।

(ग) प्राज्ञ-वचन

प्राज्ञ-वचन एक प्रकार की ऐसी संक्षिप्त और सारगर्भित उक्ति है, जिसमें किसी सामान्य सत्य की अभिव्यक्ति हुई हो।[1] कहावतें दो प्रकार की होती हैं। साहित्यिक और लौकिक। साहित्यिक कहावतों को ही 'प्राज्ञ-वचन' कहते हैं। यह किसी विद्वान कवि या साहित्यकार द्वारा प्रयुक्त उक्तियां होती हैं, जिनका प्रयोग कालान्तर में जनसाधारण द्वारा कहावतों की तरह ही किया जाने लगता है। प्राज्ञ-वचनों अथवा साहित्यिक कहावतों के निर्माता का पता रहता है, जबकि लौकिक कहावतों के निर्माता का नहीं। लौकिक कहावतें जन-उक्तियां होती हैं। साहित्यिक कहावतें ही कालान्तर में प्रयोग की प्रचुरता के कारण लोकोक्तियां बन जाती हैं।

कहावतों के उद्‌भव की प्राचीनता

जिस प्रकार कहावतों के उद्‌भव का प्रश्न विचार करने का है, उसी प्रकार कहावतों के उद्‌भव का समय और काल भी विचारणीय है। कहावतों का उदय कौन से काल और युग में हुआ, इसका उत्तर निश्चित रूप से दिया जाना सम्भव नही है। हां, कुछ अनुमान अवश्य लगाये जा सकते हैं।

मनुष्य अपने आदिम युग मे निम्न-स्तरीय सभ्यता और संस्कृति में विचरण करता था। उसके पास ज्ञान का कोई संचित कोष न था, किन्तु जीवन के उपयोगी संकेतों के लिये कहावतों का सहारा लिया जाता था। बुद्धिवाद के युग में पहुंचता-पहुंचता मनुष्य शंकालु हो गया, किन्तु एक समय था जब मनुष्य संशयात्मकता का नाम तक नही जानता था। उस युग मे मनुष्य के मन मे प्रचलित कहावतो के प्रति शंका की कोई गुंजायश नही थी। यद्यपि उस समय मे अर्थ-शास्त्र, धर्म-शास्त्र और नीति के सिद्धान्तों की कोई लिखित व्याख्या नही थी मगर व्यावहारिक-ज्ञान की कोई भी कमी नही थी। व्यावहारिक ज्ञान ही कहावतों के रूप में लोगों द्वारा श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था।

भाषा की उत्पत्ति की तरह ही कहावतों की उत्पत्ति भी अति प्राचीन है। किसी भू-भाग में जातिय स्थिरता आने पर उस जगह की भाषा में थोड़े बहुत साहित्य की सृष्टि होने लगती है। श्रुति-परम्परा में आगे बढता हुआ यह साहित्य कालान्तर में दो भागों मे विभक्त हो जाता है। गद्य और पद्य मे। गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक आकर्षक और जन-प्रिय होता है। इसीलिए किसी भी जाति के प्रथम

1. A treasury of English aphorims by logan Pearsall smith, P. 44.

साहित्य सृजन में पद्य ही उपलब्ध होता है।

कुछ पद्य रचना अधिक मर्मस्पर्शी होती हैं, जो श्रोताओं पर विशेष छाप छोड़ देती हैं। यह पद्य-खंड सामाजिक गोष्ठियों के सम्पर्क में आने के कारण किसी अर्थ विशेष के लिए रूढ़ हो जाते हैं। यही रूढ़ रूप लोकोक्ति कहलाते हैं।

इस प्रकार लोकोक्ति अपने विविध रूपों के विविध स्तरों को पार करती हुई अपने असली स्वरूप में प्रचलित होकर लोक-साहित्य का शाश्वत अंग बन जाती हैं। फिर भी कहावतों के उद्भव के समय का ठीक-ठीक पता लगाना अति कठिन कार्य है।

कहावतों का विकास

मौखिक-आदान-प्रदान तथा श्रुति-परम्परा से कहावतों का सबंध होने के कारण उनमें विकास अवश्यम्भावी है। कहावतों का विकास मुख्य रूप से निम्नलिखित रूपों में होता है।[1]

(क) मूल भाषा की कहावतें और उनके रूपान्तर
(ख) कहावतों में अर्थ और नामगत परिवर्तन
(ग) कहावतों में पाठान्तर
(घ) कहावतों के रूपों में परिष्कार
(ङ) कहावतों का लोप और निर्माण।

(क) मूल भाषा की कहावतें और उनके रूपान्तर

बहुत सी कहावतें अपनी मूल भाषा में से कालान्तर में दूसरी भाषाओं की कहावतों में रूपान्तरित हो जाती हैं। यद्यपि उनकी मूल आत्मा तो बनी रहती है, किन्तु उनकी शब्दावली और अभिव्यक्ति पद्धति में परिवर्तन हो जाता है। हमारे यहां प्रचलित 'बाणियें वाली माखी' नामक कहावत भी इसी प्रकार से अन्य भाषा से रूपान्तरित है।

संस्कृत के 'वणिक मक्षिका' से चलकर यह अपने वर्तमान प्रचलित रूप में पहुंची है। इसके सन्दर्भ में एक कथा दृष्टव्य है—

बीकानेर में श्री लक्ष्मीनाथ जी के मन्दिर के पास भाडासर का जैन मन्दिर है। मन्दिर बनाते समय कारीगरों ने सेठ से कहा कि इसकी नींव में यदि पर्याप्त घी डाला जाय तो मन्दिर मजबूत बन सकेगा। सेठ ने कहा कि जितना

---

१. राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन–पृ० ४९

घी चाहिए मंगवालो । घी के कुप्पे के कुप्पे आ गये । सेठ ने एक कुप्पे का ढक्कन खोलकर घी की परीक्षा करनी चाही । संयोग से एक मक्खी घी मे गिर गई और तुरन्त मर गई । सेठ ने चटपट मक्खी को घी मे बाहर निकाला और उससे अपनी जूती को चुपड लिया । कारीगरों ने सोचा सेठ ने मक्खी के लगे घी को ही नही छोडा, तो फिर नींव मे इतना घी क्यों खर्च करने लगा ? सेठ कारीगरो का मन्तव्य ताड गया । उसने कहा जितना घी चाहिये मंगवालो मेरे यहा घी की कमी नही है, रही बात मक्खी से घी निचोडने की; सो थोडा सा भी घी क्यों व्यर्थ जाने दें ? तभी से 'बाणियें वाली माक्खी' कहावत का प्रचलन हो गया ।

इसी से मिलती-जुलती कथा 'जीवन-चरित्' मे भी मिलती है । उसमे भी इसी भाव को आधार मान कर कथा का विकास हुआ है ।

इस प्रकार कहावतो के विकास मे यह प्रक्रिया बहुत सहायक सिद्ध होती है ।

(ख) कहावतो मे अर्थ और नामगत परिवर्तन

कभी-कभी कहावतो मे नामगत और अर्थ-परिवर्तन भी हो जाता है । जैसे—"कठै राजा भोज, कठै गगू तेली" जैसी कहावत भिन्न-भिन्न भाषाओ मे भिन्न-भिन्न रूपो मे प्रचलित है । कश्मीर मे तो यह वैषम्य मूलक रूप को छोड कर समता मूलक रूप मे–'जठै राजा भोज, बठै गगू तेली" बन गई है । बुंदेल खड मे 'गगू तेली' का 'ठूंठा तेली' हो गया है, और बादा प्रांत के लोगो ने उसे 'कनवा तेली' बना दिया है ।

(ग) कहावतों मे पाठान्तर

कहावतें मुख्यत श्रुति-परम्परा में विकसित होती हैं । अतः उनमे पाठान्तर होना स्वाभाविक ही है । उदाहरणार्थ—

(१) राड आडो बाड चोखी ।
पाठान्तर–राड सूं बाड भली ।

(२) रावलै रो तेल पल्ले मे ही चोखो ।
पाठा०–रावलै रो तेल पल्ले मे ही झेल ।

(३) भागते चोर रा झीटा ही चोखा ।
पाठा०–भागते चोर री लगोटी ही चोखी ।

(घ) कहावतों के रूपों में परिष्कार

अनेकों कहावतें ऐसी होती हैं, जो अपने सुन्दर और आकर्षक पद-विन्यास के कारण अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त कर लेती है। इन कहावतों के पीछे एक लम्बा इतिहास भी होता है। कहावतों को अपने वर्तमान परिष्कृत रूप प्राप्त करने के लिये नाना रूपों, अनेक परीक्षाओं और एक लम्बे समय के विभिन्न चरणों में से होकर गुजरना पड़ता है। तब कहीं जाकर वह वास्तव में एक लोकोक्ति बनती है।

(ङ) कहावतों का लोप और निर्माण

बहुत सी कहावतों का निर्माण विशेष परिस्थितियों के कारण होता है। उन परिस्थितियों की समाप्ति के पश्चात उन कहावत का भी लोप हो जाता है। अंग्रेजी शासन काल के समय निर्मित बहुत सी कहावतें स्वतंत्र भारत में आकर लुप्त हो गईं और उनका स्थान नई-नई कहावतों ने ग्रहण कर लिया।

कुछ अश्लील कहावतें भी जो अशिक्षित समुदाय में अधिक प्रचलित होती हैं, शिक्षा और ज्ञान के प्रचार-प्रसार के साथ ही लुप्त होती चली जाती हैं। इस प्रकार कहावतें विशेष परिस्थितियों और मनोवृत्तियों के अनुकूल ही बनती और बिगड़ती रहती हैं। कहावत का उद्‌भव होना, विकास की एक लम्बी प्रक्रिया में से गुजरना और परिस्थिति-जन्य विवशता के कारण अपना लोप कर देना तथा नव-निर्माण करना, कहावती जगत् का अपना नियम है। मगर शाश्वत सत्यों को अभिव्यक्त करने वाली कहावतों की आभा कभी मन्द नहीं पड़ती, वे तो निरन्तर जगमग करती हुई मानव मात्र और समाज को दिव्यालोक प्रदान करती रहती हैं।

अध्याय / ४

कहावतों का वर्गीकरण

कहावतों के वर्गीकरण का कार्य अपने आप में अत्यंत ही जटिल और उलझा हुआ कार्य है। कहावतों के वर्गीकरण के लिये कोई निश्चित आधार नहीं बनाये जा सकते। एक ही कहावत का प्रयोग भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा भिन्न-भिन्न अभिप्रायों में हो सकता है। एक ही कहावत को सामाजिक, धार्मिक, नैतिक तथा सांसारिक ज्ञान के वर्ग में सम्मिलित किया जा सकता है। अतः कहावत को किसी सामान्य वर्ग व उपवर्ग में भी बांधा जाना एक दुष्कर कार्य है।

फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिये अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से कहावतों का वर्गीकरण किया है। 'Behar Proverbs' के विद्वानों ने कहावतों को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया है—

(१) मनुष्य की कमजोरियों, त्रुटियों तथा अवगुणों से सबद्ध।
(२) सांसारिक ज्ञान से सबद्ध।
(३) सामाजिक और नैतिकता से संबद्ध।
(४) जाति की विशेषताओं से सबद्ध।
(५) कृषि और ऋतुओं से सबद्ध।
(६) पशु तथा सामान्य जीव-जन्तुओं से संबद्ध।

इसी प्रकार मैनवारिंग (Man waring) ने अपने 'मराठी प्रावर्ब्स' (Marathi Proverbs) नामक पुस्तक में कहावतों के वर्गीकरण के चौदह आधार प्रस्तुत किये हैं—

(१) रूपात्मक वर्गीकरण ।
(२) विषयानुसार वर्गीकरण ।

रूपात्मक वर्गीकरण के आधार पर तुक, छ द अलकार लौकिक न्याय अध्याहार सवाद, सख्या तथा व्यक्ति आदि पर विचार किया है। विषयानुसार वर्गीकरण के अन्तर्गत ऐतिहासिक स्थान सबधी, सामाजिक शिक्षा तथा नीति सबधी धर्म और दर्शन सम्बधी कृषि सम्बधी वर्षा सम्बधी तथा साहित्य सबधी और प्रकीर्ण कहावतो का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

मेरे द्वारा किये गये वर्गीकरण के सबध मे भी कुछ कह देना न्याय सगत ही होगा। बीकानेरी कहावतो को दो वर्गो (क) शैलीगत तथा (ख) कथ्यगत आधार पर बाट कर अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

शैलीगत वर्गीकरण के अन्तर्गत अलकार तुक, सवाद सख्या व्यक्ति समास, नापतोल अनुरणनात्मकता आदि पर विचार विश्लेषण किया गया है। कथ्यगत वर्गीकरण के अ तर्गत ऐतिहासिक स्थानगत सामाजिक, शिक्षा धर्म दर्शन, अगउपाग कृषि वर्षा पशु पक्षी मनोविज्ञान, शकुन, खेलकूद हास्य-व्यग्य से सम्बन्धित कहावतो का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

(अ) शैलीगत वर्गीकरण

बीकानेरी कहावतो मे तुक-वैविध्य

तुक का महत्त्व —कहावतो म तुक का महत्त्व अद्वितीय है। गद्य के शुष्क उच्चारण की अपेक्षा तुकान्त रचना आसानी से स्मृति मे बनी रहती हैं। तुकान्त कहावतो को बोलन म एक आनन्द की सी अनुभूति होती है।

कहावतो मे तुकें अपने विविध रूपो मे आती हैं। मुख्य मुख्य निम्ना कित हैं —

(क) द्विधा विभक्त

तुकान्त कहावतो म अधिकाश दो भागो म विभक्त रहती हैं तथा इन भागो के अन्तिम शब्दों की आपस म तुक मिलती है। उदाहरणार्थ (१) करन्ता सो भोगन्ता, खोदन्ता सो पडन्ता।

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को अपने किये का फल भोगना पडता है, जो दूसरो के लिये खड्डा खोदता है, स्वय को उसम गिरना पडता है।

(२) चोतो मरग्यो, नाम धरग्यो ।

अर्थात् चोता मर गया और अपना नाम छोड़ गया । उपर्युक्त कहावत में 'मरग्यो' और 'धरग्यो' शब्दों द्वारा तुक मिलती है ।

(३) वै दिन गया ववार, गो जं घालती ज्वार ।

अर्थात् वे दिन ववार में ही चले गये जब जेब में ज्वार डाला करते थे ।

(४) भीत नै खोवै आलो, घर नै खोवै सालो ।

अर्थात् दीवार का नाश आले से और घर का नाश साले से होता है ।

(५) खाण पीण में ताकड़ा, काम करण नै बापड़ा ।

अर्थात् खाने पीने में तो सबड़ और काम करने में बेचारे ।

(६) घर में काइनी आखत रा बीज, बेटो खेलै आखातीज ।

अर्थात् घर में तो चावल का एक दाना भी नहीं है और बेटा आखातीज मनाना चाहता है ।

(७) तूं काणों हूं खोडो, राम मिलायो जोडो ।

अर्थात् तू कानो है और मैं खोडा हू. ईश्वर ने हमारी अच्छी जोड़ी मिलाई । कहन का तात्पर्य यही है कि दोनो व्यक्ति एक समान हैं ।

(८) कणाई घी घणा, कणाई मुट्ठी चणा ।

अर्थात् कभी घी की बहुतायत रहती है और कभी मुट्ठी भर चने ही प्राप्त होते है ।

(९) इन्दरियो घरावै खुम्बया दरसावै ।[1]

अथात् बादल गरजते है तब खुम्बिया निकलती हैं ।

(१०) भीज्या कान, हुया अस्नान ।

अर्थात्–कान भीगना, पूर्ण स्नान का द्योतक है ।

(११) गाय न बाछो, नीद आवै आछी ।

अर्थात् गाय और बछिया नहीं होने के कारण निश्चिन्त होकर नींद लेते हैं ।

---

१ बीकानेर क्षेत्र में यह विश्वास है कि बादलों के गर्जन से खुम्बिया प्रकट होती हैं । वर्षा ऋतु मे बालू के टीलो पर सफेद सफेद एक छतरीनुमा पौधा उभरता है, जो सब्जी बनाने के काम आता है इसे ही खुम्बी कहते हैं ।

(१२) मा जिसी डोकरी, घड़ै जिसी ठीकरी।

ग्रर्थात् मा के अनुरूप पुत्री और घड़े के अनुरूप ठीकरी होती है।

(१३) मुंडो सूई सो पेट कुई सो।

ग्रर्थात् मुंह तो सुई जैसा है किन्तु पेट कुए के समान है। तात्पर्य यही है कि दुबला पतला होने पर भी अत्यधिक भोजन करने वाला।

उपर्युक्त सभी कहावतो में दो खण्ड हैं और दोनो खण्डो के अन्तिम शब्दो की तुक मिलती है।

(ख) त्रिधा विभक्त

कई कहावतें ऐसी हैं, जो तीन भागो मे विभक्त रहती है तथा तीनो भागो के अन्तिम शब्दो की तुक मिलती है। यथा—

(१) एक बार योगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी।

ग्रर्थात् दिन में एक बार योगी, दो बार भोगी तथा तीन बार बीमार शौचार्थ जाते हैं।

(२) जियो मासी, घो घालसी, गोडा चालसी।

अर्थात मोसी बहुत वर्षों तक जीवित रहे ताकि वह घी खिलाये, जिससे पावो मे शक्ति बनी रहे।

(३) कातिक कितली, मिगसर मिर्गली, पो पिर्दली।

ग्रर्थात् कातिक मे 'कीर्ति', मार्गशीर्ष मे 'मृगी' और पौष मे 'पारदी' नक्षत्र उदय होते हैं।

(४) अठे इया, बठै बिया, ग्रो गणगोरो धकै किया?

अर्थात् यहा इस प्रकार और वहा वैसी स्थिति है, ऐसे मे गौरी पूजन कैसे हो?

(ग) चतुर्धा विभक्त

बहुत सी कहावतें चार भागो मे विभक्त रहती हैं, ये भाग दोहे के चरण जैसे लगते हैं और इनके अंतिम शब्द की तुक मिलती है। उदाहरणार्थ—

(१) गधै रा कूटणा, बाणिये नै लूटणा।
हेता रा टूटणा, बडा नैण फूटणा॥

ग्रर्थात् गधा कूटने योग्य, बणिया लूटने योग्य, प्रीति टूटने योग्य और

बड़े नयन फूटने योग्य होते हैं।

(२) कातिकरो छांट बुरी, बाणिये री नाट बुरी।
भायां री आंट बुरी, राजा री डाट बुरी।[1]

अर्थात् कार्तिक की वर्षा, बनिये की 'नहीं' भाइयों की लड़ाई, और राजा की डाट बुरी होती हैं।

उपर्युक्त कहावतों में चार-चार चरण हैं, जिनके अंतिम शब्दों की तुकें मिलती हैं।

(घ) खण्डहीन

अनेक कहावतें ऐसी भी मिलती हैं जिनके पहले और अंतिम शब्द में तुक मिलती है, किन्तु जिनके विभाग नहीं किये जा सकते, और जिनका उच्चारण एक ही सांस में हो जाता है यथा—

(१) साठी बुध नाठी।
अर्थात् साठ वर्ष का होने पर व्यक्ति की बुद्धि नष्ट हो जाती है।

(२) बाजरी री हाजरी।
अर्थात् जिसका अन्न खाया जाय उसी की गुलामी करनी पड़ती है।

(३) करणी सो भरणी।
अर्थात् जो जैसा करता है, वैसे ही फल की प्राप्ति होती है।

(४) छोटो सो खोटो।
अर्थात् जो जितना छोटा होता है, वह उतना ही शैतान होता है।

(५) रावला सो बावला।
अर्थात् रावले में बावले ही रहते हैं।

(६) कालो राम रो सालो।
अर्थात् काला राम का साला होता है।

(७) तंगी में कुण संगी ?
अर्थात् गरीबी में कोई साथ नहीं देता।

उपर्युक्त सभी कहावतों में कोई विभाग नहीं हैं, बल्कि एक ही सांस में

---

१ पाठान्तर—'काची तो माट बुरी, ऊंदी तो खा बुरी'।

च्चारित हो जाती हैं, तथा प्रथम और अंतिम शब्दों की तुकें मिलती हैं।

ङ) आन्तरिक तुक

बीकानेरी कहावतों में अनेकों ऐसी कहावतें हैं जिनमें आंतरिक तुकों का र्वाह हुआ है। उदाहरणार्थ—

(१) चोरी रो धन मोरी में जावे।
अर्थात चोरी किया हुआ धन व्यय ही चला जाता है।

(२) कम खाणो'र गम खाणो फायदो ही करै।
अर्थात् कम खाना और गम खाना, दोनों ही लाभदायक रहते हैं।

(३) साठ में गाठ लागणी।
अर्थात् उलझी हुई चीज और भी उलझ जाना।

(४) लेणा एक न देणा दोय।
अर्थात् न एक लेना तथा न दो देना। किसी के निर्लिप्त भाव को देख र उक्त कहावत का प्रयोग किया जाता है।

(५) गाडी सैं र लाडो सैं बच के रैणो।
अर्थात गाडी और लाडो दोनों से ही बचकर रहना चाहिए।

(६) कुपातर जायो भलो न आयो।
अर्थात् कुपुत्र न आया हुआ भला है और न पैदा हुआ।

(७) दारुडी पीणी र मारुडो गाणी।
अर्थात् शराब पीकर मारु राग गानी चाहिए।

(८) मरै जको तो बोली सैं ही मर ज्यावै नही तो गोली सूं ही को मरै नी।

अर्थात मरने वाला तो बात की चोट से ही मर जाता है नहीं तो गोली लगने से भी नहीं मरता।

(९) लाता रा भूत बाता सूं को मानैनी
अर्थात लातो के भूत बातो से नहीं मानते।

उपर्युक्त सभी कहावतों में आन्तरिक तुकों का सुन्दर निर्वाह हुआ है।

(च) तुकों की झडी

कई कहावतें ऐसी मिलती है जिनमें चरण या भागों की कोई सीमा नहीं

होती, तथा उनमें तुकों की झड़ी सी लगी रहती है। इनका प्रवाह लय के साथ आगे बढ़ता है। उदाहरणार्थ—

(१) डूंगर री चढ़ाई भूंडी,
सासी री लड़ाई भूंडी,
कान मायली कोडी भूंडी
दाढ़ी बिना ठोडी भूंडी।

अर्थात् पहाड़ की चढ़ाई, सासी की लड़ाई, कानों में कौडी, तथा बीना दाढ़ी की ठोडी खराब लगती है।

(२) मोरें री माड,
नातें री राड
कटरोल री खाड,
ओछो बोरा,
गोदरो छोरो,
ओछेरी प्रीत
बालू री भींत—कदेई ब्याड़न की करैनी।

अर्थात् बिना नकल की ऊटनी, नाते की पत्नी, (बिना वैदिक मन्त्रों से स्वीकार की हुई), कटोल की चोली, छोटा बोरा तथा नीच व्यक्ति की मित्रता और बालू रेत की दीवार कभी काम नहीं आ सकते।

(३) जीमणो मा रै हाथ रो ही, चाहे जहर ही हो।
बमणो भाया में ही, चाहे वैर ही हो।
चालणो सड़क रो ही, चाहे फेर ही हो।
बैठणो छाया में ही चाहे बैर ही हो॥

अर्थात् मा के हाथ का भोजन ही करना चाहिए, चाहे वह विषयुक्त ही हो। शत्रुता होने पर भी भाइयों में ही रहना चाहिए। सीधी सड़क पर ही रास्ता तै करना चाहिए चाहे उसमें कुछ चक्कर भी पड़ता हो। बैठना हमेशा छाया में ही चाहिये, चाहे वह वैर भी ही क्यों न हो।

(४) नारी नम बन्दी ऊ,
खेत घर बन्दी ऊ,
देस दर बन्दी ऊ—चल्या गया।

अर्थात् नम बन्दी के कारण पत्नी घर बन्दी के कारण खेत और दे

बन्दी के कारण देश हाथ से चले गए।

(५) तली रो तेल,
कुंभार रो हाडो,
हाथी रो सुंड,
नवाब रो झंडो—परियां ही दिसै।

अर्थात् तली का तेल, कुम्हार का मटका, हाथी की सूंड और नवाब का झंडा दूर से ही दिख जाते हैं।

(६) खाडे हाला खेत,
भाया हालो हेत,
चोरां रो चेत,
करण हालो देत—ममा ही मिलै।

अर्थात खड्डे का खेत, भाइयों की प्रीति, चोरों जैसी सतर्कता, और कर्ण के समान दानशीलता मुश्किल से प्राप्त होती है।

(७) बायरो न बाजतो,
इन्दरियो न गाजतो,
पपियो न बरलीवतो,
पछिडो न प्रावतो—तो ये पानरा पाणि कठैऊ पीतो ?

अर्थात् पूर्वी हवा न चलती, बादल न गरजते, पपीहा न बोलता तथा वर्षा भी नहीं होती तो यह पानर पानी पीने को कहाँ से मिलता ?

(छ) तुक और सख्या

बहुत सी कहावतों में सख्या के कारण भी तुक की आवश्यकता होती है। यथा—

(१) छोडो ईस बैठो बीस।
अर्थात् खाट की ईस को छोड़कर बीस व्यक्ति भी बैठ सकते हैं।

(२) थाग है सो लाग।
अर्थात् थाग के पीछे ही सारे कार्य होते हैं।

(३) उगणीस-बीस।[1]
अर्थात् किसी वस्तु की तुलनात्मक स्थिति का विश्लेषण करते समय

१ पाठान्तर—इक्कीस-बीस।

उक्त कहावत का प्रयोग होता है ।

(४) जो तरा बाडस घाल्या छऊ काढया ग्रट्ठाईस (कित्ता बच्या) ।

हिसाब म पूर्ण सतुलन की स्थिति म इस कहावत का प्रयोग किया जाता है

(ज) तुक और व्यक्ति

बहुत सी कहावतो म व्यक्तियो को लकर भी तुक पूर्ति हुई है । उदाहरणार्थ—

(१) ग्रजन जिसा फजन

अर्थात ग्रजन की तरह ही उसका पुत्र फजन होगा ।

(२) भाई भूरा लखा पूरा ।

अर्थात हिसाब–किताब के पूरा हो जाने पर इस युक्ति का प्रयोग होता है ।

(३) राजा गगेस, थारी माला फरू हमेस ।

अर्थात् हे राजा गगासिह ! तुम्हारी माला नित्य फेरता रहू ।

(४) उदै रो लेणो न माधै रो देणो ।[1]

किसी से कुछ भी लेन देन न करने की स्थिति मे इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

(५) सावरिया गिरधारी थारो भरोसो भारी ।

हे सावरिया गिरधारी ! तुम्हारे पर हमे पूर्ण विश्वास है ।

उपर्युक्त कहावतो मे भूरा, उदा माधो' 'गगेस 'गिरधारी इत्यादि नाम तुक पूर्ति हेतु ही कहावतो मे लाये गये हैं अन्यथा इन नामों की कोई सार्थकता नही है ।

(झ) तुक और सम्बन्धोक्तिया

बहुत सी कहावता म सम्बध स्थापन हेतु भी तुकें प्रयुक्त की जाती हैं । यथा—

(१) हूँ म्हारो हूणियो तू थारी तूणियो ।

अर्थात मैं मरा हूणिया हूँ और तू तुम्हारा तुणिया है

---

१ मिलाइय—न उधो का देना न माधो का लेना ।

उपर्युक्त कहावत में 'हूं' और 'हूंणिये' तथा 'तूं' और 'तूंणिया' का सम्बंध स्थापन में तुक की छटा दर्शनीय बन पडी है।

(२) 'थारो सो म्हारो, म्हारो सो है—है—।
अर्थात् तुम्हारा है सो, सो मेरा है और मेरा तो मेरा है ही।

उपर्युक्त कहावत में 'थारो' और 'म्हारो' का तुक द्वारा सम्बन्ध स्थापन हुआ है।

(ञ) तुक और यथार्थ-बोध

बहुत सी कहावतों में यथार्थ-बोध का भी स्पष्ट संकेत मिलता है। इसी यथार्थ-बोध की ओर इंगित करने हेतु तुकों का सहारा लिया गया है। उदाहरणार्थ —

(१) भूख नैं आवे लगावण कायनी नींद नैं आवे बीछावण कायनी।

(२) भूखें री बावडै भूठें री कायनी बावडै।

उपर्युक्त दोनों कहावतों में यथार्थ-बोध की ओर संकेत करते हुए बताया गया है कि नींद आने पर बिछौने की तथा भूख लगने पर सब्जी की आवश्यकता नहीं होती। यह भी माना जाता रहा है कि भूठ बोलने वाला व्यक्ति कभी अच्छी स्थिति को नहीं प्राप्त कर सकता। हां! भूखा व्यक्ति कभी न कभी अच्छी स्थिति में आ सकता है।

इस प्रकार बीकानेरी कहावतों में तुक वैविध्य न केवल रोचक और आकर्षक विषय है बल्कि अपने आप में एक शोध का विषय भी है।

बीकानेरी कहावतें और अलंकार

साहित्य में अलंकार का अपना अद्वितीय महत्त्व है। साहित्य के भूषण के रूप में अलंकारों का नाम लिया जा सकता है। यद्यपि कहावतों के लिये अलंकार कोई आवश्यक तत्त्व नहीं माने जाते। फिर भी कहावतों के विचार विश्लेषण करने पर अनेकों अलंकारों के सशक्त और सुन्दर उदाहरण देखने को मिलते हैं। लोकोक्ति भी एक अलंकार मानी गई है। लोक-प्रसिद्ध कहावत का किसी प्रसंग

विशेष मे उल्लेख होने पर, लोकोक्ति अलंकार का उदाहरण बन जाता है।[1]

बीकानेरी कहावतो मे शब्दालंकारो तथा अर्थालंकारो के साथ-साथ योरोपीयन अलंकारो के उदाहरण भी बहुतायत से मिलते हैं। इन सब का अध्ययन नीचे विस्तार से करेंगे —

(अ) शब्दालंकार

कहावतो मे शब्दालंकारो का बडा महत्व है। अनुप्रास जैसे अनिवार्य कहावती-तत्व शब्दालंकार से ही सम्बन्धित है। चू कि अनुप्रास तुक-पूर्ति हेतु भी प्रयुक्त होता है इसलिये विश्व की सभी कहावतो मे इसका बडा भारी महत्व है। अनुप्रास की शब्दावली श्रुति-मधुर होती है। अत लोक-रुचि का स्वभावत इस ओर मुड जाना कोई आश्चर्य की बात नही।

(क) छेकानुप्रास

जहा एक या एक से अधिक वर्णों की आवृति एक ही बार हो वहा छेकानुप्रास अलंकार होता है। जैसे—

(१) तीन तिकाडा काम बिगाडा।

अर्थात तीन तरह के विचार वाले व्यक्तियों के मिलने से कार्य म विघ्न उपस्थित हो जाता है।

उपर्युक्त लोकोक्ति मे 'त' तथा 'ड' वर्ण की आवृति एक एक बार हुई है।

(२) पोबारा पच्चीस।

अर्थात लाभ ही लाभ होना। 'प' वर्ण की आवृत्ति

(३) जी घर म कोनीं काण, बो घर गयो ई जाण।

---

१ मतलब री मनवार नेत जिमावै चूरमो।
बीना मतलब राब न घालै, राजिया ॥—कृपाराम
इस पद्य मे लोक-प्रसिद्ध 'मतलब री मनवार' लोकोक्ति का प्रयोग होने से लोकोक्ति अलंकार हो गया है।

अर्थात् जिस घर मे से मर्यादा लुप्त हो जाती है, उस घर का सर्वनाश अवश्यम्भावि है।

उपर्युक्त कहावत मे 'घ' 'र' 'क' 'ण' वर्णों की एक-एक बार आवृति हुई है।

(४) भोले रो भगवान।

भोले की मदद ईश्वर करता है। यहा 'भ' वर्ण की आवृति है।

(५) तेल न ताई, राड मरै गुलगुलाई।

अर्थात् घर मे तेल आदि सामान नही है, किंतु गुलगुल खाने की इच्छा होती है। यहा 'त' तथा 'ग' वर्णों की एक-एक बार आवृति हुई है।

(ख) वृत्यानुप्रास

एक या एक स अधिक वर्णों की अनेक बार आवृति होने पर वृत्यानुप्रास अलकार होता है। इस अलकार क प्रयोग से कहावत की छटा मनोहारी बन जाती है।

(१) बरा मागिया मोती मिलै, मागी मिलै न भीख।

अर्थात् बिना मागे मोती जैसी मूल्यवान वस्तु ही प्राप्त हो जाती है, किन्तु मागने पर तो भिक्षा भी नही मिलता।

(२) पूत रा पग पालणैं ही दिख्यावैं।

अर्थात पुत्र के पाव तो पालने मे ही दृष्टिगोचर हो जाते हैं।

(३) जमी जोरु जोर की जोर हट्या ओर की।

अर्थात जमीन और पत्नि शक्ति के बल मे ही अपने पास रहती हैं। शक्ति क्षीन होते ही दूसरे के अधिकार मे चली जाती हैं।

(४) कागा कै कांछडा हो तो उडता कै ही दिखै।

अर्थात कौवे के ही वस्त्र पहने हुये हो तो उडने पर दिखाई पड जाये। उपर्युक्त कहावतो मे अनेक वर्णों को अनेक बार आवृति होकर वृत्यानुप्रास की छटा दर्शनीय बन गई है।

(ग) अन्त्यानुप्रास—

कहावत के चरणो के अन्त में आये हुए वर्णों में समानता होने पर

अन्त्यानुप्रास होता है। इसे तुकान्तता भी कह सकते हैं। उदाहरणार्थः—

(१) आप व्यासजी वैंगण खावै, दूसरा ने परमोद सिखावै।

अर्थात् व्यासजी खुद तो बैंगन खाते हैं और दूसरो को न खाने की शिक्षा देते हैं। *यहा 'व' वर्ण द्वारा तुक पूर्ति का कार्य किया गया है।*

(२) होवे तो पीर, नही तो फकीर।

अर्थात् पास मे होने पर तो पीर बन जाते हैं अन्यथा फकीर ही सही। यहा 'र' वर्ण द्वारा तुक मिलाई गई है।

इस प्रकार बीकानेरी कहावतो मे अनुप्रास के उत्कृष्ट उदाहरण उपलब्ध हैं जिनके आधार पर कहावतो के विस्तृत अध्ययन की भूमिका बनाई जा सकती है।

यमक

जहा एक या एक से अधिक शब्द अनेको बार प्रयुक्त हो एव उनका अर्थ भी प्रत्येक बार भिन्न हो, वहा यमक अलकार होता है। बीकानेरी कहावतो मे यमक यत्र-तत्र बिखरा पडा है। यथा·—

१ घडै सुनार, पहरै नार।

अर्थात् आभूषणो को सुनार गढता है, और नारी पहनती है। उपर्युक्त कहावत मे 'नार' शब्द की आवृत्ति प्रथम बार 'सु' उपसर्ग के साथ 'सोनी' एक जाति विशेष के लिए और दूसरी बार 'स्त्री' के लिये प्रयुक्त हुआ है अत यहा यमक अलकार है।

(२) धन ए धरती कदै मैं ही तेरै पर करत करती।

अर्थात् हे धरती माता ! तुम धन्य हो, कभी मैं भी तुम्हारे ऊपर रहकर कार्य करती थी। उपर्युक्त कहावत मे प्रथम बार 'करत' कृत्यो के लिये और दूसरी बार 'ई' प्रत्यय लगाकर क्रिया के रूप म प्रयुक्त हुआ है।

(३ धाणु को न धन को'र न धान को।

अर्थात धानुका (जाति विशेष) न पैसों का और न ही अनाज देने वालो का कृतज्ञ होता है। उपर्युक्त कहावत मे 'धाणु का' और 'धान का' क्रमश जाति विशेष और अनाज के लिए प्रयुक्त हुए हैं। अत यमक अलकार का सुन्दर उदाहरण बन गया है।

वैण सगाई

इसे वरण सगाई भी कहते हैं और यही नाम अधिक उपयुक्त है।[1] इसमे वर्णों द्वारा स्थापित शब्दो का सम्बन्ध ही वैण सगाई कहलाता है। इसमे चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण को चरण के अन्तिम शब्द के आदि मे लाकर दोनो का सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। यह अलकार राजस्थानी का विशिष्ट अलकार है। बीकानेरी कहावतो में वैण सगाई के समस्त भेदोपभेद प्राप्त होते हैं। यथा—

(१) करम में लिख्या ककर, तो काई करै सिव सकर

अर्थात किस्मत मे ककर लिखे हुये हो तो शिवजी क्या कर सकते हैं।

उपर्युक्त कहावत में 'क' वर्ण चरण के आदि शब्द के आदि मे और चरणान्त शब्द के आदि म पुन आकर वैण सगाई का उत्कृष्ट उदाहरण बन गया है।

(२) जोडी मिली रै जोगिया, मागो र खाग्रो।

अर्थात–जोगिया की जोडी मिल गई है भिक्षा मागकर उदर पूर्ति करो।

इस कहावत म 'ज वर्ण के द्वारा सम्बध स्थापित हुआ है।

(३) कर्म रै आगे काकरो।

अर्थात–कम के आगे अवरोध उत्पन्न होना। उपर्युक्त कहावत में क' वर्ण सम्बध स्थापन म सफल रहा है।

इस प्रकार बीकानेरी कहावतें वैण सगाई का भडार है।

(ख) अर्थालंकार

(अ) विरोध मूलक

विषम —अत्यन्त ही असमानता के कारण जहाँ दो वस्तु मे मेल घटित न हो अथवा इष्टफल की प्राप्ति तो निश्चय ही न हो किन्तु साथ मे ही कोई अनर्थ हो जाय वहा विषम अलकार होता है।

(१) कठै राजा भोज कठै गगू तेली।

अर्थात राजा भोज और गगू में अत्यन्त ही असमानता है अत यहाँ विषम अलकार है।

---

१ सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी–किसन-रुकमणी री वेली, पृ० ६७

(२) कठै राम-राम, कठै टाय-टाय ।

अर्थात् राम-राम और टाय-टांय मे रात-दिन की असमानता है, अत यहा भी विषम अलकार है ।

'गई बेटै तांई, खोयाई खसम नै', 'छोडण गया रोजा'र गलै पड़गी नमाज' तथा 'हूण गया छबा हुय्या दूबा' अर्थात् कोई स्त्री पुत्र प्राप्ति हेतु गई थी किन्तु पति से भी वंचित होना पड़ा, नमाज छोड़ने गये थे और गले मे रोजे पड़ गये, तथा चौबेजी छबेजी के लालच मे दूबेजी ही बनकर रह गये—इन कहावतों मे 'विषम' का उत्कृष्ट निर्वाह किया गया है ।

आक्षेप

जहा किसी कार्य से युक्ति के साथ दोष निकाल कर बाधा डाली जाय वहा आक्षेप अलकार होता है । जैसे—

'गूगो बडो क राम ? बडो तो है सोई है, पण परडाऊ वैर कुण करै' अर्थात राम और गोगाजी म कौन बडा है ? उत्तर स्वरूप कहा है बडा तो है वही है किन्तु स्पष्ट बात कहकर सर्पों के देवता को कौन रुष्ट करे ? इस लोकोक्ति में यद्यपि सकेत दे दिया गया कि बड़ा तो राम ही है, किन्तु युक्ति कौशल का प्रयोग करके आक्षेप अलकार का सुन्दर उदाहरण बना दिया है ।

विरोधा भास

जहा दो भावो के विरोध का आभास मात्र हो वहा यह अलकार होता है ।

(१) नयो नौ दिन, पुराणो सौ दिन ।

अर्थात नया नौ दिन चलता है और पुराना सौ दिन । इस कहावत मे नये पुराने का विरोध मात्र भाषित हुआ है । वास्तव मे ऐसा नही होता ।

(२) भाई बरोबर प्यारो नहीं, भाई बरोबर वेरी नही ।

अर्थात् भाई के समान शत्रु और भाई के समान प्रिय भी कोई नही हो सकता ।

(३) खुद री खाड कडावड लागै, दूसरो रो गुड मीठो ।

अर्थात खुद की चीनी भी कडवी लगती है और दूसरे का गुड भी मीठा लगता है । इस कहावत मे भी गुड और चीनी के गुणो म विरोधाभास दिखाया गया है ।

(आ) सादृश्य मूलक

उपमा

बीकानेरी कहावतो मे उपमा अलकार बहुतायत से मिलता है यथा —

(१) आभै की सी बीजलो, होली की सी झल ।

किसी नायिका की तुलना नभ की विद्युत और होलिका दहन की अग्नि से उपमा देकर की गई । प्रथम चरण की उपमा से नायिका का चांचल्य और दूसरे चरण की उपमा से नायिका का तेज स्पष्ट उभर कर सामने आ जाता है ।

सोढी आलो सिणगार ।

अर्थात सोढी के समान शृ गार करना । तैयार होने म अधिक देर लगाने वाले के लिए इस युक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

(३) काळो अक्षर भैंस बराबर ।

अर्थात काला अक्षर भैंस के समान होना । इस कहावत मे अक्षर को भैंस की उपमा दी गई है ।

रूपक

उपमेय म उपमान का निषेध रहित आरोप ही रूपक अलकार कहलाता है । इस आरोप म औचित्य भी आवश्यक है ।

(१) चालणी रो पींदो पूत मूई री छाती ।

अर्थात् उस स्त्री का हृदय जिसका पुत्र मर गया हो, चलनी का पैदा ही होता है । क्योंकि चलनी के पैद मे अनेक छिद्र होते हैं । और पूत मूई स्त्री का हृदय भी दु ख से विदीर्ण रहता है ।

(२) मूडो मु ह माखियां रो छातो ।

अर्थात चेचक-युक्त मु ह मधुमक्खी का छाता ही होता है ।

(३) नायडो काचर रो बीज ।

अर्थात नाई काचर का बीज होता है । काचर का बीज मनो दूध को फाड देता है इसी प्रकार नाई चुगली करके कई रिश्ता को फाड देता है ।

गम

अनुरूप वस्तुओ के वर्णन मे सम अलकार होता है । जैसे –

(१) बडी रात रा बडा ही तड़का[1]।
अर्थात् बडी रातों के बड़े ही प्रभात होते हैं।

(२) जिता घर, विता ही चुल्ला।
जितने घर होंगे, उतने ही चूल्हे होंगे।

(३) इसा ई देव, इसा ई पुजारा।
अर्थात् ऐसे ही देवता हैं, और ऐसे ही पुजारी हैं।

(४) इसा ब्यावा रा इसा ई गीत।
अर्थात् ऐसे विवाह में तो ऐसे ही गीत गाये जाते हैं।

(इ) अन्य अलंकार

अप्रस्तुत प्रशंसा

जहां अप्रस्तुत के वर्णन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाय, वहां यह अलंकार होता है। उदाहरणार्थ —

(१) एक म्यांन मे दो तलवारां को लटावें नी।

अर्थात् एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती। इस कहावत में तलवार और अप्रस्तुत के द्वारा प्रस्तुत द्वि-पत्नी की ओर संकेत किया गया है।

(२) लग्ने पडया तो बरतन भी खटक ज्यावें।
अर्थात पास रखे बर्तन भी खटक जाते हैं।

(३) चालती रो नाम ही गाडी है।

अर्थात् चलती हुई का ही नाम गाडी है, जो कार्य करने योग्य है उसी की प्रतिष्ठा की जाती है।

यथा संख्या

पहले कुछ व्यक्ति या वस्तुओं का उल्लेख करके फिर उनके गुणावगुणों का वर्णन करने पर यथा संख्या अलंकार कहलाता है।

(१) काल कू सम्मे ना मरै, बामण बकरी ऊंट।
बो मांगै, बा फिर चरै, बो चाबै सूंखा ठूंठ॥

अर्थात काल के कू समय में भी ब्राह्मण बकरी और ऊंट नहीं मर सकते

---

१. पा० बडा की बडी ही वार्ता

क्योंकि ब्राह्मण मांग कर, बकरी फिर कर खा लेती है तथा ऊंट सूखे हुवे पेड़ो को खा लेता है।

(२) तीतर पखी बादली, विधवा काजल रेख।
वा सींचें बा घर करें, या मे मीन न मेख॥

अर्थात् तीतर पखी बदली और विधवा द्वारा लगाया काजल से स्पष्ट हो जाता है कि एक तो वर्षा करती है और दूसरी कोई अन्य पति ढूंढ लेती है।

उत्तर

जहा कई प्रश्नो का एक उत्तर दिया गया हो वहा यह अलकार होता है। यथा :-

(१) गाडी पडी उजाड मे, काटो लागैं पाँव।
गोरी सूखे सेज मे, कह चेला किण दाय॥ (गुरूजी जोडी नाय)

अर्थात् गाडी जगल में पडी है, पाव मे काटा लग गया और नायिका सेजो मे व्याकुल हो रही है, चेला बताओ क्यो? चेला उत्तर देता है, गुरूजी! जोडी नही है। श्लेष मे बैलो की जोडी, जूतो की जोडी, और प्रणय-जोडी से अर्थ लगेगा।

(२) बामण तिसयो क्यू, गधो उदास क्यू। (लोटा न था)

अर्थात् ब्राह्मण प्यासा क्यो तथा गधा उदास क्यो? जवाब है — लोटा नही था। गधे ने लोट नही लगाई, और ब्राह्मण के पास पानी पीने के लिए लोटा नही था।

उत्प्रेक्षा

जब उपमेय में उपमान की सम्भावना या कल्पना करली जाती है, तो उत्प्रेक्षा अलकार होता है। यह कल्पना जानो, मानो, जैसा इत्यादि शब्दों से व्यक्त की जाती है।

(१) आख जाणें भीत मे तरेड फाटी है।

अर्थात आख ऐसी है जैसी दीवार मे तरेड आयी हुई हो। इस कहावत मे 'भीत की तरेड' उपमान मे 'आख' उपमेय की कल्पना की गई है।

(२) दात जाणें गू मे चवला उग्या हो।

अर्थात् दात मानो टट्टी मे चंवले उगे हुए हो।

(३) नाक लिया टीडसी सो।

अर्थात् नाक जैसे टीडसी हो।

वक्रोक्ती

जहा पर वक्ता के कथन का श्रोता द्वारा वक्ता के अभिप्रेत आशय से चमत्कार पूर्ण भिन्न अर्थ लगाया जाय, वहा यह अलकार होता है। यथा-

(१) राबडी मे गुण हो तो ब्याव मे ही रादँ नी।

अर्थात् रावडी मे गुण हो तो उसे शादी मे ही बनाया जाय। वक्ता के कहने का तात्पर्य किसी वस्तु विशेष की योग्यता पर कटाक्ष करना है।

(२) एक तो बाबोजी फूटरा घणां, उपर सूं राख श्रोर लगाली।

अर्थात बाबोजी पहले म ही कुछ तो कुरूप हैं श्रौर राख लगा कर इस कुरूपता को श्रोर भी बढा लिया है।

यूरोपियन अलंकार

बीकानेरी कहावतो मे भारतीय अलकारो के अलावा विदेशी अलकारों के लक्षण भी मिलते हैं। जिनमे मानवीकरण सबसे प्रमुख है।

मानवीकरण

निर्जीव वस्तुओ एव प्रकृतिजन्य पदार्थों मे मानवीय गुणो का आरोपण ही मानवीकरण कहलाता जैसे है-

(१) आरे मेरा सपम पाट।
मैं तनै चाटूं, तूं मनै चाट॥

अर्थात् हे मेरे सर्वनाश तू मुझे चाट और मैं तुझे चाटूं। इस कहावत मे 'सपमपाट' का मानवीकरण किया गया है।

(२) राबडी कै म्हानै ई दाँताऊ खाओ।

अर्थात् राबडी कहती है कि मुझे भी दाँतो से चबा कर खाओ। इस कहावत में 'राबडी' का मानवीकरण हुआ है।

(३) सो उदरा खा र मीन्नी बाई गगाजी चाली।

अर्थात् सो चूहे खाकर बिल्ली गगा स्नान करने को चली। इस कहावत मे बिल्ली का मानवीकरण हुआ है।

(४) अनजी नाचै, अनजी कूदै, अनजी करै गटरका ।
आज अनजी घर नही, कुरण करै मटरका ।।[१]

उपर्युक्त कहावत मे 'अन्न' का मानवीकरण करके मनुष्य की नाचने-कूदने की चेष्टाओ का प्रतिपादन किया गया है ।

निष्कर्ष

ऊपर बीकानेरी कहावतों मे अलकारो का अध्ययन प्रस्तुत किया गया । इन मुख्य-मुख्य अलंकारों के अलावा और भी अनेकों अलकारों के उदाहरण कहावतों मे प्राप्य हैं । वैसे तो यह विषय अपने आप मे एक शोध का सा गाम्भीर्य रखता है । विस्तार भय के कारण कहावतों म अलकार विषय पर कम ही लिख कर सतोष कर लेना पड़ा है ।

बीकानेरी कहावतों में व्यक्ति

बहुत सी कहावतें व्यक्ति परक कहावतें है । व्यक्ति को उसके गुणाव-गुणो के आधार पर कहावतो का आधार बनाया गया है । नाम और गुण के सामजस्य तथा नाम और गुण के वैषम्य–प्रमुख आधार इन कहावतो के बने हैं ।

(क) नाम और गुण का सामजस्य

(१) माना चाली सासरैं, मनावण हालो कुण ?

अर्थात् मानवती ससुराल जा रही है, उसे कोई नही मना सकता, क्योंकि जैसा नाम है उसी के अनुरूप वह स्वाभिमानी भी है ।

(२) जठै भागा भागी जा, बठै भाग अगाऊ जा ।

अर्थात् जहा 'भागा' जाती है, वहाँ भाग्य भी जाता है । अर्थात् नाम से भी वह भाग्यवती है, और गुण से भी ।

(३) धन्ना बाई धन ल्याई ।

अर्थात 'धन्ना' नाम की स्त्री के घर मे आते ही धन का आगमन होने लगा । तात्पर्य यही है कि नाम सार्थक हो गया ।

---

१. पाठान्तर—अनजी नाचै, अनजी कूदै, अनजी करै बढाई ।
आज अनजी घर नही कूण करै लडाई ।।

(ख) नाम और गुण वैषम्य

बहुत सी कहावतो मे व्यक्ति के नाम और गुण वैषम्य पर कटाक्ष किया गया है।

(१) ग्राख्या मे गीड पड़ै, नाम मिरगा नैणी।

अर्थात आँखो मे तो मैल पड़ती है, और नाम मृगनयनी रखा हुआ है।

(२) जलम रा मगता नाम दाताराम।

जन्म से भिखारी हैं, और नाम दाताराम रखा हुआ है। इस प्रकार की और भी कई कहावतें हैं —

(३) जलम रो दुखारी नाम सदासुख।
(४) नाम सेर सिंग जगा कायनी गादड नैई।
(५) पैरण नै घाघरो कोनी नाम सिणगारी।
(६) नाम रो लखपत राय, खर्चै कायनी कचनी पाई।
(७) हाथ धोण नै पाणी कायनी, नाम दरिया सिंग।
(८) सकल माथै बारा बजेड़ा, नाम रूपा।
(९) नाम हजारी लाल, घाटो इग्यारै सै रो।

(ग) तुक अनुप्रास तथा व्यक्ति

तुक मिलाने अथवा अनुप्रास की छटा दर्शाने हेतु भी व्यक्ति का नाम कहावतो मे रख दिया जाता है।

(१) ऐरा, गैरा नत्थू खैरा।

अर्थात् ऐसा-वैसा व्यक्ति।

(२) राधो भलो न बाधो।

अर्थात् न राधा अच्छा है, और न बाधा।

उपर्युक्त कहावतो मे तुक और अनुप्रास हेतु ही नामो का प्रयोग हुआ है अन्यथा इनका कोई विशेष महत्व नही जान पड़ता।

(घ) मानवीकरण

मानवीकरण तीन प्रकार से किया जाता है। (अ) जड़ पदार्थों मे (ब) सजीव पदार्थों मे और (स) अलौकिक शक्तियो म।

(अ) जड़ पदार्थों में

(१) धन-धन माता राबड़ी, दांत हालै न जावड़ी।

अर्थात् हे राबड़ी माता तुम धन्य हो, जिसे खाने से न दांत हिलाने पड़ते हैं और न जबड़ा।

(२) रूप लालजी गुरु और सै चेला।

अर्थात् रुपया गुरु है, और बाकी सब शिष्य हैं।

(३) सीरो मामो, देदे एक धामो।

अर्थात् सीरा मामा एक धामा डाल दो।

उपर्युक्त कहावतो मे 'राबड़ी', 'रुपया' और 'हलवे' का मानवीकरण किया गया है।

(ब) सजीव पदार्थों मे —

(१) कुत्तो भायो कौनै खायो ?

अर्थात् कुत्ते भाई ने किसको काटा ?

उपर्युक्त कहावत मे 'कुत्ते' मे मानवीकरण किया गया है।

(स) अलौकिक शक्ति मे —

(१) अल्ला मिया मी दे।
झाकरै मे घी दे।

अर्थात् हे अल्लाह मिया ! वर्षा कर दे तथा मटके को घी से भर दे।

उक्त कहावत मे ईश्वर को 'अल्ला मिया' कहकर मानवीकरण किया गया है। इस प्रकार विभिन्न पदार्थों मे मानवीकरण करके कहावतो का आधार बनाया गया है।

(घ) नामो का असम्मान जनक बनाना —

व्यक्ति के नामो को असम्मानजनक करके भी कहावतें बनाई जाती हैं। यथा —

(१) इसो भगवानियों भोलो कोनी क एवड़ मे भूखोई चल्यो जा।

अर्थात् भगवानिया ऐसा भोला नहीं कि वह बिना खाये-पीये ही भेड़-बकरी चराने चला जाय।

गुगलियेरो जात।—

अर्थात् गोगा जी की यात्रा।

उपर्युक्त कहावतो मे नामों को किसी झल्लाहट एवं क्रोध के कारण असम्मान जनक बना दिया गया है।

बीकानेरी कहावतें और सख्या

बहुत सी कहावतो मे सख्या का आधार मानकर अभिव्यक्ति की गई है। य सख्याए (क) सम्मुचयात्मक और (ख) असम्मुचयात्मक दोनों ही रूपों में उपलब्ध होती हैं।

(क) सम्मुचयात्मक —

दो — एक-एक'र दो, रामजी री पो।

अर्थात् एक-एक मिलकर दो बनते हैं, पो राम के नाम की है। चोपड़ खेलते समय विशेष पासे जो 'पो' कहलाते हैं वे आने पर तुक-बन्दी हेतु उक्त लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

तीन — (१) तीन लोक सूं मथरा न्यारी।
अर्थात् तीन लोको से मथुरा अलग ही है।

(२) ते हजारी।
अर्थात् जिसे तीन हजार की मनसबदारी मिली हुई हो।

चार — (१) धान पुराणो, घी नवो घर कुलवन्ती नार।
घोड़ी पीठ तुरग री, धरम फल च्यार॥
अर्थात् पुराना धान, नया घी, घर मे खानदानी पत्नी और घोड़े की सवारी—ये चार ही धर्म के फल हैं।

(२) चिण्डाल चोकड़ी।
अर्थात् चार चाण्डाल व्यक्तियो का समूह।

पाच — मौत मानगी मामलो मदी मागण हार।
पाचू मम्मा एक सा, पत राखै करतार॥
अर्थात् मृत्यु, बीमारी, मुकदमा, मदी और भिक्षुपन ये पाचो 'म' एक समान है इनसे ईश्वर ही रक्षा करे।

छ — बीकानेरी कहावतो मे छ की सख्या उपलब्ध नही हुई है।

सात — पहलो सुख निरोगी काया।
दूजो सुख हो घर मे माया।

तीजो सुख हो पुत्र आज्ञाकारी ।
चौथो सुख पतिवर्तानारी ।
पाचवा सुख राज में पासा ।
छठो सुख सुस्थाने बासा ।
सातवो सुख विद्या फल दाता ।
ये सातो सुख रच्या विधाता ।

अर्थात् स्वस्थ शरीर, घर म धन, आज्ञाकारी पुत्र, पतिव्रता पत्नी, राज्य कोष म हिस्सा अच्छा निवास स्थान और फलदायनी विद्या – ये सातो सुख क्रमश हो तो फिर किसी चीज की आवश्यकता नहीं । ईश्वर ने इनके अलावा दूसरे सुख बनाये ही नही ।

असमुच्चयात्मक

(१) हाथी हजार रो, महावत कोडी च्यार रो ।
अर्थात हाथी तो हजार का है, किन्तु महावत चार कौडी का है ।

(२) लाखा रा न्यारा वारा ।
अर्थात् लाखो रुपय इधर उधर करना ।

इस प्रकार बीकानेरी कहावतो मे सख्या को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है ।

बीकानेरी कहावतें और नाप-तौल

अनेक कहावतें ऐसी भी मिलती हैं, जिनमे नाप-तौल के रूप म मन-सेर, गज मील तथा लम्बाई चौडाई का लेखा जोखा रहता है । उदाहरणार्थ —

(१) कीडी नै कण और हाथी नै मण ।
अर्थात् कीडी को कण और हाथी को मन की प्राप्ति होती है ।

(२) सो धान सतरा सेर ।
अर्थात सभी चीजें सतरह सेर की मिलती हैं । किसी भी स्थान की अधेर गर्दी के विषय मे इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

(३) तीन फुटियो पहलवान ।
अर्थात् तीन फुट का पहलवान ।
माटे कद के व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

(४) पैंड चालो कोनी तिसी हुयगी ।
अर्थात् एक कदम चलो नहीं और प्यास लग गई ।

(५) पसेरी हुता दुसेरी नें कुण पुछै ।
अर्थात् पाच सेर के होते दो सेर की क्या कीमत है ? अधिक गुण वाले व्यक्ति के सामने कम गुणो वाले व्यक्ति की कोई कीमत नही होती ।

इस प्रकार और भी अनेक कहावतें बीकानेर क्षेत्र मे हैं, जिनमे नाप-तोल की प्रणाली अपनाई गई है ।

बीकानेरी कहावतें और अनुरणनात्मकता

भाषा की शब्दावली मे बहुत से शब्द अनुरणन् के आधार पर बन जाते है। भाषा विज्ञान मे भी इसके सम्बन्ध मे एक सिद्धान्त प्रचलित है । कहावतो मे बहुत से ऐसे शब्द मिलते हैं, जो अनुरणन् के आधार पर आये हुए हैं और अपने आप मे पूर्ण कहावत भी हैं ।

(१) रिगचू-रिगचू

अर्थात् धीरे-धीरे । बैलगाडी के पहियो से निकलने वाली आवाज के आधार पर, शनैः गति मे चलने वालो के लिए उक्त कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

(२) खलबली ।
अर्थात् भय और अव्यवस्था की भावना ।

(३) फरड-फरड ।

कपडे फटने की आवाज के अनुरणन् मे उक्त कहावती शब्दो का निर्माण हुआ है ।

(४) सुण सुणियो ।
अर्थात् सूं-सूं की आवाज होना ।

फोग की गीली लकडी के जलने पर उसके पीछे एक द्रव्य पदार्थ निकलता है, जो सूं-सूं की आवाज करता है

बीकानेरी कहावतों में कथात्मकता

अनेक कहावतें ऐसी होती हैं जिनके आकार-प्रकार और रग ढग को

देख कर ही अनुमान हो जाता है कि इनके पीछे कोई न कोई कथा अवश्य है। यह कथात्मकता विविध रूपों मे मिलती है।

(१) पूर्ण घटनात्मक - कहावत पढते ही सम्पूर्ण घटना का चित्र आखो के सामने खिच जाता है जैसे –

(क) फूड कै घर हुई कु वाडी, कुत्ता मिल चाल्या रिवाडी।
काणै कुत्तै लीन्या सूण, करातो लीपण ढकसी कुण ॥

अर्थात् फूहड के घर किवाड लग गये इसलिए सब कुत्तो ने मिल कर रिवाडी जाने का निश्चय कर लिया क्योकि किवाड बद कर लेने पर घर मे कुत्तो का प्रवेश कठिन हो जाता है। इतने मे काने कुत्ते ने शकुन लेते हुए कहा कि हमे रिवाडी जाने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि फूहड स्त्री किवाडो को बद करने मे ही आलस्य करेगी और हम पहले की तरह ही घर में प्रवेश कर सकेंगे।

(ख) 'क्या तो म्हारा करम पातरा, क्या पुरसारी भूली।
माई घालियो सीरो पूडी, बारे घाली थूली ॥"
"ना तो थारा करम पातरा, ना पुरसारी भूली।
माथा देख-देख टीका काढिया, मार गवागव थूली ॥"

किसी जवाई के साथ कोई व्यक्ति उसकी ससुराल खाना खाने गया। वहा पर खाने के समय जवाई को अन्दर बिठा कर भोजन करवाने लगे और साथ वाले को बाहर। जवाई को हलवा-पूडी परोसी गई, तथा साथ वाले व्यक्ति को दलिया। तब उसने कहा कि या तो मेरी किस्मत ही खराब है या फिर परोसने वाली भूल गई है। तब परोसने वाली ने जबाब दिया कि न तो तुम्हारी किस्मत खराब और न परोसने वाली भूली है। यह तो माथे देख-देखकर टीके काढे गये हैं। अत आराम के साथ दलिया खाओ।

उक्त दोनो कहावतो मे घटना का पूर्ण विवरण सामने आ जाता है।

(२) प्रमुख घटनात्मक.– कुछ कहावतें ऐसी होती हैं, जिनमे पूरी कथा न आकर उसकी प्रमुख घटना का उल्लेख कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए-

(क) तिरिया चरितर जाणै न कोय, पति मार कर सती होय।

अर्थात् त्रिया-चरित्र कोई नही समझ सकता, यह पति की हत्या करके भी सती हो जाती है।

(ख) बाबो आवै वाटियो ल्यावै ।
अर्थात् बाबा आने पर ही रोटी लायेगा ।

(ग) देख यारा री हथफेरी, अम्मा तेरी क मेरी ।
अर्थात् मेरी कला को देख यह अम्मा तेरी है या मेरी ।

(घ) बागी कुम्राडो, सागी हाथ ।
अर्थात् वही कुल्हाडा है, वही हाथ हैं ।

(ङ) देवी मढ मे बैठी मटका करै है, बाणिये नै बेटा को दियानी ।
अर्थात् देवी मन्दिर मे बैठी ही ग्रानन्द करती है, किसी बनिये को पुत्र का दान नही दिया ।

(च) गादड मारी पालकी, मे बरस्या ही हालसी ।
अर्थात् गीदड पालथी मार कर बैठ गया है और वर्षा पर्यन्त बैठा रहेगा ।

उपर्युक्त सभी कहावतो मे एक प्रमुख घटना देकर कथा की ओर संकेत कर दिया है । सम्पूर्ण कथा को पढ कर ही कहावत का तात्पर्य समझा जा सकता है ।

बीकानेरी कहावतें और संवाद

साहित्य की प्रत्येक विधा के लिए सवाद एक अनिवार्य तत्व है । नाटक, कहानी, उपन्यास और काव्य बिना सवादो के अधूरे से लगते हैं ।

कहावतो मे भी सवाद शैली प्रचलित है । सवादात्मक कहावतें अत्यन्त ही रोचक और आकर्षक होती हैं । बीकानेरी कहावतो मे सवाद के तीन रूप मिलते हैं —

(क) परस्पर प्रश्नोत्तर रूप मे ।
(ख) स्वगत प्रश्नोत्तर रूप मे ।
(ग) मानवेत्तर सृष्टि मे प्रश्नोत्तर ।

(क) परस्पर प्रश्नोत्तर रूप मे —

(१) ठाकरा सूरमा किसाक, क चोदू रा बैरी पड्यां हा ।
अर्थात् ठाकरा वीर कैसे हो ? जवाब — कायर के तो दुश्मन ही पडे

(२) रीस की पर ? क नीमलै पर ।

अर्थात् गुस्सा किस पर आता है, उत्तर — कमजोर पर।

(३) ठाकरां खल खाओ हो, अक गन्डका कनू खोसी है ।

अर्थात् ठाकरा खल खा रहे हो ? उत्तर – यह भी कुत्तो से छुडा कर खा रहे हैं।

(४) सेफां बाई राम-राम, तू किया ओलख्यो ? अक थारो डोलियो देख'र।

सेफा बाई राम-राम, प्रश्न - तूने कैसे पहचाना ? उत्तर – तुम्हारा हुलिया देख कर। इसी प्रकार और भी अनेक कहावतें हैं।

(५) महाराज टीको लम्बो काढियो, क सूवया जाणियो।

(६) बाबोजी धूणी तपो हो, अक जी जाणै है ।

(७) बाबोजी भजन करो हो, अक रोवणँ ऊ को धापानी।

(८) ठाकरा घोडी ठेका देसी तीन, अक दो तो अकेली ई देसी म्हेतो पैली में ई नीचै आस्यां।

(९) ठाकरा ऊठ कठै, अक चूल्है आगै ।

(ख) स्वगत प्रश्नोत्तर — बहुत सी कहावतों मे स्वय ही प्रश्न उठाकर स्वय ही उत्तर दे दिया जाता है —

(१) आन्धँ नै काईं चाये ? कह दो आख्या ।

अर्थात् अंधे को क्या चाहिये ? केवल दो आखे ।

(२) भैरू जी नै काई चाये ? कह तेल रो चूरमो।

अर्थात् भैरू जी को क्या चाहिये, केवल तेल का चूरमा ।

(३) कुत्ती क्यू घुसै ? कह टुकडै खातर।

अर्थात् कुत्ती क्यो भोकती है ? उत्तर रोटी के लिए।

(ग) मानवेत्तर सृष्टि में प्रश्नोत्तर :— कुछ कहावतें ऐसी भी हैं, जिनमे मानवेत्तर प्राणियो तथा वस्तुओ को कथोपकथन का आधार बनाया गया है। उदाहरणार्थ —

(१) टाडो क्यू हो ? अक गोदा हा। पोटो क्यू करो ? अर मऊ रा जाया हा।

अर्थात् गरजते क्यो हो ? साड है। गोबर क्यो करते हो ? गाय से पैदा हुए है।

अवसरवादियो को लक्ष्य करके इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

(२) मकोडो कह—मा ! मैं गुड की भेली उठा ल्याऊ। कह—कडनू कानी देख।

अर्थात् मकोडा (कीट विशेष) कहता है कि हे मा ! मैं गुड की भेली उठा लाऊ। उसे उत्तर मिला— अपने कटि प्रदेश की ओर तो देख। तात्पर्य यह है कि सामर्थ्यानुसार ही कार्य किया जाता है।

इस प्रकार से संवादात्मक कहावतें बीकानेरी कहावती साहित्य मे अपने वैविध्य के साथ विद्यमान है। इन सवादो का तात्पर्य यह कदापि नही है कि परस्पर एक जगह बैठकर कथोपकथन के नियमो का पालन करते हुए, इनका प्रयोग किया जाता हो। कथन मे प्रभावोत्पादकता को लक्ष्य मे रखते हुए वाक्-चातुर्य के कौशल का परिचय देना ही इनका उद्देश्य हैं।

बीकानेरी कहावतें और समास

परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दो से मिलकर जब एक नया शब्द बन जाता है और बीच के सयोजक शब्द अथवा कारक चिन्ह लोप हो जाता है, उसे समास कहते हैं।

साहित्य मे समास शैली उत्कृष्ट शैली मानी जाती है। बीकानेरी कहावत-साहित्य मे भी समास मिलते हैं, जिनका अध्ययन निम्नांकित ढंग से किया जा सकता है —

(१) अव्ययीभाव समास — एक ही शब्द दो बार आय अथवा पहला शब्द अव्यय हो तब अव्ययी भाव समास कहलाता है।

(क) ठ पा घड-घड देखो, घर-घर ओ ही लेखो।

उपर्युक्त कहावत म 'घर-घर' शब्दो मे समास है। इसका समस्त पद 'प्रत्यक घर' होगा।

(२) तत्पुरुष समास — जहाँ उत्तर पद प्रधान हो और कारक

चिन्ह का लोप होता हो, वहां तत्पुरुष समास होता है। तत्पुरुष के प्रायः सभी रूप उपलब्ध होते हैं :—

(क) कर्म तत्पुरुष :— 'सरग गमण' अर्थात् स्वर्ग को गमन।
(ख) करण तत्पुरुष :— 'बाका खबर' अर्थात् बाके से खबर।
(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष :— 'गोला गुदड़ी' अर्थात् गोलो के लिए गुदड़ी।
(घ) अपादान तत्पुरुष — 'खसम काटी' अर्थात् खसम से कटी हुई।
(ङ) सम्बन्ध तत्पुरुष :— 'पाटा गजट' अर्थात् पाटे का गजट।

मरने के लिए 'सरग गमण'; अफवाह के लिए 'बाका खबर', नीच व्यक्तियों के निवास स्थान के लिए 'गोला गुदड़ी', पति त्यक्त स्त्री के लिए 'खसम काटी'; और पाटो पर बैठ कर कही जाने वाली बहस के लिए 'पाटा गजट' जैसी कहावतो का प्रयोग किया जाता है।

(३) कर्मधारय :— जहा दोनो ही शब्द समानाधिकरण हो और उनका परस्पर विशेष-विशेष्य तथा उपमेय-उपमान का सम्बन्ध हो, वहाँ कर्म-धारय समास होता है।

(क) फूटर चन्द।
अर्थात् चन्द्र की तरह सुन्दर।

उपर्युक्त कहावतो में 'चन्द्र की तरह फूटरा' मे उपमेय-उपमान के रूप में कर्मधारय समास मिलता है।

(४) द्विगु समास :— जहां प्रथम शब्द सख्या वाचक हो तथा समूह का बोध कराये वहां द्विगु समास होता है।

(क) काकरै री मारै'र पसेरी री खाय।
अर्थात् ककर की मारकर पसेरी की खानी पड़ती है। उक्त कहावत में 'पसेरी' में 'पाच सेर के समूह' रूप मे द्विगु समास मिलता है।

(ख) पच ततव।
अर्थात् पाच-तत्वो का समूह।

(५) द्वन्द्व समास :— जहा दोनो ही शब्द प्रधान हो और दोनो के मध्य का 'और' या 'वा' का लोप होता हो, वहा यह समास होता है।

(क) दाल्–बाटियो।
अर्थात् दाल और बाटिया।

'दाल रोटी' के सम्बन्ध मे इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

(ख) अन्न-जल्।
अर्थात् अन्न और जल।

(ग) उगणीस-बीस।
अर्थात् उन्नीस और बीस।

(६) बहुव्रीहि समास :— जहा दोनो ही शब्द प्रधान न हों और किसी विशेष अर्थ का बोध करावे, तब यह समास होता है।

(क) नकटा। अर्थात् जिसकी नाक कटी हुई हो। नकटा शब्द किसी बेशर्म व्यक्ति के अर्थ का बोध कराता है।

बड गोडू। अर्थात् बडे हैं गोडे जिसके।
यहा यह कहावत ऊट का बोध कराती है।

इस प्रकार बीकानेरी कहावतो मे सभी समासो के अनेको उदाहरण प्राप्य हैं।

= =

(आ) कथ्यगत वर्गीकरण

कहावतो के शिल्प गत वर्गीकरण के अन्तर्गत उनकी कलात्मकता तथा शैली के विभिन्न पक्षो का अध्ययन किया गया । कथ्यगत वर्गीकरण के अन्तर्गत कहावतों के आधार और विषयो का अवलोकन करेंगे । कहावतों का मूलाधार उनके विषय हैं - व्यक्ति, समाज देश, इतिहास धर्म, आदर्श, दर्शन, रीति-नीति और विश्व की समस्त चेतना-सत्ता और जडात्मक उपकरणो के विषयो पर कहावतो का महल निर्मित होता है ।

कहावतो के कथ्यगत विषय असख्य हो सकते हैं । बीकानेरी कहावतें भी सृष्टि की समस्त चेतन अर्द्धचेतन और जड/सत्ता पर छाई हुई है । उनके प्रमुख विषयो का अध्ययन क्रमश यहाँ प्रस्तुत किया जायेगा ।

१ ऐतिहासिक कहावतें

बीकानेर एक ऐतिहासिक शहर है । यह न केवल राजस्थान मे ही बल्कि भारतवर्ष और विश्व म भी अपनी आन शान तथा वीरता के लिए प्रसिद्ध रहा है । स्वय बीकानेर की स्थापना एक ऐतिहासिक घटना है । जिसका उल्लेख अन्यत्र किया जा चुका है । जहाँ तक इतिहास और कहावतो की ऐतिहासिक परम्परा का सवाल है, बीकानेर में परम्परा के रूप मे अनेकों कहावतें चली आ रही हैं हा, कुछ मे रूप-परिवर्तन अर्थ-परिवर्तन अवश्य हो गये हैं । ऐतिहासिक तथ्य कहावतो में कहा तक सत्य और असत्य रूप म आये हैं– इसका सीधा सा सम्बन्ध तो इतिहास शोधको से है लोक साहित्य के अनुसधात्को का नहीं । कहावतो मे इतिहास के तथ्य, पूर्ण सत्य, अर्द्ध सत्य, और असत्य रूप मे प्राप्त होते हैं । ऐतिहासिक कहावतो का वर्गीकरण (क) राजवशो से सम्बद्ध, (ख) व्यक्तियो से सम्बद्ध (ग) ऐतिहासिक घटनाओ से सम्बद्ध (घ) गढ तथा किलो से सम्बद्ध और (ङ) स्थानगत विशेषताओ से सम्बद्ध तथा (च) नदी, नाले एव धोरो से सम्बद्ध आदि आधारों पर किया जा सकता है ।

(क) राजवशो से सम्बद्ध

१ रजकुलां राठौड[1]– चू कि बीकानेर राज्य पर स्थापना काल से लेकर देश के एकीकरण तक एक ही 'राठौड वश' का शासन रहा था । इसलिये यहा

१— गरुड खगां लका गढां, मेरु पहाडा मोड ।
रू खा म च दन भलो राजकुला राठौड ॥

यह उक्ति विशेष रूप मे प्रचलित रही है। वैसे भी यह कहावत समस्त भारतवर्ष मे प्रचलित है। चूकि राठोड़ कुल क्षत्रियों में श्रेष्ठ कुल माना गया है।

(२) रण बका राठौड़[1] — भारतीय क्षत्रीयवंशों के विभिन्न गुणों के आधार पर अनेक कहावतें प्रचलित हो गई। राठौड़ वंश के लोग अनादि काल से वीर और युद्ध-भूमि मे विचरने वाले लोग रहे हैं। अतः 'रण बका राठौड़' जैसी उक्तियाँ जन साधारण मे प्रचलित हैं।

(३) वाह भाई राठौड़, धरती दई पोड़ — राठौड़ों के रणबाकुरे होने का उदाहरण इस उक्ति में निहित है। 'धरती दई पोड़' - मे तात्पर्य वीर के वीरतापूर्ण पांवों का पृथ्वी पर पड़ना है।

(४) जोधाणों नै बीकाणों बठै पूर्ण — बीकानेर के संस्थापक स्वनाम धन्य वीरवर राव बीकाजी जोधपुर नरेश राव जोधा के पुत्र थे। और पिता की किसी कटूक्ति पर ही बीकानेर बसाने का संकल्प लिया था, किन्तु बाप, अन्त में बाप ही रहता है। अतः पितृ-भक्ति निदर्शन हेतु- जोधाणों नै बीकाणों बठै पूर्ण कहावत प्रचलित हो गई तथा बीकानेर के जन-जन के मुह से यह उक्ति सुनी जा सकती है।

(५) पूगलगढ री पदमणी '— किसी भी सुन्दर स्त्री के लिये इस कहावत का प्रतीक रूप मे प्रयोग होता है। लोक-साहित्य के पाठको के पूर्ण परिचित ऐतिहासिक स्थान 'पूगल' के परमार वंशीय राजा पिंगल[2] की पुत्री मारवणी के लिये ही 'पदमनी' शब्द का प्रयोग हुआ था, क्योंकि स्त्री-सौंदर्य-विशेषज्ञों की दृष्टि से वह 'पदमनी' स्त्री की समस्त विशेषताओ को पूर्ण करती थी। कालान्तर मे यह 'पदमनी' अर्थ विस्तार करती हुई समस्त सुन्दर स्त्रियो के लिए प्रचलित हो गई।

(ख) ऐतिहासिक घटनाओ से सम्बद्ध —

(१) गढ दिल्ली, गढ आगरो, अध गढ बीकानेर।
भलो बसायो भाटिया, गढ जैसलमेर ॥

१— बल हठ बका देवड़ा करतब बका गौड़।
हाडा बका गाढ मे रण बका राठौड़ ॥

२ – यद्यपि पिंगल नाम अभी विवादास्पद है, किंतु 'शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट द्वारा दयालदासिढायच कृत पवार वंश दर्पण' नामक ग्रन्थ मे- 'गढ पूगल गजवत हुओ लुद्रवं भाण भू' के अनुसार 'गजमल' नामक राजा की पुत्री होना पाया गया है।

उपर्युक्त कहावत के सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है कि बीकानेर-नरेश ने एक बार अपने किसी चारण को बीकानेर के किले की प्रशंसा के लिए कोई कविता रचने को कहा । चारण बड़ा ही स्पष्ट भाषी और नीडर था । उसने उपर्युक्त दोहा रच कर बीकानेर के गढ को अर्द्ध गढ की संज्ञा दी । कहते हैं परिणाम स्वरूप उस चारण को मृत्यु दंड प्राप्त हुआ ।

(२) कान्दा तो कमधजिया खाया, घी खायो गोला ।
चूरू तो चाली हो ठाकरा, बाजन्ता ढोला ।।

अर्थात कांदे तो कामधंधा करने वाले खा गये और घी को गोले चाट गये, परिणाम स्वरूप नमक हरामी के बदले चूरू का शासन आराम से ठाकुर के हाथ से निकल गया । कहते हैं, चूरू के ठाकुरों के यहां एक लम्बी फौज गुलाम-चाकरों की खड़ी हो गई जिसके कारण फिरोजशाह तुगलक की तरह उन्हें अपने राज्य से हाथ धोने पड़े ।

(३) सपनै देखी सांवली नापासर रा रूंखा[1] — नापासर के संस्थापक नापा सांखला की पुत्री का विवाह कहीं दूर दूसरी रियासत में हुआ था, उस समय आवागमन के सीमित साधन उपलब्ध थे, अतः उसका नापासर आना बहुत कम सम्भव था । नापासर के दर्शन तो केवल स्वप्न में ही किये जा सकते थे । इस-लिए उक्त लोकोक्ति जन-प्रचलित हो गई ।

(४) चुडलो थारी इब खड रहज्यो, टीको थारी फीको ।
एक तलै दुभांत करया, थारो मूं भूलसूं ऐ बीकी ।।

अर्थात् हे बीकी ! मैं तुम्हारा मुंह जलाऊं, तुम सुहागिन तो बनी रहो तुम्हारी टीकी और चूडा सलामत रहे । तुमने एक स्थान पर बैठ कर दो व्यक्तियों के साथ भिन्न व्यवहार किया है अतः तुम्हें दंड अवश्य मिलना चाहिये ।

इस कहावत के सम्बन्ध में एक कथा इस प्रकार है कि एक राजपूत सरदार के यहां भाट आया । सरदार की पत्नी बीका राजपूतों की बेटी थी । खाने के समय राजपूत सरदार और भाट दोनों ही भोजन करने बैठे । बीकी पत्नी ने अपने पति को अच्छा भोजन दिया, तथा भाट को निकृष्ट । अतः भाट नाराज हो गया और उपर्युक्त दोहा बोलने लगा । तभी से दुभांत करने वाली स्त्री के लिये यह लोकोक्ति प्रचलित हो गई ।

१— पाठा तर—सपनैं देखी सांवली ढींगसरी रा कैर ।

(ग) गढ तथा किलो से सम्बद्ध

राजस्थान राजाओ का घर तथा वीरो का गढ रहा है, राजाओं को अपनी रक्षा के लिये दुर्गम किले और गढ बनवाने अत्यावश्यक थे। यही कारण है कि राजस्थान के प्रत्येक भाग म कही छोटा और कही बडा किला अथवा गढ अवश्य मिलता है। बीकानेर क्षेत्र इस विषय में अत्यत ही समृद्ध कहा जा सकता है। यहा अनेक किले और गढ बने हुए हैं। इनके बारे मे लोगों मे अनेक कहावतें प्रचलित है। उदाहरणार्थ —

(१) गढो मे गढ चित्तोड, और गढ गढैया —चित्तौड का सिसोदिया वश विश्व प्रसिद्ध राजपूत वश है वहा के असख्य वीरों ने मातृ भूमि की रक्षार्थ अपने को देश की बलिवेदी पर न्योछावर कर दिया। अनेक वीरागनाओ ने हसते हसते जौहर की ज्वालाओ को गले से लगाया था उन्ही वीर–वीरागनाओ के वीरत्व और क्षत्रियत्व के तेज से आपुरित गढो म श्रेष्ठ गढ चित्तौड का है, बाकी तो गढो की नाम पूर्ति के लिये ही हैं। चित्तोड क गढ की दुर्गमता अवर्णनीय है।

(२) गढ किला तो बाका ही भला —अर्थात् गढ और किले तो आडे टेढे (दुर्गम) ही होने चाहिये। जिससे शत्रु आसानी से विजय प्राप्त नही कर सके।

(३) गढा रै गढ ही पावणा —गढो के मेहमान गढ ही हो सकते हैं। अर्थात् बराबर वाले ही अतिथि बनकर किसी के यहाँ जा सकते हैं। बेमेल का आतिथेय एव आतिथ्य नही निभ सकता।

(४) जूना गढ रो नाको —बीकानेर का इतिहास-प्रसिद्ध किला 'जूना गढ' के नाम से जाना जाता है। जब कोई नया मकान बनवाता है। उसे देखने के लिये परिचित या कोई मित्र आता है तो मकान की प्रशसा हेतु उसके मुह से — 'जूना गढ रो काई नाको है" अर्थात् जूनागढ का क्या कोई किनारा है, सुना जा सकता है।

(घ) स्थानगत विशेपताओ से सम्बद्ध

बीकानेर की ऐतिहासिक स्थानगत विशेषताओ सम्बधी कहावतो को निम्नलिखित वर्गो के आधार पर विश्लेषित किया जा सकता है —

स्थान (ऋतुओ को लक्ष्य मे रखकर) —

(१) सीयाले खाटू भलो, उनाले अजमेर।
नागणो नित नित भलो, सावण बीकानेर॥

अर्थात शीतकाल म खाटू ग्रीष्म म अजमेर और श्रावण म बीकानेर

अच्छा लगता है। जोधपुर का नागौर शहर तो हर ऋतु में अच्छा लगता है। "श्रावण बीकानेर"—कहावत तो राजस्थान में अत्यंत लोकप्रिय है, क्योंकि श्रावण वर्षा ऋतु का महीना होने के कारण बीकानेर की शोभा देखते ही बनती है। अत —

(२) बोर मतीरा खेलर काचर खाणा,
अन धन घीणों धूपटा बरसालै बीकाणा।

अर्थात् बोर, मतीरा, खेलर,[1] काचर, अन्न और दूध-दही, वर्षा ऋतु के साथ ही बीकानेर म प्रचुर मात्रा म उपलब्ध होने लगते हैं।

स्थान-(अकाल को लक्ष्य म रखकर) —

(१) पग पूगल, सिर मेड़ता, उदरज बीकानेर।
फिरतो घिरतो जोधपुर, ठावो जैसलमेर ॥[2]

राजस्थान अकाल बहुल प्रदेश है। यहा पर हर साल किसी न किसी हिस्से में अकाल पड़ता ही रहता है। अत अकाल को रूपक के रूप म बांध कर कहावत प्रचलित है कि उसके पाँव तो पूगल में रहते हैं, सर मेड़ता में, और पेट बीकानेर म रहता है। यह घूम फिर कर जोधपुर भी पहुच जाता है, किन्तु स्थायी रूप से इसका निवास स्थान जैसलमेर है। वास्तव में अकाल के सम्बध मे यह कहावत अत्यंत ही सफल अभिव्यक्ति है।

स्थान-(स्त्री-पुरुषों को लक्ष्य में रखकर) —

ऋतु और अकाल के संदर्भ मे बीकानेरी कहावतों म सफल चित्र प्रस्तुत हुवे हैं। अनेक कहावतें ऐसी भी प्रचलित हैं जो स्त्री पुरुषो पर आधारित हैं और शहर तथा स्थानो की उत्कृष्टता की द्योतक हैं। उदाहरणार्थ —

(१) मारवाड़ नर नीपजै, नारी जैसलमेर।
तुरी तो सिंधा सातरा, करहल बीकानेर ॥

अर्थात मर्द तो मारवाड़ में, स्त्रियां जैसलमेर में, घोड़े सिंध मे, और ऊंट

१ खेलर —काकड़ी को चीरकर सुखा दिया जाता है, उस सूखे हुए रूप को ही खेलर या खलरा कहा जाता है।

२ पाठान्तर—पग पूगल धड़ मेड़तै बाह्या बायडमेर।
भूल्यो चूक्यो जोधपर, ठावो जैसलमेर ॥

बीकानेर मे पैदा होते हैं। उपर्युक्त कहावत मे जहा बीकानेर के ऊटों की श्रेष्ठता की ओर संकेत किया गया है, वहा— .

(२) "सोरठियो दूहो भलो, घोडी भली कुमैत।
नारी बीकानेर री, कपडो भलो सफेत॥"[1]

कहकर सोरठा छद, कुमेत घोडी, धवल वस्त्र की प्रशसा के साथ साथ बीकानेर की नारियों की उत्कृष्टता को भी प्रतिपादित किया गया है।

(३) पद्मणी तो पूगल गढ री —अर्थात् पूगल क्षेत्र तो पद्मणी स्त्रियों के लिए काव्य-प्रसिद्ध ही नही, बल्कि इतिहास प्रसिद्ध भी है। ढोला-मरवण'— प्रेम-गाथा तो इसी 'पद्मणी' के सदर्भ मे अत्यत ही प्रसिद्ध ऐतिहासिक लोक गाथा है।

(४) जामसर री छोरी, उदरामसर रो नाई।
एक ऊं एक चढती, एक बाप'र दूजी माई॥

अर्थात् जामसर की नाइन तथा उदयरामसर का नाई इतिहास प्रसिद्ध पात्र हैं। वे चालाकी मे एक दूसरे से बढे चढे हैं। स्त्री-पुरुषो को दृष्टि में रखकर अनेकों कहावतें बीकानेर क्षेत्र मे प्रचलित है। किन्तु और भी बहुत सी कहावतें सुनी जाती हैं, जो स्थानीय विशेषताओ के चित्र प्रस्तुत करती हैं।

(ङ) देशगत विशेषताओ को लक्ष्य मे रखकर

(१) ऊट मिठाई अस्तरी सोनो गहणो साह।
पाच चीज पिरथी सिरै, वाह बीकाण वाह॥[2]

अर्थात् ऊट, मिठाई, स्त्री, सोने के आभूषण और महाजन—ये पाच चीजें श्रेष्ठ और अद्वितीय रूप में बीकानेर मे उपलब्ध होती हैं। इन पाच चीजों के अलावा कोलायत के वचन भी अलग ही हैं,[3] और नोखा भी निराला है।[4] भारत एक धर्म प्रधान देश है। राजस्थान की अधिकाश जनता धर्म और तीर्थों के प्रति

---

१. मिलाइये—सोरठियो दूहो भलो, ताराछाई रात।
जोबण छाई धण भली, भली मरवण री बात॥

२ पाठान्तर—दारू, अमल, मिठाइया, सोनो गहणो साह,
पाच थोक पिरथवी सिरै, वाह बीकाण वाह।

३. कोलायत रा वैण न्यारा।

४ नोखो सो अनोखो।

अगाध श्रद्धा तथा आस्था रखती है। बीकानेर के निकट ही भारत-प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल कोलायत जी का तालाब भी किसी प्रसिद्ध तीर्थ की तरह अपने घाटों के लिये लोकोक्ति-आधार है।[1]

(२) बीकानेर सो भूखानेरः—वर्षों से बीकानेर अकाल का केन्द्र रहा है। अकाल के कारण लोगों को बहुत ही कष्टों का सामना करना पड़ता है। रोटी के अभाव में अधिकांश गरीब जनता यह कहते सुनी गई है कि बीकानेर 'बीकानेर' नही है, बल्कि 'भूखानेर' अर्थात् भूख-स्थल है।

यद्यपि भूड पन्नग विषणा, कैर कटीला रूख' जैसी कहावतो में बीकानेर क्षेत्र को 'पीवणाँ सर्प' और कांटेदार झाड़िया-युक्त क्षेत्र बताया गया है, किन्तु ऐसी स्थिति मे भी यहा की कुछ चीजें बड़ी प्रसिद्ध है, जो समस्त भारतवर्ष मे पसन्द की जाती हैं।

(३) हापड रा पापड, काबुल रा मेवा।
मकराणे रो भाटो, बीकाणें री सेवा॥

अर्थात हापुड के पापड, काबुल के मेवे, मकराना का पत्थर (संगमरमर) और बीकानेर की सेंव (भुजिया श्रेष्ठ हैं। इनके अलावा यहाँ की मालिने[2] जिनका प्रभाव चलचित्रो तक मे भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है, बड़ी प्रसिद्ध हैं। कोयला उद्योग में पलाना प्रसिद्ध है, और किसी काले व्यक्ति को देखकर 'पलाना' से आने का कटाक्ष कर दिया जाता है।[3] 'गोरख पंथी मोडियो'र बीकाणे रो टोडियो' अर्थात् गोरख पंथी साधु, और बीकानेर का ऊंट अच्छे माने जाते हैं।

(५) गाढवाला में रैहसी, जको राजा जी रा घोडा पासी—अर्थात् जो गाढवाला में रहेगा उसे राजाजी के घोड़े पिलाने ही पड़ेंगे–इस कहावत द्वारा स्थानगत मजबूरियों की ओर भी इंगित किया गया है।

---

१. कोलायत रो घाट।
२. दृष्टव्य–(क) मेरा नाम है चमेली, मैं हूँ मालण अलबेली,
चली आई हूँ अकेली बीकानेर से. ...(फिल्म 'राजा और रंक')
(ख) कोई सब्जी ले लो, कोई तरकारी ले लो,
मैं तो मालण बीकानेर री,............ (फिल्म 'ससुराल')
३. पलाणे को खाण सूं निसर्‌यो है काई ?

इनके अलावा स्थान विशेष की विशेषताओं को लक्ष्य करके अनेक कहावतें प्रचलित हैं। जैसे—'सांभर जाय अलूणों रवें' अर्थात सांभर जाकर भी बिना नमक रोटी सब्जी खाये यह असम्भव बात है। दो व्यक्तियों की विभिन्न विचार धाराओं के स्पष्ट करने के लिये भी कहा जाता है—"हूँ रऊ कोलायत, तूँ रवें बिलायत।" लूणकरणसर का खारा पानी लोकोक्ति-संसार में इतनी ख्याति प्राप्त कर चुकी है कि यहां का हर व्यक्ति "लूणकरणसर रो लूणियो"—बन गया है।

बहुत सी कहावतों में स्थान विशेष के मोह और श्रेष्ठता-सिद्धी की उक्तियां भी मिलती हैं। जैसे-'जै न देख्यो जैंपरियो तो कम म आकर काई करियो' है। स्थान विशेष के साथ अनुप्रास-निर्वाह हेतु भी-"चूरू तेरो चूरमो[1] जैसी कहावतें प्रचलित हैं।

स्थानगत विशेषताओं वाली कहावतें प्रतत व्यक्ति परक बनती चली जाती हैं।

(च) व्यक्तिप्रधान

ऐतिहासिक व्यक्तिप्रधान कहावतों का विश्लेषण भी दो वर्गों के आधार पर किया जा सकता है।

(अ) साधारण व्यक्ति तथा लोक-देवता निर्देशित कहावतें।

(आ) पौराणिक पुरुष-निर्देशित कहावतें।

(अ) साधारण व्यक्ति तथा लोक देवता निर्देशित कहावतें

(१) रामदेवजी नैं मिलै जका ढेढ ही ढेढ—रामदेवजी न केवल बीकानेर के ही बल्कि सम्पूर्ण राजस्थान और भारत में भी एक लोक-देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इन्होंने जाति-पाति के बंधनों को तोड़कर शूद्रों को अपना सेवा केन्द्र बनाया था। इनके सेवक आदि चमार और निम्न जाति के होते थे। अतः किसी के निम्न स्तर वाले व्यक्तियों के साथ कार्य करने पर कह देते हैं कि 'रामदेवजी नैं मिलै जका सैं ढेढ ही ढेढ।' इसी से मिलती जुलती एक कहावत—"पाबूजी नैं मिलै जका थोरी ही थोरी" भी मिलती है।

(२) अरे! ये तो बाका पग बाई पद्मारा—अर्थात् ये बाके पाव तो

१. चूरू तेरो चूरमो, बिसाऊ तेरी दाल।
भादरा में भाटा पड्या, (राज) गढ़्या काढ़ै गाल॥
पाठान्तर—'चूरू तेरो चूरमो बिसाऊ तेरी बाटी'

पद्मा बाई के हैं। किसी सन्देहास्पद बात का निश्चय होने या किसी नई बात के पता लगने पर, इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

कहावत मे वर्णित 'पद्मा' का समय सन् १५६७ के आस-पास माना जाता है। वह चारण माल जी सादू की पुत्री और बीकानेर के श्री अमरसिंह की अन्त पुर वासिनी थी। किन्तु इससे पहले उसकी सगाई प्रसिद्ध कवि बारहठ शकर से हुई थी। बारहठ जी एक बार अपने सेवको सहित उसे देखने गये। पद्मा के पिता कहीं बाहर गये हुये थे। उसने स्वय मर्दाना वेष बनाकर बारहठ जी का अतिथि सत्कार किया। बारहठ जी प्रसन्न होकर वहा से विदा हुये। गाव के बाहर एक व्यक्ति ने उनकी हुक्के से मनुहार की। प्रसगवश उन्होंने माल जी सादू के कुंप की बड़ी प्रशसा की। इस पर उस व्यक्ति न बताया कि माल जी सादू के पद्मा के सिवाय कोई सतान नही है। बात का विवाद शात करने के लिये उस व्यक्ति न उनसे कहा कि आप मुझे उसके खोज बता दीजिये मैं पहचान लूंगा। शकरजी ने उसे खोज बता दिये। उस व्यक्ति ने देखते ही कहा कि यह पग तो बाई पद्मा के ही हैं। क्योकि उसके पाव कुछ टेढे थे। बारहठ शकर जी ने वह सगाई तोड दी और बीकानेर के श्री अमरसिंह पद्मा के गुणो पर रीझ कर अपने अन्त पुर में ले आये। तब से यह कहावत प्रचलित हो गई।

(३) गाव-गाव खेजड़ी'र गाव-गाव गोगोजी—अर्थात् प्रत्येक गाव मे खेजड़ी है, और प्रत्येक गाव में ही गोगाजी की प्रतिष्ठा है। गोगा चौहान राजस्थान के जनप्रिय लोकदेवता है। उन्हे सर्पों का देवता माना जाता है।

(४) वाह राजा गगेस, तेरी माला फेरूं हमेस—महाराजा गगासिंह जी बीकानेर के प्रसिद्ध शासक थे। उन्होंने अनेक उच्चकोटि के जनहित कार्य सम्पन्न किये। अत उन्हीं कार्यों के स्मरण हेतु यह लोकोक्ति यहा प्रचलित है।

(५) बणज्या रतन—अर्थात् एक बार तो दानी रामरतन बनजा। बीकानेर निवासी स्वनामधन्य परम् भगवत् भक्त सेठ रामरतन जी डागा बीकानेर के 'कर्ण' कहलाते थे। उनकी दानप्रियता बडी प्रसिद्ध थी। अत जब किसी की कृपणता पर व्यग्य करना हो तो उक्त कहावत का प्रयोग करते हैं।

(६) गढ मे बीको, शहर मे चोखो—अर्थात् गढ मे जितना प्रभाव बीका जी का है, उतना ही प्रभाव चोखा जी व्यास का शहर मे है।

(आ) पौराणिक पुरुष-निर्देशित कहावतें

बहुत सी ऐतिहासिक व्यक्तिप्रधान कहावतो मे पौराणिक पात्रो का भी

निर्देश मिलता है। "नन्द का फन्द गोविन्द जाणै" अर्थात् नन्द के कार्य गोविन्द ही समझ सकता है। इस कहावत का प्रयोग किसी के द्वारा किये हुए कार्य न समझ मे आने पर किया जाता है। नन्द और कृष्ण स्पष्ट ही पौराणिक पात्र है यही नही किसी की दुष्टता को देखकर 'कस री औलाद' की सज्ञा भी दे दी जाती है।

किसी की सच्चाई पर कटाक्ष करने के लिये हरीशचन्द्र से तुलना की जाती है ? तथा गरीब मित्र की भेंट के लिये पौराणिक पात्र सुदामा के चावल भी याद आ जाते हैं।[1]

चरित्रहीन स्त्रिया द्रोपदी होती है।[2] तथा कटाक्ष में सत्यवती सावित्री भी बनादी जाती है।

महादानी कर्ण भारतीय इतिहास मे अमर है, और कहावतो में उसे चिर गौरव प्रदान कर दिया है। इसीलिए दान और सोने की चर्चा मे कर्ण का नाम स्मरण किया जाता है।[3]

इस प्रकार बीकानेर में प्रचलित ऐतिहासिक कहावतें अपने आप मे एक सम्पूर्ण इतिहास को समेटे हुए हैं। उनके वैज्ञानिक अध्ययन से, हो सकता है कि इतिहास शोधकों को कुछ नये तत्व प्राप्त हो। वैसे लोक-साहित्य के अन्वेषकों के लिये बीकानेर की ऐतिहासिक कहावतें शोध की अदभुत सामग्री सिद्ध हो सकती है।

(छ) नाले, तालाब तथा धोरो से सम्बन्धित कहावतें —

यद्यपि बीकानेरी कहावतो मे नदी, नाले तथा तालाब सम्बन्धी कहावतें अपेक्षाकृत कम मिलती है, क्योंकि इस क्षेत्र मे कोई नदी तथा नाला नहीं बहता है। फिर भी यहा कुछ तालाब बने हुए है, जिन पर कहावतें अवश्य मिलती है। यथा :—

(१) कोलायत रो खालो।

अर्थात् कोलायत का कच्चा नाला। जब वहीं पर पानी अत्यधिक मात्रा

१ सुदामैरा चावल।
२ द्रोपदी हाजानरुण।
३ सोनो गयो करण रै साथै।

मे बहता देखते हैं, तो बरबस ही यहां के जन-साधारण के मुंह से निकल पड़ता है 'कोलायत को सो तालो बहर्‌यो है।' -

(२) सूरसागर रो गेलो।

अर्थात् 'सूरसागर तालाब का रास्ता। बीकानेर का 'सूरसागर' तालाब भी एक ऐतिहासिक तालाब है, और इसके निर्माण के पीछे अनेक दन्तकथाएं प्रचलित है। फिर भी इसका निर्माण जन-हितार्थ ही हुआ था इसमे सन्देह नहीं। जब किसी को आत्महत्या के लिए कहना होता है, तो कह देते हैं कि 'थो सूरसागर रो गेलो पड्यो है।'

(३) उदरामसर रा धोरा रात रा सोरा।

बीकानेर से दक्षिण की ओर स्थित उदयरामसर गांव अपने धोरो (रेत के टीलों) के लिए भारत प्रसिद्ध गाव हैं। चलचित्रो म भी धोरों की शूटिंग के लिए यहां आना पड़ता है। ये धोरे गर्मी की रात मे जल्द ही ठंडे हो जाते हैं, जब चारों ओर गर्मी होती है तो उस समय इन धोरों पर बैठना, चलना बड़ा ही सुखद लगता है। अत 'उदरामसर रा धोरा रात रा सोरा' कहावत प्रचलित हो गई।

१ बीकानेरी कहावतें और समाज —

ऐतिहासिक कहावतो की अपेक्षा सामाजिक कहावतें अधिक उपलब्ध हैं। चूंकि समाज लोक-जीवन का एक अनिवार्य अंग है, और कहावतें भी लोक-जीवन में उद्भूत हुई अनुभवोक्तियां हैं। अत एक दृष्टि से देखा जाये तो सभी कहावतें सामाजिक होती है क्योंकि समाज जिस तथ्य को स्वीकार करता है, वही कहावत के रूप मे प्रचलित हो पाता है।

किसी भी प्रदेश व क्षेत्र के सामाजिक जीवन का परिचय प्राप्त करने के लिये उस क्षेत्र की कहावतो का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। कहावतें अपने आप में जाति विशेष और समाज विशेष के उत्थान-पतन, टूटन-मिलन, आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, रीति-नीति, शादी-विवाह, उत्सव-त्योहार आदि के सदेश छुपाये रखती हैं। नारी और उसकी दशा भी कहावतो को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकती। समाज के व्यक्ति-व्यक्ति का प्रतिबिम्ब कहावती-दर्पण मे स्पष्ट झलकता है।

व्यक्ति विशेष अथवा व्यक्ति से समाज, या समष्टि का निर्माण होता है।

शिक्षा-दीक्षा, वशानुगत प्रभाव तथा वातावरण से व्यक्तिगत सस्कारो का निर्माण होता है उसी प्रकार से विशिष्ट प्रकार की जीवन-पद्धति पर चलने के कारण जाति के सस्कार निर्मित होते हैं।

जातियो के काम-धन्धे और औद्योगिक दृष्टिया उन्हे आर्थिक स्तर प्रदान करते हैं, तो प्रशासनिक और राज्य के कार्यों मे अपने अधिकारो तथा कर्त्तव्यो के प्रति सजगता प्रदान करने वाली शक्ति राजनीतिक चेतना। आर्थिक और राजनीतिक चेतना समाज के आधार भूत तत्व है।

सामाजिक कहावतो का अध्ययन जाति और नारी विषयक आधारों पर किया जा सकता है।

(अ) जाति सम्बन्धी कहावतें

(क) वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत जातिया —

ब्राह्मण — बीकानेर क्षेत्र मे ब्राह्मणो की जन सख्या बहुत है। समाज मे एक लम्बे समय से इनका आधिपत्य-सा रहा है। अत अपने अधिकारों का अनुचित लाभ इन्होने उठाया। कहावतो मे इनकी पेटू और लोभी प्रवृति का ही चित्रण मिलता है।

(१) बामण रै हाथ सोने रो कचोलो — अर्थात् ब्राह्मण के हाथ में सोने का पात्र है। उसे कमाने की कोई आवश्यकता नही है। जहाँ एक ओर ब्राह्मण के माँग कर खाने की मनोवृत्ति मिलती है, वहा दूसरी ओर 'बामण भरडा खावै घणा करडा' कहकर उनके पेटूपन का भी प्रतिपादन किया गया है।

(२) बामण नै बामण मिल्यो पूरब जनम रा सस्कार।
देवण लेवण नै कुछ नही बस नमस्कार ही नमस्कार ॥

अर्थात् ब्राह्मण कभी अपनी जाति की उन्नति और भलाई नही चाहता क्योंकि उसकी कमाई में घाटा आने की सम्भावना रहती है। अत ब्राह्मण मे जब ब्राह्मण मिलता है तो केवल औपचारिकता के लिये नमस्कार ही होकर रह जाती है। ब्राह्मणो की इस दूषित मनोवृत्ति के साथ उसकी तुलना अकाल से करते हुवे बुरा करने का एकमात्र जिम्मेवार भी उसे ही ठहराया गया है।[1] कालान्तर मे लोगो म ब्राह्मणों के प्रति कटुता इतनी बढ गई कि 'मर्‌या-मर्‌या बामण रै नाम' अर्थात् प्रत्येक बुरे कार्य का दोष ब्राह्मणो क मत्थे थोपा जाने लगा।

(३) बामण नाई कुत्तरा तीनों जात कुजात —अर्थात ब्राह्मण नाई और

१ काल बागड सूं निपजै, बुरो बामण सूं होय।

कुत्ते तीनो ही कुजात होते हैं । ये तीनो ही अपनी जाती को पसन्द नही करते । इसलिये इनके साथ बनिये को भी सम्मिलित करते हुए इन्हें जातिद्रोही बताया गया है ।[1] न केवल कुत्ते और बनिये ही ब्राह्मणो की तरह जाति-बिगाड होते हैं बल्कि, 'बामण कुत्ते हाथी, नही जात के साथी' की उक्तिया भी सुनने को मिलती हैं ।

ब्राह्मणो की माग मनोवृत्ति पर, जहा कहावतो द्वारा कटाक्ष किया गया है, वहा उसके लालची और लोभी होने का स्पष्ट सकेत भी 'बीद मरै चाहे बीनणी' बामण रा टका त्यार' तथा 'ओम नाम सोम नाम घरघटा, त्या जज-मान म्हारा चार टका' जैसी उक्तियो द्वारा किया गया है ।

ब्राह्मणो के भ्रष्ट और गलत कार्य को देखकर उसके गलत कार्य न करने का किसी ने उपदेश भी दिया है ।[2] फिर भी वह अपने कार्यों से बाज नही आता । ब्राह्मणो ने पोंगापथी इतनी फैलादी कि यजमानो के यहा प्रसाद पाना वे अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य समझने लगे । कटाक्ष रूप मे 'बामण रो मन सीरै मे' के द्वारा इस ओर सकेत किया गया है ।

उपर्युक्त कहावतो म ब्राह्मणो का केवल कृष्णपक्ष ही उजागर हुआ है, मगर उनके विषय म शुक्लपक्षीय कहावतें भी प्रचलित हैं । उदाहरणार्थ —

(१) बामण कह छूटै, बलद वह छूटै —अर्थात् ब्राह्मण स्पष्ट बात कह देता है, तथा बैल कमजोर होने पर भी चल पडता है ।

(२) बामण री बेटी नै मास को काई ठा —अर्थात् ब्राह्मण की बेटी को मास के स्वाद का क्या पता । इस कहावत से ब्राह्मण समुदाय का शाकाहारी होना सिद्ध होता है ।

(३) भोलो बामण भैड खाई, ओजूं खातो राम दुहाई —अर्थात् अन-जाने म ब्राह्मण ने भेड का भक्षण कर लिया, किन्तु भविष्य मे नही करने की सौगध खाली । इस लोकोक्ति मे ब्राह्मणो की मासूमियत और अनभिज्ञता प्रति-पादित हुई है ।

इस प्रकार ब्राह्मणो की मनोवृत्ति, उनके उत्थान पतन और विचारो की विकृतियो का सुन्दर और स्पष्ट रूप इन कहावतो मे मिलता है ।

---

१ बामण कुत्ता वाणिया, जात देख गुर्राय ।

२. बामणियां रै बामणिया, तूं क्यूं अतरमावै कामणिया ?

(२) राजपूत

बीकानेर-स्थापना काल से ही इस क्षेत्र मे राजपूतों की बहुलता रही है। राजपूत जाति वशानुगत सस्कारों तथा मनोवृत्ति से वीर होती है। देश और मातृभूमि की रक्षार्थ वे नित्य ही न्योछावर होते आये हैं। राजपूत और पृथ्वी एकाकार रहेगे। इन सब बातो का सकेत कहावतो मे मिलता है।

(१) राजपूत री जात जमी —अर्थात् राजपूत की जाति ही पृथ्वी है। मातृभूमि की रक्षा ही उसका प्रथम धर्म है। राजपूत मे वीरत्व एव शौर्य की मात्रा इतनी अधिक रहती है कि वह अपने छोटे से अपमान को भी सहन नहीं कर सकता, तभी तो "राजपूत र नाहर नै रैंकारै री गाल" जैसी कहावत मिलती है।

(२) राजपूत री सदा सुहागण —अर्थात् राजपूत की पत्नी सदा सुहागिन ही रहती है। राजपूतिनी कभी वैधव्यधारण नही करती, क्योकि राजपूत के जीते जी तो वह सुहागिन होती ही है, और रण-क्षेत्र मे क्षात्र-धर्म का पालन करते हुए खेत रहने पर भी वह राजपूत चिर अमर हो जाता है। इसी कारण क्षत्राणी का सुहाग भी अक्षुण्ण रहता है।

कालान्तर मे राजपूतो ने अपना क्षात्र-धर्म त्याग दिया तथा अनेक बुराइयो और दुष्ट प्रवृत्तियो की ओर अग्रसर हो गये। राजपूती शौर्य और आन बान पता नही कहा लुप्त हो गये ? इसलिए —

(१) राजपूती धोरा में रलगी उपर फिरगी रेत।
(२) ठाकर गया ठग रह्या, रहया मुलकरा चोर।
(३) रजपूती रही नही, पूगी समन्दा पार।

(४) ठाकरां रै घरै बकरिये रो न्याव। अर्थात् राजपूती धर्म तो धोरो मे धस गया, तथा ऊपर धूल फिर गई है। राजपूती मिट्टी में मिल जाने के कारण ठाकुर समाप्त हो गये, और मात्र देश के चोर और ठग रह गये हैं। अगर कोई क्षत्रीयत्व को ढूंढना चाहे तो भी नहीं ढूंढ सकता, क्योकि वह तो समुन्द्रो के पार चली गई है। अब ठाकुरों के यहा वह न्याय की भावना नहीं, बल्कि वे तो घर आई चीज को खाने का प्रयास करते हैं—जैसी कहावतें प्रचलित हो गई।

जो जाति कभी युद्ध भूमि का कीडा मानी जाती थी, कालान्तर में गुस्सो और आलस्य की प्रतीक बन गई। अत "ठाकरा रै छ महिनां तो मदेडा ही पड़या रवै" अर्थात् ठाकुरों के यहां मरे ऊट को भी छ महिने तक नहीं उतारे।

राजपूत जाति केवल वीर रही है। उसमें चालाकी तिल भर भी नहीं। रावले में कौन क्या कर रहा है, किसी को कोई पता नहीं, सब अपने-अपने में मस्त है।[1] कालान्तर में राजपूतों में कुछ चेतना जागृत हुई और मस्ती को छोड़कर सामान्य दुनियां में आ गये।[2] वैसे राजपूती करना आसान नहीं है। 'ठगाया ठाकर बाजे' अर्थात् अपने पास से कुछ खर्चा करने पर ही ठाकुर की उपाधि मिलती है। वैसे मेहनती व्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है—'चाकर नै ठाकर घणां' अर्थात् मेहनती और परिश्रमी व्यक्ति को आश्रय देने वालों की कमी नहीं है।

(५) ठाकर ठर्रा में घर फर्रा में:—अर्थात् ठाकुर शराब पीने में रहे और उनके घर गप्पों में उजड़ गये। राजपूतों के दुर्गुणों तथा व्यसनों पर उपर्युक्त लोकोक्ति द्वारा कटु कटाक्ष होता है।

इस प्रकार बीकानेरी कहावतों में राजपूती वीर-भावना, देश-प्रेम, व्यसन और दुर्गुणों की स्पष्ट झलक देखी जा सकती है।

(३) बनिया

बीकानेरी कहावतों में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राजस्थानी की जाति सम्बंधी कहावतों में बनिये को प्रमुख स्थान मिला हुआ है। चूंकि बनिया एक व्यापार प्रधान जाति है, जीवन की हर आवश्यक वस्तु को प्राप्त करने के लिये जनसाधारण का उसके साथ सम्पर्क स्थापित करना अत्यावश्यक है। इसलिये उसके आचार-विचार और व्यवहार का प्रभाव प्रत्येक जाति पर पड़ता है। अतः उनकी जातिगत विशिष्टताएं और निकृष्टताएं दोनों ही व्यापक रूप से कहावतों का आधार बनी हैं। यथा—

(१) बाणियो या तो खाट मे दे या घाट मे दे:—बनिया संस्कार टाही ही कृपण होता है। उससे धन या अन्य कोई वस्तु प्राप्त करना आसान कार्य नहीं है, वह या तो खाट में देता है, अर्थात् बीमार पड़ने पर वैद्य और डाक्टरों को खूब ठगाता है; या फिर किसी संकट में पड़ने पर देता है।

(२) बाणिया मतलब रा यार, काम पड़े जद करले प्यार—अर्थात् बनियां बड़ा ही स्वार्थी और मतलबी होता है। काम पड़ने पर ही वह स्नेह और प्यार की बातें करता है। उसके सामने अपना स्वार्थ और मतलब ही होता है।

---

१. रावला सो बावला
२. रावलै मे इसी पोलकायनी, क दो वर जीमलै।
रावला—अन्त पुर

इस हेतु चाहे उसे किसी के पाव भी क्यो न पकडने पडे ।[1]

(३) वाणियो मीत न वेस्या सती,
कागो हस न गधो जती । अर्थात् बनिया मित्र नहीं हो सकता, वेश्या से सतीत्व, कौवे से हसत्व और गधे से यतीत्व की आशा करना भी निरर्थक है । ये सब अपनी अपनी मनोवृत्तियो के वशीभूत होते हैं। बनिये की मित्रता केवल स्वार्थ तक ही सीमित रहती है ।[2]

(४) वडो पकोडो वाणियो ताता लीजे तोड[3] — अर्थात् बडे पकौडे और बनिये को गर्म-गर्म ही तोड लेना चाहिये । तात्पर्य यह है कि बनिये से तुरन्त कार्य ले लेना चाहिये ।

(५) विणज करैला वाणिया, और करैला रीस — अर्थात् बनिया ही व्यापार कर सकता है, दूसरा तो मात्र गुस्सा करके रह जायेगा । व्यापार बनिये की रग-रग मे समाया हुआ है । प्रत्येक व्यापारी के लिये भी बनिया शब्द रूढ हो गया है ।[4]

बनिया पैसे का बडा लोभी होता है। पैसा कमाना ही उसका ध्येय रहता है । व्याज के लेन–देन मे वह अपनी बेटी का भी लिहाज नही रखता ।[5] बनिया तो व्याज को अपना बाप मानकर यधा करता है ।[6]

(६) लावै लाग्यो वाणियो, चू टी लागी गाय[7] — अर्थात् पैसे कमाने के लोभ मे लगा बनिया, और हरा घास चरती हुई गाय आगे ही बढते चले जाते

---

१. वाणिया मतलब रा मोटा, काम पडै जद झालै गोडा ।
२ वाणिये री यारी स्वारथ री क्यारी।
३ वडो पकोडो वाणियो कास और कसार
ताता ही नै तोडिये, ठडा करै विकार ।
४. वाणिये रो बेटो ।
५ वाणियो व्याज म बेटी सू को टलेनी ।
६ वाणियो व्याज रो बेटो ।
७ लावै लाग्यो वाणियो, चू टी लागी गाय ।
बावडै तो बावडै, नही तो आगे ही जाय ।।

पाठान्तर— विणज लाग्यो वाणियो' पाठान्तर— 'होली–होली लू कडो, अडके मतीरा खाय' ।

हैं। कहा भी है 'वणी बनावै सो बाणियो।' बनिया व्यापार मे इतना कमाता है कि उसकी कमाई का कोई लेखा जोखा नही रहता।[1]

(७) गाव बसायो बाणियो, पार पड्ज्या जद जाणियो — अर्थात् बनियें ने गाव बसाया है, और यह जब सफल हो जाय तब को आशा। बनिये का वशपरम्परित कार्य व्यापार करना है, गाव और देश का जीतना और उन्हे बसाना क्षत्रियो का कार्य है। अत अपने कार्य से हटकर दूसरा कार्य करने मे सफलता सदिग्ध रहती है।

(८) जाण मारै बाणियो पिछाण मारै चोर — अर्थात बनिया जानकार को अधिक ठगता है और चोरी भेद से होती है।

(६) लिखै बाणियो पढै करतार — बनिये की लिखावट ईश्वर ही पढ सकता है।

बनिया अपने व्यापार म चातुर्य के लिये जितना प्रसिद्ध है, उतना ही अपनी भीरुता और कायरता क लिये भी जग प्रसिद्ध है।

उदाहरणार्थ —

(१) खड्यो बाणियो पडै समान पड्यो बाणियो मरे समान—अर्थात् बनिया इतना डरपोक और हिम्मतहीन व्यक्ति है कि वह खडा हुआ भी पडे हुए के समान रहता है और पडा हुआ तो मरे हुए के समान ही हो जाता है। इसी तरह चौरासी बनिये चार चोरो के सामने वेचारे अकेले ही रहते हैं।[2]

बनिया दुकान और गद्दी पर बैठा रहता है इसलिए उसके शरीर मे चर्बी की मात्रा बढ जाती है। अत आम बनिये की पहचान के लिये उसका मोटा पेट काम म आता है।[3]

उपर्युक्त कहावतो म यद्यपि बनिये की स्वार्थपरता, भीरुता तथा उसके संस्कार और वशानुगत विशेषताओ का चित्रण हुआ है फिर भी नामी बनिया कभी भूखा नही रहता' और आसानी से कमा सकता है।[4]

---

१ बाणियो र वेस्या री कमाई रो काई लेखो ?
२ च्यार चोर चोरासी बाणीया काँई करै बिचारा एकला बाणिया।
३ सेठ रै सेठ, तेरो बाठडो सो पेट।
४ नामी बाणियो कमा' खाय'र नामो चोर मार्यो जाय।

(४) जाट :—

जाट बीकानेर की प्रमुख जाति है। इस जाति का ऐतिहासिक महत्व है। राव बीकाजी ने अपनी राजधानी के निर्माणार्थ जिस भूमि को पसन्द किया था, उसका स्वामी एक जाट ही था। जाटों के लम्बे काल के उत्थान-पतन, उनकी जीवन-पद्धति और जाति-वैशिष्ट्य का प्रतिपादन महावतों में हुआ है। यद्यपि बनियों आदि की तुलना में जाटों को 'विद्रुप्रम बुद्धि' कहा गया है, फिर भी उनका अपना महत्व है।

(१) जाट रैं जाट सोना दूणी घाठ :— अर्थात् जाट के लिए सोनह के दुगने आठ होने हैं। जाटों को निर्बुद्धि माना गया है, इसलिए उनके लिए शुद्ध हिसाब-किताब करना कठिन था। जाट किसी कार्य को उल्टे ढंग से करने के लिये प्रसिद्ध है। जाट की अज्ञानता को दूर करने के लिए उसकी गुद्दी में मारा जाना आवश्यक माना गया है।[1]

(२) जाट जवाई भाणजो रैबारी सुनार
कदै न होसी आपणा, कर देखो ब्योहार।

अर्थात् जाट, दामाद, भानजा तथा रैबारी और सुनार कभी अपने विश्वासी और आत्मीय नहीं हो सकते, चाहे कभी भी उनके साथ व्यवहार करके देख लो।

(३) जाट री यारी, तुम्बै री तरकारी।
कितोई मीठो घालो, रैसी खारी की खारी।[2]

अर्थात् जाट की दोस्ती और तुम्बे की सब्जी कभी मीठी नहीं हो सकती चाहे उनमें कितना ही मीठा डाल दिया जाय। तात्पर्य यही है कि जाट कभी किसी का सच्चा मित्र नहीं हो सकता। इसीलिए एक कहावत और प्रचलित है कि 'जाट न जाणै गुण किया, चिणा न जाणै बाह' अर्थात् जाट गुण

---

१. जाट री बुद्धि गुद्दी में।

२. तुम्बा—एक जंगली फल जो आकार में छोटे मतीरे की तरह होता है। यह खारा बहुत होता है परन्तु इसे स्वाद से खाते हैं और वायु विकार के लिए वैद्य इससे बहुत सी दवाइयें बनाते हैं।

किया हुआ नही जानता, और चना बाह को नही मानता ।

(४) जाटणी रा चूंग्योडा – अर्थात् जाटणी का स्तन-पान किया हुआ । अपनी श्रेष्ठता जताने के लिए अक्सर इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है, साथ ही साथ जाटणी का पुत्र होने से भी नकारा जाता है ।[1]

(५) जाट जेली दातली, देवै काम लाकडी हायली[2] — अर्थात् जाट जेली और दातली के पीछे लकडी लगाने से ही काम देते हैं । जहां जाट को रहीम के, "छेद में डंडा डारिके" वाली कहावत के अनुसार लकडी के बल पर काबू करने का उल्लेख है, वहा वर्षा ऋतु के बाद जगल मे हरियाली छा जाती है, खेत मे फसल तैयार हो जाती है, तब भी जाट को काबू किया जा सकता है ।[3]

जाट अपनी फसल को बेचने बाजार मे आता है, किंतु तीन बीसी वाला ही हिसाब जानने के कारण ठगा कर चला आता है ।[4] वैसे जाट अपनी मसखरी के लिए प्रसिद्ध है ।

(६) जाट हाली गदगदी — अर्थात् जाट वाली गुदगुदी । किसी गलत ढग से कार्य करने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

उपर्युक्त कहावतो मे जाटो की अल्पज्ञता, अज्ञानता और उनकी अयोग्यताओ का चित्रण हुआ है, किंतु जाट मे अच्छी वृतिया भी मिलती हैं । उदाहरणार्थ :—

(१) जाट कहै जाटणी, ईं गाव में रहणू
ऊट बिलाई लेगी, आई बात कहणू – अर्थात् जाट अपनी पत्नी से कहता है कि अगर इस नगर मे रहना है, तो ऊट को बिल्ली ले गई जैसी बात भी कहनी पडेगी । इस कहावत मे किसी शासन की अधेर गर्दी और जी हुजूरी का स्पष्ट निर्देश हुआ है ।

१— जाटणी रा जाया कायनी ।

२— जेली — लाठी के एक सिरे पर लकडी के दो नुकीले सींग लगा कर बनाया जाने वाला यत्र । दातलो — हंसिया

३— बेलडिया बन छाया, जाट बस आया ।

४— सीतर मीतर ह् जाणू कायनी, लेसू पूरी तीन बीसी ।

जाट अपने मसखरे पन के लिए भी विख्यात है । एक बार एक जाट बैठा था । इतने मे कब्र को खोद कर एक जानवर मुर्दे को निकाल कर चला। एक मुसलमान ने देख कर कहा "यह तो फरिश्ता है जो मुर्दे को लेने को आया है।" चौधरी ने जवाब दिया "मियाँजी तू तो कहे फरिश्ता, हूँ कहूँ जरख,[1] अर्थात जिसे तुम फरिश्ता कह रहे हो, उसे हम तो जरख कहते हैं।

इसी प्रकार एक चौधरी घर के सामने बैठा हुआ हुक्का गुडगुडा रहा था। एक ढोली चौधरी को खुश कर कुछ लेने की गर्ज से उसके पास आया और प्रशंसा करने लगा। चौधरी भी 'सेर को सवा सेर' था। उनके संवादो में हास्य की सुन्दर सृष्टि हुई है। यथा —

'चौधरी ! दरूजो तो आछो है।'' "फोड दे।"

"चौधरी ! भैंस तो आछी।" "मार दे।"

'चौधरी ! चोधरण तो फूटरी" "भगा ले ज्या।" — बेचारा डूम अपना सा मुंह लेकर चलता बना।

उपर्युक्त कहावतो के अलावा -

(१) जाट री बेटी काकोजी री सूं।[2]

(२) जाट रै जाट तेरे सिर पर खाट।[3]

(३) जठै जाठ बठै ठाठ।

अर्थात् जाट की पुत्री 'काकाजी' की सौगन्ध लेती है। जाटो मे 'बाबा' 'काका' आदि सम्बोधन शब्द मिलते हैं। सम्मानार्थक 'जी' का प्रयोग उनमें प्रच लित नही है। जाट को चिढाने के लिए किसी ने कहा है- जाट के सर पर तो सदा खाट रहती है। इतना होते हुए भी जाट जहा रहते हैं वही ठाठ होता है।

उपर्युक्त कहावतों के साथ-साथ आजकल एक और कहावत बीकानेर क्षेत्र मे 'जाटणी रा जाया सै नेता' भी सुनाई पडती है। जाटो के राजनीति मे

१— बोली बोली आतरो,
थोंली बोली फरक,
तू कहे फरेस्ता, हूँ कहू जरख।

२— मिलाइये - देसी टोरडो पूर्वी चाल।

३— जाट रै जाट तेरै, सिर पर खाट।
मल म गुदडिया, यू म हाथ॥

अधिक सक्रिय होने के कारण उक्त लोकोक्ति का निर्माण हुआ है।

(ख) अन्य जातियाँ –

(१) गोला

गोला या दरोगा गुलाम प्रथा के प्रतीक हैं। राजस्थान में राजतन्त्र एवं सामन्तशाही के समय इनका अधिक बोलबाला था। बीकानेर राज्य एक राजपूत राज्य रहा है। यहां पर गोला गुलाम प्रथा अपने भयकरतम रूप मे प्रचलित थी। देश के एकीकरण के समय तक यह बुराई समाज मे व्याप्त थी। इनको गोले, दरोगे, वजीर, ख्वासवाल, चेला, चाकर आदि नामो से पुकारा जाता है। इनकी पत्नियो को भी गोली, दरोगी दायजवाल, चाकर, डावडी, पासवान, ब्याहण, दासी बादी और मागस आदि नामो से पुकारा जाता है।

गोलो के सम्बन्ध मे प्रचलित कहावतो से उनकी कृतघ्नता, आलस्य, निकम्मापन तथा नखटापन ही झलकता है। उदाहरणार्थ -

(१) गोला किण सू गुण करै, ओगण गारा आप,
माता जिणरी खावली, सोना जिणरा बाप।

अर्थात् गोले किसी का भला नही कर सकते जिनकी माता तो व्यावली (पुश्चली) होती है, सोलह जिनके बाप होते हैं, ऐसे गोले अवगुणो की खान होते हैं।

(२) चूंकि गोला को एकदम निकम्मे और बेकार माना गया है, इसलिए किसी घर म सैकडो गोले रहते हो किन्तु वह सूना ही होता है।[1] अर्थात् वे कोई भी मर्दों वाला कार्य नहीं कर सकते।

गोले आसानी से काम करने वाले नही हैं। अत 'गोले को गुरू ठोलो" या "गोले के सिर ठोलो" जैसी कहावतें प्रचलित है। जहा निकम्मे और नीच प्रवृति के लोग रहते हो, उनके लिए भी "गोला गुदडी" लोकोक्ति का प्रयोग होता है। किन्ही अकर्मण्य व्यक्तियो के द्वारा घर में गडबड हो जाने के कारण — "गोलां घर भेल दियो", जैसी लोकोक्ति सुनी जा सकती है।

इन सब के अलावा "घी खायो गोलां" ,जैसी प्रसिद्ध ऐतिहासिक कहा

१— सौ गोला घर सुनो।
या सौ गोला, डेरो सूना। या घणा गोला कोटडी सूनी।

वतें भी प्रचलित हैं, जिनका वर्णन ऐतिहासिक घटनात्मक कहावतो के अन्तर्गत किया गया है।

(२) सासी :—

सासी जरायम पेशा जाति मानी जाती है। यह मागने में बड़े सिद्ध हस्त होते हैं। इनके विषय मे भी बीकानेरी कहावतो मे अनेक कहावतें उपलब्ध हैं।

सासिया रो डेरो।[1]

अर्थात घर मे वस्तुओ की अस्तव्यस्त दशा मे होना। घर की गन्दगी और अव्यवस्थता के कारण उसे सासियो के निवास स्थान की सज्ञा दे दी जाती है।

सासण को चाहे कितने ही अच्छे प्रकार का भोजन खिलाया जावे किंतु उसकी मागने की मनोवृत्ति कभी नही जाती।[2] इस सम्बन्ध मे एक कथा है— एक राजा ने एक सुन्दरी सांसण से विवाह कर लिया। सासण महल में आ गई किन्तु उसका मन भोजन पर नही रमा। अत रोटी के टुकडे महल के विभिन्न आलो मे छोड देती है, और उनके सूखने पर आलो के साथ मागने की प्रक्रिया सम्पन्न कर अपनी मनोवृत्ति की तुष्टि कर लेती थी। अत उपर्युक्त कहावत मे इसी का प्रतिपादन हुआ है।

'सासी लडै पैली, खावै पछै' अर्थात् सासी पहले लडते हैं, और फिर खाते हैं। सासियो के यहा किसी विवाह शादी या मृत्यु भोज पर मिठाई आदि बनाते हैं। विभिन्न कबीले न्योते जाते हैं। वे आते हैं और दो तीन दिन आपस मे लडते है फिर खाना खाते हैं। अत उपर्युक्त कहावत म सासी मनोवृति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

(३) भगी —

भगी या मेहतर आज के सामाजिक जीवन का एक आवश्यक अग है। उनके बिना जीवन पगु बन कर रह जाता है। अत भगियो को आदर देने के लिये 'जमादारजी' भी कहा जाता।

१ पाठान्तर—सासिया रो सागो॥
२ सांसण रै मागणी रो मनस्या।

बीकानेर क्षेत्र में भंगी अपने यजमानों को 'माई'-बाप' कहकर सम्बोधित करते हैं। अतः अपनी मधुरी भाषा में "माई'-बाप थारा घर रा भंगी म्हानै भी कुछ दिलाम्रो" अर्थात् आपके घर वाले भंगी हैं, हमें भी कुछ दान वगैरहा दिलाओ। यद्यपि ये कहना चाहते हैं कि हम भी आपके घर के भंगी हैं। हास्य रूप में उपर्युक्त कहावत काफी प्रचलित है।

भगण को भी आदर देने के लिये 'मेहतरानी'[1] की संज्ञा प्रदान की गई है।

(४) ढोली

ढोली बीकानेर की इतिहास-प्रसिद्ध जाति है। राजपूत और ढोलियों का सम्बंध अनंतकाल से चला आ रहा है। राजपूतों की बड़ाई करना और उनसे पुरस्कार प्राप्त करके अपनी जीविकोपार्जन करना ही इनका प्रमुख धंधा था। अपने यजमानों की बड़ाई में गीत गाते समय ये ढोलक भी बजाते हैं, अतः इनका नाम ढोली पड़ा। ढोली आलस्यवृति और घुमक्कड़पन के कारण प्रसिद्ध हैं।

(१) ढोलण के रोणे में ही राग:—अर्थात् ढोलण रोती भी रागरागनी के साथ है। ढोली और ढोलण किसी बात को कहने के लिए गेय पद्धति का प्रयोग करते थे। अतः उक्त कहावत प्रचलित हो गई।

(२) ढोली हाल्यो सी।[2] यह माना जाता है कि ढोली को सर्दी अधिक लगती है।

(३) डूम हाल्यो डेर।[3] अर्थात् डूमों का सा निवास स्थान। डूमों का कोई स्थायी निवास स्थान नहीं होता। रोटी-रोजी की खोज में एक त्यौहार वे कहीं और दूसरा त्यौहार वे कहीं और मनाते हैं।[4] चूंकि ढोलियों के कोई रहने का

१. रानियां में राणी मेहतराणी,
नोट:—पटरानी, महारानी, देवरानी तथा मेहतरानी—ये चार प्रकार की रानी मानी गई हैं।

२. सीगाला सी ऊतरै आधो जातां माह
तुरियां फागण ऊतरै, नरबांदर बैसाख,
डूमां कदे न उतरै तिथियां बारै मास

३. पाठा०—डूम हाल्यो सांगो।

४. डूम जाणै कठै जातो दियाली करसो।

स्थान और घर निश्चित नही हैं, अतः "डूमणी किसा घर बसाया हा,"—कहावत प्रचलित हो गई है।

डूम स्वभाव से ही कायर होता है। लड़ाई झगडे में तलवार और ढाल तथा अन्य योद्धिक शस्त्रों का नाम लेना भी उसके लिए संभव नही हैं, अतः विपक्षी को 'धोचो' और तिनको से ही परास्त करने का प्रयास करता है।[1]

(४) सुतो बैठी डूमणी घर मे घोडो घाल्यो:—अर्थात् आराम से घर मे रहने वाली डूमणी अपने घर में घोडा ले आई। डूम स्वभाव से ही आलसी और कामचोर होते हैं, किन्तु किसी सरदार ने प्रसन्न होकर घोडा पुरस्कार में दे दिया। मगर उसकी सेवा करना उसके लिये टेढी खीर थी। अतः किसी कार्य को जान-बूझकर अपने पर लेने पर यह कहावत कही जाती। ढोलियों की कमाई का साधन केवल मांगना ही है। उनके आग्रह करने पर रद्दी-सद्दी चीज उन्हे दे दी जाती है। जो 'उतरियो गांव डूम नै दियो'[2]-लोकोक्ति में प्रतिपादित होता।

कोई डोम को देना भी चाहे तो घर की बडी बुढ्ढी अपने अनुभवों के प्रदर्शन के साथ देने से मना कर देती हैं।[3] देना लेना अवसर का ही होता है। ठीक अवसर पर न पहुच पाने पर डूमणी दान लेने के लिये विभिन्न राग-रागनिया और बधाई के गीत गाती हैं।[4]

(५) धोबी

धोबी इतिहास-प्रसिद्ध जाति है। लोककथाओ तथा लोक-वार्ताओ में धोबी को अत्यत ही निकृष्ट कोटि की जाति बताई गई है। बीकानेर क्षेत्र में धोबी हिन्दू और मुसलमान दोनो ही धर्म को मानने वाले हैं।

(१) धोबी कै लाग्या चोर, डूब्या और ही और।

अर्थात् धोबी के घर चोरी होने से दूसरो को ही हानि होती है, क्योंकि उसके घर में दूसरो के ही वस्त्र रखे हुए होते हैं। अतः किसी के पास कोई अमानती हो और कोई दूसरा उसे ले जाय, या नष्ट कर दे तो उक्त लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता।

---

१. तेरी जाड मे धोचो तोडूं।

२. मिलाइये—बुढ्ढी गाय बामण नै दीजे।
पूरा नही तो, आधा लीजे॥

३. डूम आगे डोकरो, गाय आगे भैंस

४. मोगर चूकी डूमणी, गावै ताल बेताल।

घरो मे जब बहुत सारे कपडे इकट्ठे हो जाते हैं और उनको धोने के लिये किसी स्थान पर डाल दिये जाते हैं, तो कहते हैं कि "धोबी घाट लगाएँ री सोच राखी है।"

आज कल खेल-तमाशा दिखाने वाले भी "बारामण री धोवण" नाम से एक मोटी स्त्री की तस्वीर दिखाते हैं, इसीलिए किसी मोटी स्त्री के लिए "बारा-मण री धोवण" प्रचलित हो गया।

इनके साथ ही साथ "धोबी रो छोरो पराई छैलाई करै" के द्वारा भी उन लोगों के बारे मे अभिव्यक्ति करते हैं जो दूसरों के माल पर गुलछर्रे उडाते हैं।

(६) तेली - तेली हमारे समाज का एक अभिन्न अग है। तेल के बिना घरो मे भोज्य पदार्थ अधूरे से लगते हैं। तेल को भोज्य पदार्थों से उठा कर मनुष्य जीवन के आवश्यक तत्व के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए शक्ति और हिम्मत का प्रतीक बना दिया है। अत 'तेल ही कोनी' आदि कहावतें प्रचलित हो गई है। तेल के कारण ही तेली कहावतो का आधार बन गया है। बीकानेरी कहावतो म भी तेली अपने तेल और बैल के साथ प्रतिष्ठित है। यथा —

(१) कठै राजा भोज कठै गगू तेलो।

अर्थात् कहा राजा भोज और कहा गगू तेली। किन्ही दो असमानो की तुलनात्मक अभिव्यक्ति के लिए इस कहावत का आश्रय लिया जाता है। राजा भोज और गगू तेली मे ऐतिहासिकता कहा तक है यह अपने आप में एक शोध का विषय है।

(२) घरै घाणी तेली लूखा क्यू खावै ?

अर्थात् तेली के घर मे घाणी है, फिर भी रूखी रोटी क्यो खाता है ? तेली बेचारा दिन भर कोल्हू चलाता है, इसलिए तेल के ससर्ग मे रहने के कारण कपडे तेल से भीग जाते हैं, और काले हो जाते हैं। काले और चिकने कपडे वाले को निस्सकोच तेली की सज्ञा दे दी जाती है।[1]

(३) तेली रो बलद सौ सौ कोस चालै, पण वठै रो वठै।

अर्थात् तेली का बैल दिन भर सैकडो कोस चल लेता है, किन्तु रहता वही का वहीं है।

१— डोन लिया तेली का सो।

बहुत से लोग ईर्ष्या वश किसी दूसरे द्वारा खर्च किया हुआ पैसा सहन नही कर सकते । वे नहीं चाहते कि कोई व्यक्ति भलाई का कार्य करे, अगर ऐसा होता है तो उसके बहुत जलन होती है ।[1]

तेली के बारे में विख्यात है कि वह किसी के साथ मित्रता का निर्वाह नही कर सकता,[2] और उसकी पत्नी के फेरे भी प्रसिद्ध है ।[3] तेली के कोल्हू से उतरी हुई खल बैलो के खाने योग्य हो जाती हैं ।[4]

(७) माली - बीकानेर क्षेत्र की माली जाति भी प्रसिद्ध है । यह जाति बाग और बाडी के लिए भी रूढ हो गई है । इनकी प्रतिष्ठा समाज मे सर्व मान्य और अच्छी नही कही जा सकती । इसलिए इनके कृष्णपक्ष को लेकर अथवा नीति सम्बन्धी कहावतें ही अधिकांश मिलती हैं । उदाहरणार्थ —

(१) माली'र मूला छिदा ही भला — अर्थात् माली और मूलिया छिदे ही होने चाहिये। ये दूर दूर रहे तब ही भला है ।

(२) बैठतो बाणियो उठतो मालण । अर्थात् बनिया दूकान खोलते समय सस्ता सौदा देता है, और मालिन उठते समय सस्ता सौदा देती है ।

(३) खेत मे हाली, बाग मे माली — अर्थात खेत में हल जोतने वाला और बाग मे माली शोभा पाते हैं ।

(४) माली सींचे सो घड़ा रुत आया फल होय ।[5] — अर्थात माली पेडों मे सौ घडे पानी भी एक दिन मे डाले तो भी बिना समय आये उनमें फल नही लग सकते । समय आने पर ही सारे कार्य होते हैं बिना समय कुछ नही ।

(५) मालण बीकानेर री —अर्थात बीकानेर की मालनें अपने सौंदर्य तथा

१— तेल तेली रो जलै, मसालची री गाड क्यू बलै ।
२— तेली कीरो बेली ।
३— तेलणरा फेरा ।
४— तली सू खल उतरी हुई बलदाँ जोग ।
५— धीरे धीरे रे मना, धीरे सबकुछ होय ।
माली सींचे सो घडा, रुत आया फल होय ॥ —रहीम
पाठान्तर—धीरै धीरै ठाकरा धीरै सब कुछ होय ।
माली सींचै बाग नै, रुत आया फल होय ॥

चातुर्य के कारण प्राचीन काल से प्रसिद्ध रही है।

(८) सुनार

सुनार या स्वर्णकार बीकानेर की एक प्रमुख जाति है। समाज में एक दस्तकार के रूप में इसकी प्रतिष्ठा है। यही कारण है कि बीकानेर के 'सोनों गहणों साह, वाह बीकाण वाह !' प्रसिद्ध है। गहना घड़ने वाला सुनार ही होता है। अतः इसकी प्रसिद्धि भी आवश्यक है। सुनार जहां अच्छे और माने हुए दस्तकार होते हैं, वहां मतलबी और चतुर भी बहुत होते हैं। सुनार विषयक कुछ कहावतें इस प्रकार हैं :—

सुनार सागण बेटी सूं भी को चूकैनीं :— सुनार के बारे में कहा जाता है कि वह जो भी आभूषण गढता है, उसमें से कुछ सोना निकाल कर खोट मिला देता है। ऐसे व्यवहार में वह अपनी पुत्री के साथ भी रियायत नहीं करता। इस प्रसंग में एक कहानी इस प्रकार है :—

एक सुनार जो वृद्ध था, आभूषण बनाने का कार्य अपने पुत्र को सौंपकर आप उसके पास बैठकर माला फेरा करता था। एक बार उसकी स्थानीय विवाहिता पुत्री कुछ सोना लेकर आभूषण गढ़वाने के लिये आई। अब बुढ्ढा सुनार सोचने लगा कि कहीं लड़का अपनी बहिन के साथ कोई रियायत न करदे। अगर ऐसा हुआ तो पेशे के ऊसूल की हत्या होगी। अतः वह जोर-जोर से बोलने लगा—"रावण राम री लुगाई चोर ली, रावण राम री लुगाई चोर ली"—इस प्रकार बोलने से उसका पुत्र भी, जो कि अत्यंत ही चालाक था, समझ गया। किन्तु वह तो अपना कार्य पहले ही कर चुका था। अतः पिता को संकेत देने के लिए कहने लगा—"हड़मान भी लंका लूंट ली, हड़मान भी लंका लूंट ली"—इस प्रकार वृद्ध भी उसकी बात समझ गया। तत्पश्चात ही उपयुंक्त कहावत प्रचलित हो गई।

उपयुंक्त कहावत के संदर्भ में ही कहते हैं कि सुनार अपनी मां तक के स्तन काट लेता है।[1] सौ चालाक औरतें मरती हैं, तब कहीं एक सुनार पैदा होता है[2] किंतु आभूषणों को गढ़ता वही है और स्त्रियां पहनती हैं।[3] अतः सारांश

१. सुनार मांरा हाल काट लेवै।
२. सौ नार एक सुनार।
३. घड़े सुनार पैरे नार।

मे बाजरे के साथ उसकी तुलना करते हुए कहा जा सकता है कि बाजरा कच्चा नहीं होता, और सुनार सच्चा नहीं होता।[1]

(६) नाई

बीकानेर क्षेत्र मे नाई जाति का अपना एक अनिवार्य महत्व है। जहा ब्राह्मण जाता है, वहा नाई अवश्य जायेगा, अर्थात् जिस घर में मांगलिक, शोक या अन्य सामाजिक उत्सव हेतु ब्राह्मण बुलाया जाता है, वहा नाई की पहली आवश्यकता रहती है। वैसे नाई उच्च वर्ग के लोगो की सेवा-चाकरी करता आया है। अतः उसका प्रवेश यजमान के अन्त.पुर तक रहता है। जिस प्रकार से कहा यती जगत मे अन्त पुर का विशेष महत्व है, उसी प्रकार यजमानी-जगत् में नाईयों का बडा महत्व है।

नाई अपनी चालाकी, कुटिलता तथा हाजिर जवाबी के लिए प्रसिद्ध है। अत॰ 'मिनखा मे नव्वा'र पारवा मे कव्वा' कहकर उसकी कुटिल चेष्टाओ का प्रतिपादन किया जाता है।

(१) नाई रै ब्याव मे, सैई ठाकर :— अर्थात् नाइयो की विवाह-शादि मे प्रत्येक व्यक्ति ठाकुर होता है। मतलब यह है कि सभी मुखिया बने फिरते हैं। वैसे भी नाई नै ठाकर कहै[2] भी प्रचलित है। नाई 'ठाकर' व 'मेनजी' कहलाने मे भी बडा गौरव अनुभव करता है।

(२) बीगडेडै बियाव मे नाई :— अर्थात् किसी के यहा विवाह मे कोई गडबड हो जाने पर नाई को इधर-उधर सदेश आदि देने के लिये घूमना पडता है। अत किसी व्यक्ति के उत्सव या घर मे इधर-उधर घूमने पर उक्त लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

(३) नाई दाई-वैद कसाई, इनका सूतक कदै न जाई :— अर्थात् नाई, वैद्य, दाई, कसाई आदि के सूतक बना ही रहता है। क्यो कि इनका कार्य अपवित्र कार्य कहलाता है।

(४) नाई अपने पेशे और मनोवृत्तियो से इतना कुटिल है कि उसे भेड के चमडे की तरह कूट-काटकर काम मे लिया जाता है। ढोलक और चगो मे भेड

१. बाजरी रो काई काचो, सुनार रो काई साचो।
२. जगतण नै भगतण कहे कहे चोर नै साह।
नाई नै ठाकर कहे, तीनू बात कुराह।

का चमड़ा ही लगाया जाता है, जो पीटने पर बजता है।[1]

नाई का समाज मे इतना महत्व है कि बच्चे-बच्चे उसके नाम से परिचित हैं। अत: खेल ही खेल मे कहते हैं :—

(५) नाइडा रॅ नाइडा तमलॅ बजाइडा, तमलॅ मे तोतो, नाई मेरो पोतो।[2] अर्थात् नाई तू तम्बिया बजाने वाला है, उस तम्बिये मे तोता रखा जाता है, और नाई मेरा पोता है।

इन कहावतो के अलावा नाई के विषय में निम्नलिखित कहावतें भी प्रचलित हैं —

(६) बीद, बीद रो भाई, तीजो बामण, चोथो नाई।
(७) निकम्मो नाई पाटला मूंडॅ।
(८) नाई बामण एक बात, दोनूं मागण खाणी जात।
(९) बिगडॅ काऊ का, सिखॅ नाऊ का।[3]

अर्थात् अत्यन्त ही छोटी बरात के लिये दुल्हा, दुल्हे का भाई और ब्राह्मण तथा नाई आवश्यक होते है। नाई और ब्राह्मण का साथ चिरकाल से चला आ रहा है, क्यो कि दोनो ही मागकर खाने वाली जातिया है। नाई का बेटा हजामत करनी सीखता है तो दूसरो को काट देता है।

(१०) ढेढ

बीकानेर क्षेत्र मे ढेढो के सम्बन्ध मे बहुत सी कहावतें प्रचलित हैं। ढेढ अपने भोलेपन और बेगारी के रूप मे वरुयात है।

(१) ढेढ न सुरग मे भी बेगार।

---

(१) नाई रो जाम'र भेड रो चाम, कुद्या दे काम।
(२) तमला अथवा तम्बिया—उस पीतल के पात्र को कहते हैं, जिसमे भिक्षा मागी जाती है।
(३) पाठान्तर — कटॅ मिर काऊका, बेटा सुधरॅ नाऊका।
करसी बटाऊका, मोसखी नाऊका।
कटॅ साह रो बेटो, सीखॅ नाई रो बेटो।
कटॅ महनजो, सीखॅ सैनजो।

अर्थात् ढेढ को स्वर्ग मे भी वेगार करनी आवश्यक है। उसका मन हमेशा तुच्छ पदार्थों मे रहना है।[1] उसके शाप से न ऊट मरते हैं, और न कोई अन्य पशु।[2] ढेढो के घरो मे कभी कोई दुधारु पशु नहीं होता। अतः उसकी पत्नी कभी दूध नहीं मथती।[3] शोर शराबे वाली जगह को ढेढों की ढाणी की उपमा दी जाती है।[4] ढेढ का नशा भी प्रसिद्ध है।[5] अर्थात् शराब के नाम पर छाछ या पानी पिलाने पर भी वह नशे का स्वांग करने लगता है।

ढेढ की पत्नी अपने को बहुत बुद्धिमान समझती है. इस पर अगर वह रावले मे जा आती है तो फिर अपने बराबर किसी को नही समझती।[6] किसी न नहाने धोने वाले गन्दे व्यक्ति को ढेढ की उपमा दी जाती है।[7] स्वर्ग में भी वेचारे ढेढ को कार्य करना पड़ता है और विश्राम का नाम नही।[8]

(२) ढेढ रै गुल रा पागड़ा ही बडा।

अर्थात् ढेढ के लिए तो गुड के पागडे ही बडे होते हैं। इस सदर्भ मे एक कथा प्रचलित है कि एक बार एक ढेढ और ढेढणी कही जा रहे थे। एक राजा वहा से घोडे पर सवार होकर निकला तो ढेढ ने ढेढणी को बताया कि राजा ने घोडे पर सोने के पागडे लगा रखे हैं, तो ढेढणी ने कहा 'राजाजी रै तो गुल रा पागड़ा ही मैंगा कायनी सोने री तो बात ई काई।'

जहा कहने पर ढेढ सीटी भी नही देता।[9] वहा लाठी बाकने पर तो उसकी भी खाली नही जाती है।[10] किंतु कभी न कभी तो ढेढ का भाग्य भी चमकता है और उसके वहा भी दीपावली मनाई जा सकती है।[11]

---

१. ढेढ रो मन त्यावड़ै मे।
२ ढेढा री दुरसीसा ऊ किसा ऊठ मरै है।
३ ढेढणी किसा बिलोवणा करया हा ?
४. ढेढा री ढाणी।
५. ढेढ हालो न सो।
६. ढेढणी'र रावलै जा भाई।
७. ढेढ सो सरगडो।
८. ढेढ़ नै सुरग में भी विसाई कायनीं।
९. बकारे'डो ढेढ सीटी को देवैनीं।
१०. बागेडी सो ढेढ़ री ही खालो को जावैनी।
११. कदे ढेढां कै भी दिवाली आज्यासी।

(१०) तीतर बडो क मोर।[1]

अर्थात् तीतर बडा होता है या मोर ? ढेढ के विषय मे विख्यात है वह अपनी अल्प बुद्धि के कारण मोर और तीतर मे बडे-छोटे का निर्णय नही कर पाता, और तीतर को ही उसकी विशिष्ट चाल के कारण बडा समझता है।

(११) मारूजी रा नयण राता।

अर्थात् पति देव के नयन लाल हैं। मजाक और हास्य के रूप में यह कहावत प्रसिद्ध है कि ढेढ नशे में होने के कारण अपने वास्तविक सम्बन्ध भी भुला देता है। एक ढेढ शराब पीकर घर आया, उसकी पत्नी और उसके कथोपकथन विभिन्न रिश्तो के सम्बोधनों मे द्रष्टव्य है —

'मारूजी रा नैण राता ?'
'दारूडी पी है म्हारी माता।'
कठै पी रे म्हारा सूआ ?"
रावलै मैं पी है म्हारी भुआ।"
'कुण प्याइ रे म्हारा जामी ?'
"ठाकरा प्याई ए म्हारी मामी।"

अर्थात् मारूजी के नयन राता है ?' 'शराब पी है ऐ माता।" "मेरा सूआ कहा पी ?' 'हे मेरी बुआ ! रावले मे पीकर आया हू।" 'मेरे जामी ! तुम्हें किसने पिलाई ?" 'हे मेरी मामी ! ठाकुर साहब ने मुझे पिलाई है।"

(११) कुम्हार

बीकानेर क्षेत्र की 'कुम्हार' जाति का समाज मे आवश्यक स्थान है। इनका कार्य मिट्टी के बर्तन आदि बनाने का है। इनके सम्बन्ध मे भी बहुत सी लोकोक्तियां मिलती हैं।

(१) कैयें सूं किसो कुंभार गधै माथै चढै है।[2]

---

१ पूरा कथन इस प्रकार है—
"तीतर बडो क मोर ?"
"मोर को काई बडो तीतर ही बडो,
जको तरमर-तरमर चालै।"
अर्थात तीतर और मोर की तुलना म तीतर ही बडा है, क्योंकि वह तरमर-तरमर करता हुआ चलता है।

२ कैणसूं कुम्भार गधे कोनी चढै, पण टीवडो ढलतो ही चढज्या।

अर्थात् कहने से कौन सा कुम्हार गधे पर सवार होता है, वह तो बिना कहे ही उस पर चढता है। आधुनिक, सन्दर्भों में पति-पत्नी सम्बन्ध-टूटन में जब कुम्हारी के साथ उसका झगडा हो जाता है, और उस पर अपना रौब नही चला पाता है, तब झुझलाकर गधे के कान ऐंठता है[1]

(२) कुंभार फूटी मे रांधै।

अर्थात् कुंभार फूटी हुई हाडी मे कोई चीज पकाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिसके पास जो कार्य होता है वह उसका लाभ खुद नही उठा सकता और दूसरो के लिए ही परिश्रम करता रहता है। ऐसी स्थिति मे—'कुंभार रै घरे फूटी हाडी,—उक्ति का प्रयोग कर दिया जाता है।

मजाक मे जन-साधारण कुम्हार को 'राख मे पादणी जात' भी कह देता हैं, क्योंकि अपने बर्तनों आदि को पकाने मे उसे राख के सानिध्य मे अधिक रहना पडता है।

(१२) नायक

बीकानेर की निम्न जातियो मे से नायक भी हैं। ये लोग पहले राजपूतो या जमीदारो के यहा कार्य करके या छाज बनाकर अपना पेट पालते थे। विशेषत राजपूतो के यहा कार्य करने के कारण ये बड गौरव के साथ अपने को राजपूत वंश से सिद्ध करते हुए कहते हैं, कि आपके पुरखे राजगिरी करने लगे, और हमारे पुरखे छाजले बनाने लगे।[2] अत, हमारा मूल, उद्गम तो एक ही वंश से है।

(१) नायक राजपूत

अर्थात राजपूतो मे उपजाति नायक। इस सन्दर्भ मे एक रोचक कथा प्रचलित है। कोई नायक जाति का युवक था जो सेना मे भर्ती होना चाहता था। उसने सुन रखा था कि सेना मे भर्ती के लिए राजपूतो को प्राथमिकता दी जाती है। अत· वह भी भर्ती होने के लिये सैनिक-कार्यालय चला गया। जब उससे जाति पूछी गई तो उसने कहा—"राजपूत"। अफसर ने पूछा "कौन से राजपूत"? अब वह राजपूतो की उपजातियो से परिचित था नही। अत अनायास ही उसके मुह से निकल गया—"नायक राजपूत"। उसके बाद से ही जाति के बारे मे गडबडी का सन्देह होने पर इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

(१३) हीजडा

हीजड जन-जीवन म एक तीसरे लिंग के प्रतीक होते हैं। इनके क्रिया-

१ कुम्हार री कुम्हारी पर तो जोर चालै कोनी, र गधेडं रा कान मरोडै।
२ थे राजाजी रा, म्हे छाजै जोगा।

कलाप, रहन-सहन और वेश भूषा मे न पूर्ण रूपेण जनानापन होता है, और न मर्दानापन। ये भी ढोलियो की तरह गा-बजाकर और यजमानों की तारीफ करके जीवन-निर्वाह करते हैं। इनको 'खोजे' तथा 'ताली पीट' भी जन-साधारण की भाषा म कहा जाता है। यद्यपि बीकानेरी कहावतो म ही जडो सम्बन्धी कहावतें अधिक नहीं हैं फिर भी जितनी भी हैं शुद्ध रूप से सर्वमान्य उक्तिया हैं।

(१) हीजड़ै री कमाई, मूँछ मुडाई म जाय।

अर्थात हींजडा अपनी कमाई हजामत बनवाने म ही खर्च कर देता है।

(२) हीजडा कदै कतार लुटी।

अर्थात् हीजडो ने कभी कतार लूटी थी क्या ?[१] हीजडे बेचारे जब किसी किम म प्रात हो नहीं है तो फिर उनम इतनी वीरता कभी नही आ सकती कि वह कोई साहसिक और वीरतापूर्ण कार्य कर सकें। अत किसी असमर्थ व्यक्ति के विषय म किसी कार्य को करने के प्रसग म उपयुक्त उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

(१३) लुहार

बीकानेर क्षेत्र और विशेषकर कृषक क्षेत्रो मे लुहारो का बडा महत्व रहा है क्योकि कृषि कार्य म आने वाले विभिन्न लोहे के औजार व उपकरण बनाने तथा उनकी मरम्मत आदि का कार्य—ये करते हैं।

लुहार हिन्दी साहित्य और लोक साहित्य में अति प्राचीन काल से स्थान पाता आया है। कबीर तक ने 'मेरा बीर लुहारिया'[२] कहकर लुहार का महत्व प्रतिपादित किया है। लोक साहित्य के महत्वपूर्ण अग कहावतो-साहित्य मे भी

---

१ कतार — वर्षों पहले जब जब राजस्थान म ट्रक अथवा गाडिया नही थी, तब अनाज और अन्य खाद्य पदार्थ ऊटो पर लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे तथा ये सख्या मे बहुत होत थे। इसी काफिले को कतार कहा जाता था।

२ मेरा बीर लुहारिया, तू जिनि जालै मोहि।
इक दिन ऐसा होइगा, हूँ जालौंगी तोहि॥

—कबीर ग्रन्थावली — सम्पादक श्यामसुन्दरदास पृष्ठ ६५

यह यत्र-तत्र तथा कभी स्वतन्त्र रूप म और कभी तुलनात्मक रूप में बिखरा हुआ दिखाई देता है।

(१) सौ सुनार की एक लुहार की।

अर्थात् सुनार की सौ चोटें और लुहार की एक चोट बराबर होती है। समर्थ व्यक्ति को कोई असमर्थ व्यक्ति सैकड़ों हानियाँ पहुँचाता रहे वह सहन कर जायेगा किन्तु वह एक भी हानी पहुचा दगा तो असमर्थवान के मुश्किल हो जायेगी।

(२) लोह जाणै लुहार जाणै, साती री बलाय जाणै।

अथात् लोह और लुहार का सम्ब ध अनन्य और अमिट है। किसी तीसरे को इसम दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। इसी प्रकार किसी के आपसी सम्बन्धो के बिगडने का कारण दोना की गल्तिया, ठीक 'कुछ लोह खोटो'र कुछ लुहार खोटो'—की तरह होती है।

(१५) मुसलमान सम्बन्धी कहावतें

यद्यपि मुसलमान सम्ब धी कहावतो का सम्बन्ध धर्म सम्बन्धी वर्गीकरण से है, किन्तु कुछ कहावतें जो सीधे ही जाति को आधार मानकर ही प्रचलित हैं उनको उदधृत करना आवश्यक है।

डा० कन्हैयालाल सहल और सर हर्बर्ट रिजले ने भी अपने-अपने ग्रन्थो मे मुसलमानो से सम्बद्ध कहावतो को जाति सम्बन्धी कहावतो के अन्तगत रखा है।[1]

मुसलमान सम्बन्धी कहावता से स्पष्ट ही उनके सामाजिक स्तर और उनके वैवाहिक सम्ब धो तथा खान पान आदि का प्रतिपादन हुआ है।

(१) घर जाई नै पर घर क्यू जाण दे।

(२) काम जाई पर घर जाय तो दोजख पाय।

अर्थात घर म जन्मी हुई पुत्री को दूसरे के घर की विवाहिता वधू बनने दिया जाय। मुस्लिम परिवारों मे चाचा ताऊ की बटियो से विवाह करना बहुत श्रेष्ठ माना जाता है। अगर ऐसा नही कर सकते तो उनकी मान्यता है कि वह व्यक्ति नक गामी बनता है।

---

१ राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन — डा० कन्हैयालाल सहल पृ० १५५

The people of India by Sir He bert Risley P 138

(३) काको रसै तो बेटी राखै।

अर्थात चाचा नाराज होता है, तो अपनी पुत्री रखे।

(४) आधै आगण सासरो, आधै आगण पीर।

अर्थात् घर के आधे आगण म तो ससुराल होती है और आधे आगण में पीहर। इस लोकोक्ति से भी मुसलमानों के विवाह सम्बन्धा की रीति मालूम पड़ती है। घर री बेटी घर रो बहू'—स भी यही ध्वनित होता है।

(५) ल्लोजी घोडै रा पारखी।

अर्थात ल्लोजी घोडे की परख करने वाले हैं किसी व्यक्ति का कोई किसी के प्रति अनभिज्ञ होने पर भी कार्य करने पर यह उक्ति कही जाती है।

(६) काजीजी, दूबला किया, सहर री फिकर मे।

(७) मियां थारी बुम्काऊ क म्हारी।

(८) मियांजी ! मियाजी !! थारी जिलमतरी, दाढी मूछ्यां किए कतरी।

अर्थात किसी मियें को सम्बोधन करके पूछा गया है कि आप इतने दुबले क्यो हो ? जवाब मिला शहर की चिन्ताओ मे। मियाजी आपकी मूंछ-दाढी किसने काटी और मैं अपनी बुम्काऊ या आपकी।

किसी व्यक्ति का सामर्थ्य के बाहर कार्य करते देखकर उसकी दाढी को भी कहावत का आधार बना लिया जाता है,[1] तो नई चीज के प्रति अनभिज्ञता होने के कारण भी मियाजी अभिव्यक्त होते हैं।[2]

किसी व्यक्ति को पहुँच को अभिव्यक्त करने के लिए भी मियां मस्जिद तक जाता नजर आता है[3] तो कभी किसी कार्य को न करने की गलती में उसे फिर से करने के लिए अवसर देते समय भी रोजे और मियो का सम्बन्ध स्थापित कर लिया जाता है।[4]

जब मिया गलती कर देता है तो जवाब मागने पर अपनी गलती न

---

१ मिया मुट्ठा भर, दाढो हाथ भर।
२ कायदा नुवां र, मियां भी नुवा।
३ मियें री दौड़ मसीत ताणी।
४ काई मिया मरग्या र काई रोजा घग्या।

स्वीकारते हुए सारे कार्यों को ही गलत सिद्ध करते हुए,[1] अपनी विजय के प्रतीक में टाग ऊंची ही रखेंगे।[2] फिर भी लोगों की दृष्टि में वे जन्म के मूर्ख ही रहते है।[3]

इस प्रकार उपर्युक्त कहावतों मे मुसलमानो के सामाजिक सन्दर्भ और व्यक्तिगत योग्यताओ का स्पष्ट उद्घाटन हुआ है।

जाति-तुलनात्मक कहावतें

ऊपर हमने विभिन्न जातियो के सम्बन्ध मे प्रचलित कहावतो का विवेचण किया। यहा बीकानेर मे उन जातियों के सम्बन्ध मे तुलनात्मक रूप से भी कहावतें प्रचलित है। यह आवश्यक भी है क्योंकि हर जाति अपने गुण-दोषों और अपनी मनोवृत्तियो व कार्यों मे भिन्न होती हैं। अत इस भिन्नता का प्रतिपादन ही इन कहावतो में हुआ हैं।

(१) अग्गम बुद्धि बाणियो, पिच्छम बुद्धि जाट।
तुरत बुद्धि तुरकडो, बामण सपमपाट॥

अर्थात् आगे की सोचने वाला बनिया होता है, बहुत देर बाद सोचने वाला जाट होता है, तुरन्त ही सोचने वाला तुर्क होता है, और ब्राह्मण एकदम मूर्ख होता है।

(२) राम-राम चौधरी सलाम मियाजी।
पगा लागू पाडिया, आदेस बाबोजी॥

अर्थात् चौधरी को राम-राम, मियें से सलाम, पण्डित से चरण स्पर्श और साधु से आदेश—कहकर अभिवादन करना चाहिये।

(३) जगल जाट नें छेडिये, हाटा बीच किराड।
राघड कदे न छेडिये, जद-कद करै बिगाड॥

अर्थात् जगल म जाट से, बाजार मे बनिये से झगडा नही करना चाहिए तथा राजपूत से कभी झगडा नहीं करना चाहिये—वह हर समय बिगाड करने वाला होता है।

(४) छोडा छोल बूंट उखाडन, थपथपियो'र नाई।
इता गुरुजी कदे न मू डिये, मुंबद करैला काई॥

---

१. मियाजी ओक्यूं, समलो ई ईया है।
२. मियांजी मरग्या पण, टाग ऊचो ही रै ई।
३ मियाजी जलमरा गाहू।

हे गुरुजी, माली, कुम्हार, खाती और नाई को कभी भी शिष्य नही बनाना चाहिये क्योंकि इनका कोई विश्वास नही कभी भी बिगाड कर सकते हैं।

(५) बामण नाई कूकरा, जात देख गुर्राय।
कायथ, कागा, कूकडा, जात देख हरसाय॥

अर्थात् ब्राह्मण, नाई और कुत्ते अपनी जाति वालों को देखकर बहुत दुखी होते हैं, जबकि कायस्थ, कौआ और कूकडा अपनी जाति को देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं।

(६) छतर पती, महा माई।
खा बामण, छोड नाई॥

अर्थात् हे छत्रधारी महादेवी तू ब्राह्मणों को खाले और नाइयों को छोड दे।

(७) बणी बणावै बाणियो, बणी बिगाडै जाट।

अर्थात् बनी हुई को बनिया और बनाता है तथा जाट उसे बिगाड देता है।

(८) धोबण सैं नही तेलण घाट।
बींरी मोगरी, बींरी लाठ॥

अर्थात् धोबन से तेलन किसी प्रकार भी कम नही है। अगर धोबिन के पास मोगरी है, तो तेलिन के पास घानी की लाठ है।

(९) लाख टकैंरी जाटणी खेत कमावण जाय।
एक टकैंरी रांगडी, घरे बैठी खाय।

अर्थात् लाख टको की जाटनी खेत में काम करने को जाती है, जबकि एक टके की राजपूतनी घर बैठी आराम से खाती है।

(१०) कुंभार छोडी, चमार लीनी।

अर्थात् किसी चीज को कुम्हार ने छोड दी, तो चमार ने ले ली। तात्पर्य यही है कि वह रही वैसी की वैसी स्थिति में।

(११) ठाकर टरडा, बामण भरडा।
जाट जरडा, सद मरदा॥

अर्थात् ठाकर टर्रा पीने वाले, और ब्राह्मण बटबडाने वाले और जाट

कठोर होते हैं, तथा गुरु थे वे केवल गरड बनकर रह गए हैं।

(आ) बीकानेरी कहावतों मे नारी-चित्रण

नारी किसी भी देश और समाज की सभ्यता और संस्कृति की प्रतीक मानी जाती है। नारी की दशा मे समाज विशेष की प्रगति की कहानी छुपी रहती है। भारतीय संस्कृति नारी-प्रधान संस्कृति भी कही जा सकती है। हमारी संस्कृति मे प्रारंभ से ही नारी को गौरवशाली स्थान प्रदान किया गया है। नारी के मा बहिन और पत्नी इन तीनो रूपो को ही लक्ष्य मे रखकर, उसकी पूजा होती आई है। यही कारण है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्तेतत्र रमन्ते देवता 'की उक्ति भारतीय संस्कृति की ध्येय-उक्ति रही है। प्रारम्भ मे स्त्रियो की दशा खराब नही थी, किन्तु कालान्तर मे पुरुष-वर्ग के स्वार्थ और बाह्यात्याचारो से 'हाय अबला तुम्हारी यही कहानी, आचल मे है दूध और आखो मे पानी'—वाली स्थिति आ गई।

बीकानेर क्षेत्र मे नारी विषयक विभिन्न कहावतें प्रचलित हैं जिनमें नारी के विभिन्न रूप विभिन्न धारणायें और उसकी शक्ति-सामर्थ्य के चित्र मिलते हैं।

नारी विषयक धारणायें

बीकानेरी कहावतो मे नारी के विषय मे धारणायें स्थापित करने वाली कहावतो मे कोई उत्कृष्ट रूप नही देखने को मिलता। इन कहावतो मे केवल उसके निकम्मेपन और अल्प बुद्धि का ही उद्घाटन हुआ है। उदाहरणार्थ—

(१) लुगाया की अकल गुद्दि मे होवै है—अर्थात् स्त्रियो की बुद्धि उनकी गुद्दी मे रहती है, जिनको पीटने से ही ज्ञान होता है।

(२) लुगाई पग री जुती—अर्थात् स्त्री पाव की जुती के समान होती है। तात्पर्य यह है कि स्त्रिया जूतियो के समान तुच्छ वस्तु हैं, जिनको पुरुष वर्ग जब चाहे बदल सकता है।

(३) लुगाया कुटिया ही काम देवै—अर्थात् औरतें पीटने पर ही काम देती हैं।

(४) रान्डा किसा बाग लागे है —अर्थात् स्त्रियो से कौन से बाग लगते हैं। तात्पर्य यही है कि औरत, से कोई सामर्थ्य वाला कार्य नही हो सकता।

(५) जमी जोरू जोर की—अर्थात् पत्नी और जमीन शक्ति के बल पर ही अपना रहती हैं शक्ति नही रहने पर दूसरा अधिकार कर लेता है।

(६) रांडा रोवणों चालतो रैवै है :— अर्थात् स्त्रियों का रोना-धोना चलता ही रहता है। इस रोने में कोई सार वाली बात नहीं है।

उपर्युक्त कहावतों में नारी विषयक कृष्ण पक्ष की धारणाओं का प्रतिपादन हुआ है। किन्तु ऐसी बात नहीं है कि स्त्रियों के सम्बन्ध में कोई अच्छी धारणायें नहीं है। निम्नांकित अच्छी धारणायें भी प्राप्त होती है :—

(१) लुगायां बिना किसा घर :— अर्थात् बिना स्त्री के घर शोभा नहीं देता। वास्तव में घर को सजाने का कार्य स्त्री ही करती है।

(२) वंस री बेल लुगाई हुवै है :— अर्थात् वंश की लता स्त्री ही होती है।

(६) लुगाई री सूरत काई कोख सराबणी :— अर्थात् स्त्री के रूप-सौन्दर्य को नहीं, बल्कि उसकी कोख की सराहना चाहिये, जिसके कारण वह वीर-प्रसविनी कहलाती है।

उपर्युक्त कहावतों में नारी के सम्बन्ध में अच्छी और बुरी धारणाओं का प्रतिपादन हुआ है। इनके अलावा स्त्रियों के विभिन्न रूपों को लेकर कहावतें प्रचलित हैं।

स्त्री के विविध रूप

कन्या :— उन सब रूपों से जिनसे नारी की सामाजिक स्थिति का पता चलता है, सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप कन्या और उसका जन्म है। ऋग्वेद की ऋचाओं में पुत्र-पुत्री की समान स्थिति दिखाई देती है। किन्तु अथर्ववेद में यह धारणा बदलती गई। और पुत्री-जन्म को बुरा समझा जाने लगा। ब्राह्मण ग्रंथों में पुत्र-जन्म को श्रेष्ठ मानते हुए उसे मुक्ति का साधन बताया गया है। यहां आज भी 'बेटो घर री जाभ है' कहावत प्रचलित है। इन सब बातों को देखने से ज्ञात होता है कि पुत्र की तुलना में पुत्री को हेय समझा जाने लगा, और स्त्रियों के लिये सामाजिक क्षेत्र अत्यंत ही संकुचित होता चला गया। यथा :—

(१) बाईसा पेट सूं तो निकल्या, पण हांडी सूं को निकल्यानी अर्थात् पुत्री माता के गर्भ से तो निकल गई, किन्तु हंडिया में से नहीं निकल सकी।

कठोर होते हैं, तथा गुरु थे वे कवल गरड बनकर रह गए हैं।

(आ) बीकानेरी कहावतो मे नारी-चित्रण

नारी किसी भी देश और समाज की सभ्यता और सस्कृति की प्रतीक मानी जाती है। नारी की दशा मे समाज विशेष की प्रगति की कहानी छुपी रहती है। भारतीय सस्कृति नारी-प्रधान सस्कृति भी कही जा सकती है। हमारी सस्कृति म प्रारभ से ही नारी को गौरवशाली स्थान प्रदान किया गया है। नारी के मा बहिन और पत्नी इन तीनो रूपो को ही लक्ष्य म रखकर उसकी पूजा होती आई है। यही कारण है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्तेतत्र रमन्ते देवता 'की उक्ति भारतीय सस्कृति की ध्येय-उक्ति रही है। प्रारम्भ मे स्त्रियो की दशा खराब नही थी किन्तु कालान्तर मे पुरुष-वर्ग के स्वार्थ और बाह्यात्याचारो से 'हाय अबला तुम्हारी यही कहानी, आचल मे है दूध और आखो म पानी'—वाली स्थिति आ गई।

बीकानेर क्षेत्र मे नारी विषयक विभिन्न कहावतें प्रचलित हैं जिनमे नारी के विभिन्न रूप विभिन्न धारणायें और उसकी शक्ति-सामर्थ्य के चित्र मिलते हैं।

नारी विषयक धारणायें

बीकानेरी कहावतो मे नारी के विषय मे धारणायें स्थापित करने वाली कहावतो मे कोई उत्कृष्ट रूप नही देखने को मिलता। इन कहावतो मे केवल उसके निकम्मेपन और अल्प बुद्धि का ही उद्घाटन हुआ है। उदाहरणार्थ —

(१) लुगाया कै अक्ल गुद्दि म होवै है—अर्थात स्त्रिया की बुद्धि उनकी गुद्दी म रहती है जिनको पीटने से ही ज्ञान होना है।

(२) लुगाई पग री जुती—अर्थात स्त्री पाव की जुती के समान होती है। तात्पर्य यह है कि स्त्रिया जूतियो के समान तुच्छ वस्तु हैं, जिनको पुरुष जब चाहे बदल सकता है।

(३) *लुगाया कुटिया ही काम देवै*—अर्थात औरतें पीटने पर ही काम देती हैं।

(४) रानाऊ किसा काम नागे है —अर्थात स्त्रिया से कौन मे काम नगत हैं। तात्पर्य यही है कि औरत, से कोई सामर्थ्य वाला कार्य नही हो सकता।

(५) जमी जोरु जार की—अर्थात पत्नी और जमीन शक्ति के बल पर ही [illegible] रहती है शक्ति न ही रहने पर दूसरा अधिकार कर लेता है।

(६) राडा रोवणों चालतो रैवें है :— अर्थात् स्त्रियों का रोना-धोना चलता ही रहता है। इस रोने मे कोई सार वाली बात नही है।

उपर्युक्त कहावतो मे नारी विषयक कृष्ण पक्ष की धारणाओ का प्रतिपादन हुआ है। किन्तु ऐसी बात नही है कि स्त्रियो के सम्बन्ध में कोई अच्छी धारणायें नही है। निम्नांकित अच्छी धारणायें भी प्राप्त होती है :—

(१) लुगाया बिना किसा घर :— अर्थात् बिना स्त्री के घर शोभा नही देता। वास्तव में घर को सजाने का कार्य स्त्री ही करती है।

(२) वस री बेल लुगाई हुवें है — अर्थात् वंश की लता स्त्री ही होती है।

(६) लुगाई री सूरत काई कोख सरावणी — अर्थात् स्त्री के रूप-सौन्दर्य को नही, बल्कि उसकी कोख की सराहना चाहिये, जिसके कारण वह वीर प्रसविनी कहलाती है।

उपर्युक्त कहावतो मे नारी के सम्बन्ध मे अच्छी और बुरी धारणाओ का प्रतिपादन हुआ है। इनके अलावा स्त्रियो के विभिन्न रूपो को लेकर कहावतें प्रचलित हैं।

स्त्री के विविध रूप

कन्या :— उन सब रूपो से जिनसे नारी की सामाजिक स्थिति का पता चलता है, सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप कन्या और उसका जन्म है। ऋग्वेद की ऋचाओ म पुत्र पुत्री की समान स्थिति दिखाई देती है। किन्तु अथर्ववेद मे यह धारणा बदलती गई। और पुत्री-जन्म को बुरा समझा जाने लगा। ब्राह्मण ग्रथो म पुत्र जन्म को श्रेष्ठ मानते हुए उसे मुक्ति का साधन बताया गया है। यहा आज भी वेटो घर री जाभ है कहावत प्रचलित है। इन सब बातो को देखने स ज्ञात होता है कि पुत्र की तुलना मे पुत्री को हेय समझा जाने लगा, और स्त्रियो के लिये सामाजिक क्षेत्र अत्यन्त ही सकुचित होना चला गया। यथा —

(१) बाईमा पेट सू तो निकल्या, पण हाडी सू को निकल्यानी अर्थात् पुत्री माता के गर्भ से तो निकल गई, किन्तु हड़िया मे से नही निकल सकी।

चूंकि कन्या-जन्म एक अभिशाप माना जाता था, और उसके माता-पिता की स्थिति भी समाज में उच्च नहीं मानी जाती थी, इसलिए सद्य-प्रसूत बालिका को हंडिया में डालकर कहीं एकान्त स्थान में छोड़ आते थे। यह ज्ञातव्य है कि राजपूतों के यहां पुत्री-जन्म बहुत ही बुरा समझा जाता था। वे बालिका का गला घोंट कर, अफीम खिला कर, अथवा हंडिया में डालकर मार देते थे। यह प्रथा अभी भी पिछले दिनों तक जीवित थी।

(२) बेटी भलो न एक[1] — अर्थात् किसी पिता के एक पुत्री भी हो तो भी अच्छी नहीं। क्योंकि इससे उसे समाज में अपने को नीचा मानकर किसी के सामने झुकने से मजबूर होना पड़ता है। पुत्री का पिता बहुत ही हीन और दया का पात्र समझा जाता है, अतः बात बात में 'बेटी रो बाप' जैसी उक्ति सुनने को मिलती है।

पुत्री के पिता को उसके विवाह आदि की चिंता अत्यन्त गम्भीरता से करनी पड़ती है, और इसी कारण उसे नींद तक नहीं आ पाती। जैसे किसी के घर में सर्प निवास करता हो और भय से नींद नहीं आती हो, वही स्थिति बेटी के बाप की होती है।[2]

शास्त्रों के अनुसार बेटे का पुत्र, 'पौत्र' और बेटी का पुत्र 'दौहित्र' दोनों ही मोक्ष हेतु तर्पण कर सकते हैं मगर पोतों को ही अधिक श्रेष्ठ मानकर स्नेह दिया जाता है। दौहित्र पुत्री की संतान होने के कारण अपेक्षाकृत कम स्नेह प्राप्त करते हैं। इसीलिए —

'पोता भू की राबड़ी, दोहिता भू की खीर।
मीठी लागै राबड़ी, खाटी लागै खीर।।'

अर्थात पौत्र-वधू की राबड़ी[3] है और दौहित्र-वधू की खीर है—इसमें से

---

१ पैंडो भलो न कोस को, बेटी भलो न एक।
करजो भलो न बाप को, साहिब राखै टेक।।

२ कै जागै जेक घर म साप, कै जागे बेटी रो बाप।

३ राबड़ी — माठ बाजरे के आटे को छाछ में डालकर राजस्थान में जो एक पेय पदार्थ तैयार किया जाता है उसे 'राबड़ी' कहते हैं।

राबड़ी ही स्वादिष्ट लगती है, खीर अच्छी नही लगती ।

लड़की के सम्बन्ध में माता-पिता को आधार मानकर जहां कहावतें प्रचलित हैं, वहा शुद्ध रूप में लड़कियो पर आधारित कहावतें भी उपलब्ध हैं ।

बेटी वास्तव मे दया का पात्र है । बैल जैसे मेहनत करता-करता दया का पात्र बन जाता है, उसी तरह बेटी भी । इसीलिए कहा है "जग में दो गरीब, कै बेटी कै बैल" ।

बेटी घर की आबरु होती है । उसके माथे का कलंक पूरे वंश और परिवार का कलंक बन जाता है । वह सच्चरित्र और सुमार्गगामी हो, यह प्रत्येक बाप चाहता है । वह सच्चरित्र रहे यह उसकी खुद की समझ और विवेक पर निर्भर करता है । वह खुद चाहे तभी सुमार्गगामिनी हो सकती है, नहीं तो बाप तक की परवाह नहीं करती । 1 वैसे तो बेटी पर किसी बाप का अधिकार नहीं होता, क्योंकि वह तो दूसरों की सम्पत्ति होती है, 2 फिर भी बेटी को घर की लक्ष्मी कहा जाता है । 3

लड़की जल्दी ही बचपन समाप्त कर यौवनावस्था को प्राप्त कर लेती है, उसे बढते हुए कोई देर नही लगती । 4

हमारे यहां बेटी के घर पर पितृ-पक्ष के लोग अन्न-जल ग्रहण नहीं करते, और उसे अछूतो का कहकर टाल देते हैं । 5

फूहड़पन :— स्त्रियो का फूहड़पन विख्यात है । इस विषयक बहुत सी कहावतें प्रचलित हैं । उदाहरणार्थ :—

(१) फूहड़ चालै'र नौ घर हालै ॥ — अर्थात् फूहड़ चलती है तो, नौ घर हिलते हैं । उसे चलने तक का ढग नही आता । वह इस ढग से

(१) बेटी रहे तो, बाप सै, नही तो रह नही सागी बाप सै ।
(२) बेटी परायो धन ।
(३) बेटी घर री लिछमी ।
(४) बेटी धन नै बढता काई बार ।
(५) बेटी रो दाणो, उतारु रो ।
(६) पाठान्तर :— फूड चालो करगच मोड, बायो भूणो लेगी तोड ।

मटकाती, वेढगी चाल चलती है कि रास्ते मे जो कुछ भी आ जाये, उसे तोड-फोड देती है। फूहड स्त्री के कुछ लक्षण निम्नांकित कहावती पद्य मे स्पष्ट किये गये हैं —

"राबडी में रास राधै चून चाटै पीसती।
देखो रै या फूड नार चालै पल्ला घीसती॥"[1]

अर्थात् फूहड स्त्री रात मे राबडी पकाती है, चक्की पीसती हुई आटा चाट लेती है। यह फूहड अपने वस्त्रो को पृथ्वी पर घसीटती हुई चलती है, जिससे घाघरा पाव के नीचे आकर फट जाता है। अगर कोई इस बात को देख कर उसे फूहड कह देता है, तो नाराज होती हुई आत्म-प्रशसात्मक स्वर मे कहती है —

' मेरै गोडै गयो फरडाट, मनै फूड कवै सो बावली " — अर्थात मेरा तो घुटने तक का घाघरा झटके से फट गया है, इस पर मुझे कोई फूहड कहती है, तो वह पागल है।

फूहड की पहचान उसके कार्यों और व्यवहार से ही हो जाती है। वधू सास के लिये अत्यत प्रिय होती है। नयी नवेली वधू को देखकर सास बडी प्रसन्न होती है, किंतु जब सास के चरण स्पर्श वधू करती है तो, सास तुरन्त ही वधू का फूहडपन भाप लेती है।[2]

बहू —

(१) भू घर री लिछमी '— अर्थात् वधू घर की लक्ष्मी होती है। भारतीय सस्कृति की यह आदि विशेषता है कि बहू का घर मे विशिष्ट स्थान प्रदान किया जाये।

बहू वास्तव मे घर की लक्ष्मी बन सके, इसके लिये आवश्यक है कि वह शीलवती और योग्य हो। योग्यता सम्बन्ध वशानुगत प्रभाव से भी होता है, अत 'गा न्याणै री, भु घराणै री'[3] ही अच्छी मानी जाती है। अगर वह घराने की

---

१ पाठान्तर – "देखो रै या फूड राड………………"

२. भू आई सासू हरखी, पगा लागी'र परखी।

३ न्याणा — गाय का दुहने क लिय पिछली टागो का जिस रस्सी से बाधा जाता है उस न्याणा कहत हैं।

नही होगी तो, उसके कुपथगामिनी बनने का भय रहता है। बहू घर मे कार्य करती है, उसके पीहर आदि चले जाने पर यह कार्य नही रहता।[1] कई बार ऐसे व्यक्ति से कार्य करवाने का प्रयास किया जाता है, जो कि उचित नही होता। यह तो वही बात होती है जैसे—'भू रै हाथ चोर मरावै, चोर भू रा भाई'।

लाडी

अधिक आयु मे दूसरा विवाह करने वाले व्यक्ति की पत्नी को 'लाडी' कहा जाता है। ऐसा विवाह और ऐसी पत्नी समाज मे अच्छी नजरो से नही देखे जाते। लाडी स्वभाव से अति चचल होती है, और वृद्ध व्यक्ति अपनी चचलता खो देता है। दोनो का वैवाहिक सम्बध दुख पूर्ण स्थिति में ही व्यतीत होता है। वैसे तो 'पुरष पुरातन की वधू क्यो न चचला होय'[2] के अनुसार यह स्वाभाविक ही है कि लाडी चचल हो।

लाडी पर आधारित कहावतें समाज की कुरीतियो पर अच्छा प्रकाश डालती हैं।

(१) दूज बर री गोरडी, मोतिया बिचली मोरडी—अर्थात् दूसरा विवाह करने वाले की पत्नी उसे बहुत प्रिय होती है।

(२) दाल भात लम्या जीवरा, रे बाई प्रताप तुम्हारा—अर्थात् भोजन के रूप मे दाल और भात प्राप्त हुवे हैं, तथा इतने सम्मानार्थक शब्द सुनने को मिल रहे हैं, यह सब हे बाई! तुम्हारे प्रताप से ही है। स्वाभाविक है, वृद्ध के साथ युवती पुत्री का विवाह पैसे लेकर किया जाता है, और पैसे ही आज के युग मे मान, धान तथा सम्मान प्राप्त होते हैं।

चूंकि लाडी अपने पति की विशेष प्रिय पात्रा होती है इसलिए पति को वश मे करने के लिये मान-मुद्रायें उसके विशिष्ट शस्त्र हैं। तभी तो 'गाडी नै देख'र लाडी रा पग फूलै' अर्थात् गाडी को आती देखकर लाडी पैदल चलने से इन्कार कर देती है। वैसे जन साधारण मे 'लाडी हाला लखण' तथा 'लाडी हालो लाड़' जैसी उक्तिया सुनने को मिलती हैं। इनके अलावा किसी बात को प्यार और स्नेह के साथ कहने के लिये 'ओ काम करना है लाडी!' जैसी उक्तिया भी

१ आई भू आयो काम, गई भू गयो काम।

२ कमला थिर नहीं, यह जानत सब कोय।
पुरष पुरातन की वधू क्यों न चचला होय॥—रहीम

प्रचलित हैं।

विधवा

भारतीय समाज में विधवा एक अभिशाप के रूप में स्वीकारी गई है। एक लम्बे समय से विधवा की दशा शोचनीय रही है। बीकानेर क्षेत्र में विधवा अपशकुन, वहिष्कृत और समाज के कलंक के रूप में जानी जाती है। बीकानेरी कहावतों में विधवा पर किये जाने वाले अत्याचार व उसकी दारुण दशा की झलक मिलती है।

(१) बैल बैरागी बोकड़ो, धायो विधवा नार।
ऐता भूखा भला, धाया करै बिगाड़॥

अर्थात् बैल, बैरागी साधु, बकरा और विधवा स्त्री–ये चारों तो भूखे ही अच्छे हैं, तृप्त होने पर हानि पहुंचाने वाले बन जाते हैं।

समाज में विधवा इतनी अभिशप्त है कि यात्रा पर जाते समय 'गुल्लै पैंसा नार' मिलना बड़ा भारी अपशकुन माना जाता है। मांगलिक अवसरों पर उसका आना जाना वर्जित है। वह शृङ्गार आदि का तो नाम भी नहीं ले सकती। अगर आंखों में अञ्जन लगा लिया तो, उस पर आरोप कर दिया जाता है कि वह निश्चय ही कोई पति कर लगी।[1]

जहां विधवा बेचारी किसी प्रकार से अपना जीवनयापन करना चाहती है वहां समाज में फैले दुष्ट और दुराचारी उसे सन्मार्ग से हटाकर कुपथगामिनी बनाने का प्रयास करते हैं।[2]

उपर्युक्त कहावतों से अभिव्यक्त विचारों से स्वतः ही विधवाओं के प्रति दया और सहानुभूति के भाव उत्पन्न होते हैं। विधवापन से बढ़कर दूसरा कोई दुःख नहीं हो सकता। इसको दुःख की चरम पराकाष्ठा मानते हुए कहा जाता है—
रांड सूं देसी गाल काढ़नी।[3]

सास-बहू

सास और बहू भारतीय समाज में पारीवारिक जीवन के दो प्रमुख

---

१ तीतर पंखी बादली विधवा काजल रेख।
वा बरसै, वा घर करै, इसमे मीन न मेख॥
२ रांड रंडापो काटणो चावै, पण रांडिया काटण काढ़नी दे।

नारी-तत्व हैं। एक बहू ही कालान्तर मे सास बन जाती हैं। सास घर मे बहू से अधिक अधिकार समझती है, तथा इस अधिकार का प्रयोग करने का प्रयास भी वह करती है। सास-बहू के झगडे शाश्वत हैं।

कही बहू तो कही सास झगडे की जड होती है। वैसे सासें पुराने विचार धाराओं की प्रतिनिधि होने के कारण बहू को डाटने फटकारने का जन्म सिद्ध अधिकार समझती है तभी तो 'सासू सुधी ही लडैं, फोग बालो ही बलैं' जैसी कहावतें प्रचलित हैं।

(१) सासू आगली भू—अर्थात् सास के नीचे कार्य करने वाली बहू। इस लोकोक्ति से सास की आज्ञा मे चलने वाली बहू की दुख पूर्ण स्थिति पर प्रकाश पडता है। ससुराल मे सास एक आवश्यक और महत्वपूर्ण नारी पात्र क रूप में प्रतिष्ठित होती है। अत उसके बिना ससुराल वास्तविक रूप मे ससुराल नहीं कहलाती।[1]

(२) काल मरी सासू, आयो आज आंसू—अर्थात् सासू का स्वर्गवास कल ही हो गया था लेकिन दुख स्वरूप बहू के आखो से आसू आज ही निकला है। इस कहावत मे सास–बहू के सम्बन्धो की ओर सकेत किया गया है। यद्यपि 'चोकी मायँ रेत घणी साम-भू मे प्रीत घणी' कहकर सास-बहू के सम्बन्धो के उज्जवल पक्ष को दिखाने का प्रयास किया गया है, मगर 'बा ना कँवण हाली कूण ?'[2] लोकोक्ति से सास के एकाधिकार का प्रतिपादन होता है। सास के इस एकाधिकार की भावना के कारण अलग-अलग घर बनाने की नोबत भी आ जाती है।[3]

स्त्री-पराधीनता

हमारे समाज मे स्त्रिया स्वतन्त्र नही हैं। बहुत समय से स्त्री पराधीनता

---

१ 'सासू बिना किसो सासरो।'—पाठा०— साल बिना किसो सासरो'।

२ इस कहावत के सदर्भ मे एक कथा है कि एक भिक्षु था, जो आटा मागने क लिये किसी घर मे गया। सास की अनुपस्थिति म बहू ने नहीं' कह दिया। भिक्षु जाने लगा तो रास्ते मे सास मिल गई। उसने भिक्षु से आटा ले आने के बारे मे पूछा। भिक्षु ने बहू का उत्तर बता दिया। सास के स्वाभिमान को चोट लगी। वह भिक्षुक को अपने साथ वापस घर ले गई और बहा जाकर कहा आटा 'नही' हैं। उसने कहा घर की मालकिन मैं हू, बहू नही, अत ना' करने का अधिकार मुझे है, बहू ना करने वाली कौन होती है ?

३ सासू तूं क्यूं बजावै थेल्लो, तन्नैं नई चिणादयूं हेल्ली।

चली आ रही है। एक समय था जब स्त्रियां स्वाधीन थीं। उनको अपने पति वरण करने का अधिकार था। धीरे-धीरे स्त्री-स्वाधीनता समाप्त होती चली गई, और यह प्रथा भी समाप्त हो गई तथा कालान्तर में नारी को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ दिया गया। वेद और उपनिषद्-पाठ स्त्रियों के लिये निषिद्ध हो गया। बाल विवाह प्रारम्भ हो गये, और शिक्षा भी सीमित कर दी गई। उन्हें घर की वस्तु बना कर चार-दीवारी में कैद कर दिया गया। बाह्य संसार में क्या हो रहा है, तथा क्या होना चाहिये, इसका कुछ ज्ञान स्त्री-वर्ग को नहीं रहा। वह तो पुरुष के आश्रित होकर एक रक्षणीया वस्तु हो गई :—

पिता रक्षति कौमारे, भरता रक्षति यौवने:।
पुत्रो रक्षति वर्धक्ये, न स्त्री स्वातंत्र्य मर्हति ॥

अर्थात् कुमार अवस्था में पिता, यौवन में पति, तथा वृद्धावस्था में पुत्र स्त्री की रक्षा करता है, स्त्री स्वतंत्र रहने योग्य नहीं। बीकानेरी कहावतों में नारी पराधीनता के चित्र देखिये :—

(१) जमी जोरु जोर की, जोर हट्यां ग्रोर की — अर्थात् जमीन और पत्नी पर शक्ति-बल से ही अधिकार रह सकता है, शक्ति और बल न रहने से दूसरे के अधिकार में चली जाती हैं।

(२) मेरो मियों घर नही मन्नै किसी को डर नही—अर्थात् मेरा पति घर नही है, अतः मुझे किसी का भय नहीं।

(३) निमलै री लुगाई, सै री भाभी—अर्थात् कमजोर पुरुष की पत्नी को सभी भाभी कहकर पुकारते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त कहावतों मे नारी विषयक अनेक धारणाओं, नारी के विविध रूप और नारी का समाज मे महत्व तथा स्थान का उद्घाटन हुआ है। वास्तव में किसी भी देश और समाज की सभ्यता तथा संस्कृति के अध्ययन के लिये नारी विषयक कहावतें बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। अतः इस प्रकार के अध्ययन में इन कहावतों को स्रोत के रूप मे रखा जाना आवश्यक है।

अन्य सामाजिक कहावतें :—

बीकानेरी कहावतो मे प्रचलित जाति और नारी विषयक कहावतो का विश्लेषण हमने किया, किन्तु इनके अलावा और अनेक संदर्भों और विषयों की

कहावतें प्रचलित हैं— जिनके अध्ययन से यहा का सामाजिक जीवन और उसके विविध रूपीय स्तरो का उद्घाटन होता है।

त्योहार

भारतवर्ष एक धर्म प्रधान देश रहा है। अतः यहा पर त्योहारो की सख्या बहुतायत से पाई जाती हैं। राजस्थान मे तो और भी अधिक त्योहार मनाये जाते हैं, जो त्योहार परिच्छेद के स्थानीय परिच्छेद हैं। होली, दीपावली, दश-हरा, रक्षा बधन, इदुलफितुर, ईदुल-जुहा जैसे अखिल भारतीय स्तर के त्योहारो के अलावा गणगोर, तीज, गोगा, नेतमोमिया, सक्राति, अक्षय तृतीया तथा शीतला सप्तमी जैसे त्योहार भी बड़ी धूम धाम के साथ मनाये जाते हैं। इन सब का प्रतिपादन बीकानेरी कहावतों में हुआ है।

(१) गणगोर्‌या नै ही घोडा नही दोडसी तो कद दौडसी .— अर्थात् गणगौर के दिन ही यदि घोडे नही दौडेंगे तो कब दौडेंगे ?

गणगोर न केवल बीकानेर का ही, अपितु समस्त राजस्थान का एक महत्वपूर्ण स्त्री विषयक त्योहार है। इस त्योहार की महत्ता कन्याओ और नवव-धुओं के लिए अधिक है। किसी लडकी के विवाह क पश्चात् प्रथम गोरी पूजन उसके मायके मे करना प्राय सामाजिक मान्यताओं द्वारा आवश्यक माना गया है। होलीका दहन के दूसरे दिन से ही बालिकाओ द्वारा गोरी-पूजन प्रारम्भ हो जाता है, और चत्र शुक्ला तक यह पूजन चलता है। चैत्र शुक्ला तृतीया या चतुर्थी को मेले भरते हैं, जिसमें गवर' की सवारी निकलती है। वास्तव मे रग-बिरगे वस्त्र धारण किये औरतें सर पर 'गवरो' को रखे चलती हैं, तो एक निराला ही दृश्य होता है। 'गवरो' की सवारी किसी कुए या जलाशय पर जाकर समाप्त होती है। बीकानेर म गणगोर की सवारी मे महाराजा और अन्य सरदार विशेष सज-धज के साथ सम्मलित होते थे। अब भी यही परिपाटी चल रही है।

बीकानेर मे गणगोर की श्रेष्ठता के सम्बन्ध मे एक पद्य प्रचलित है—

जैपर री रगीन दिवाली, बूदी री मदमाती तीज,
कोटा मे घमसाण दसेरो, भरतपुर मे होली धूम मचावे है,
बीकानेररो नखरालो गणगोर, बणठण कर आवै है।

अर्थात् जयपुर की दीपावली, बूदी की तीज और कोटा का

तथा भरतपुर की होली प्रसिद्ध है और बीकानेर मे गणगौर की सवारी बडे ठाठ के साथ निकलती है ।

(२) तीज त्यूहारा बावडो, ले डूबी गणगौर — अर्थात् तीजो से त्यौहारो का मनाना आरम्भ होता है, और गणगौर के पश्चात् कई दिनो के लिये कोई त्यौहार नही आता । श्रावणी तीज मनाने के बाद हमारे यहा त्यौहारो का ताता लग जाता है, किन्तु चैत्र शुक्ला चतुर्थी के पश्चात् चार महीनो तक कोई त्यौहार नही आता ।

(३) तीजा पछै तीजडो, होली पछै ड्ठ ।
फेरा पछै चूनडो, मार खसम रे मूड ॥

तीज के त्यौहार के बाद वस्त्रादि भेजना, होली बीत जाने पर उसके उपलक्ष मे कोई चीज भेजना तथा भाँवर फिर लेने के बाद चुनरी भेजना स्वत ही व्यर्थ है ।

(४) आडै दिन सू तो बास्येडो ई चोखो—सामान्य दिन से तो शीतला पूजन का ही दिन अच्छा रहता है जिस दिन की कुछ तो मीठा खाने को मिलता है । शीतला सप्तमी चैत्र कृष्णा मे मनाई जाती है जिनमे राबडी बाजरे की रोटी और केरिया तथा सांगरियो का साग प्रमुख रहता है ।[1] शीतला पूजन के दिन यही ठडा भोजन किया जाता है ।

(६) गाड फाटती नै गूगो धोकै—अर्थात् अनिष्ठ की आशका से ही गोगा जी की पूजा की जाती है । ये सर्पों के देवता माने गये हैं । अत सर्पों की रक्षार्थ ही भाद्र-कृष्णा नवमी को गोगा पूजन होता है, तथा भाद्र-शुक्ला नवमी को चूरू जिले के गाव ददरेवा तथा गगानगर जिले के गागामेडी ग्राम में बडे बडे मेले भी लगते हैं । हजारो यात्री दर्शनार्थ जाते हैं । इसके अलावा और भी अनेक लोक देवताओ को त्यौहार के रूप म मनया जाता है । दियाली रा दिया दिसँ' के साथ ही कहा जाता है कि दीपावली के दीपक देखकर बहुत सी चीजें अपना स्वरूप बदल लेती हैं । होली भी खुशी का प्रतीक है । 'होली फूला री झोली भिर मिट्यो ले' जैसी कहावतें होली को खुशियो के प्रतीक-रूप मे प्रस्तुत करती हैं ।

° केरिया — कर के लगने वाले फल ।
सागरी — खेजडे का फल ।

इस प्रकार त्योहार विषयक कहावतों में बीकानेर क्षेत्र की सामाजिक अवस्था से सम्बन्ध रखने वाली अनेक उपयोगी सूचनायें प्राप्त होती हैं।

(७) बस्सी कवाडा बेच रै बावा, घम्मोली घसकाय दे—अर्थात् हे बावा! बस्सी, कवाडा बेचकर भी मेरे लिये घम्मोली की व्यवस्था कर दे। तीज के त्योहार का बीकानेर में बडा महत्व है। विशेष रूप से यह त्योहार बेटियों और बहिनों का है। तीज के दिन बहिन-बेटियां ससुराल से पीहर आ जाती हैं, और झूले झूलती हैं। श्रावण-शुक्ला तृतीया का बडा ही महत्व है। "आई-आई ए मा सावणिया री तीज" का स्वर तो श्रावण में न केवल बीकानेर में ही, बल्कि राजस्थान भर में सुना जा सकता है।

तीज के पहले दिन की शाम को 'सिंझारे' की शाम कहते हैं। उस दिन बहिन-बेटियों को विशेष आग्रह के साथ मिठाई खिलाई जाती है। इसी संदर्भ में उपर्युक्त कहावत में एक बेटी पिता से आग्रह करती है कि अपने औजार बेचकर चाहे मिठाई लाओ मुझे तो मिठाई खिलानी ही पडेगी।

विवाह

विवाह समाज की आवश्यक संस्था है। यह प्रथा आदि काल से ही विभिन्न रूपों में प्रचलित रही है। इस विषयक बहुत सी कहावतें प्रचलित हैं।

(१) तिरिया तेरा, मरद अठारा—अर्थात् स्त्री का विवाह तेरह वर्ष की आयु में, और पुरुष का विवाह अठारह वर्ष की आयु में हो जाना चाहिए।

(२) कवारी कन्या रै सौ बर—अर्थात् कवारी कन्या के विवाह प्रसंग के लिये अनेकों जगह बातचीत की जाती है, किन्तु कहीं ठीक रिश्ता [illegible] ही विवाह निश्चित किया जाता है।

(३) दही री लाज—जवाई जब विवाहार्थ पहले [illegible] हैं तो उसकी सास उसके माथे में दही के साथ एक चांदी का [illegible] है। जिसका तात्पर्य यही है कि इस दही की लज्जा [illegible] मेरी बेटी के लिए ठंडे और अच्छे बने रहना।

(४) मोल घलं—विवाह के दिन [illegible] किया जाता है। उबटन लगाने समय [illegible] डालते हैं, जिसको 'मोल घालना' कहते हैं।

(५) छाछ और बेटी मांगण में [illegible]

पुनी को माग कर लाने मे कोई बुराई नही है। दुल्हन का सा व्यवहार करने वाले के लिए कह देते हैं—'ब्यावली बू हो वँ ज्यूँ'। हमारे यहा एक मान्यता है कि शादी मे चवरी अर्थात् विवाह वेदी मे किया जाने वाले हवन का धुम्रा लगने से लडकी और भी अधिक रूपवती बन जाती है।[1]

भावर पडते समय धीरे-धीरे चलना विशेष महत्त्व रखता है और औरतें भी कन्या को बार-बार गीतो के माध्यम से अनेक उक्तियों द्वारा यह बात याद दिलाती रहती हैं।[2] यहाँ पर चार भावर पडने की ही परम्परा है अत अन्तिम भवर के साथ ही लडकी पूर्ण विवाहिता हो जाने के कारण पराई हो जाती है।[3]

विवाह आदि मे जवाई के साथ मजाक-मसखरी की प्रथा भी हमारे यहाँ पाई जाती है। राजपूतो मे सास अपने दामाद से नही बोलती है, और नही उसके सामने आती है, किन्तु रात को मजाक करने के लिए साली आदि के बहाने दामाद से मजाकार्थ आ जाती हैं। अत 'रात काली नैं सासू साली' जैसी कहावत भी प्रचलित है।

बहु विवाह की प्रथा भी यहा प्रचलित ही है। अत दो बुआँ रो धणी चुल्ला फूकै' कहकर बहु-विवाह पर कटाक्ष किया गया है। इसके साथ ही दो पत्नियों के बच्चो को ल्होडली रो र बडोडी रो' कहकर भी सम्बोधित किया जाता है।

इस प्रकार विवाह प्रसग की कहावतो से यहा के सामाजिक जीवन के अनेक रहस्य उद्घाटित हुए हैं।

अतिथि सत्कार

अतिथि सत्कार भारतीय सस्कृति की अपनी विशेषता है। राजस्थान तो अतिथि सत्कार मे सदा अग्रणी रहा है।

यहा तो शत्रुओ तक को अतिथि मानकर उनको अतिथि सत्कार करने की बात कही गई। हमारे यहा बीकानेर जन-जीवन मे 'पावणो भगवान रो रूप' समझा गया है। अतिथि-महिमा और उसका सत्कार करने की महिमा बहुत अधिक है। वैसे वर्षा के साथ मेहमानो की तुलना करके कहा जाता है– पावणा'र

---

१ चवरी रो धुम्रो।

२. होलें होलें हाल म्हारी लाडो, हसैगी सहेलडिया

३ चोथै फेरै, बाई हुई परार्ई।

मेह निसा रोज-रोज आवै है ?' अर्थात् वर्षा और अतिथि तो कभी-कभी ही आते हैं।

अतिथि सत्कार की सुन्दर परम्परा का लाभ उठाने के लिये समाज के निकृष्ट व्यक्तियो ने अपनी जीविका का सुन्दर मार्ग ढूँढ लिया। वे आये दिन किसी न किसी के मेहमान बनकर 'चोकणी रोटी' खा-खा कर पेट पालने लगे। आजकल के आर्थिक विषमता के युग मे यह बात लोगो को खलने लगी, अत 'बिना मना रा पावणा तन्नै घो घालूं क तेल' जैसी लोकोक्तिया भी प्रचलित हो गई।

अतिथियो के ठहरने का भी समय होता है अगर अधिक दिन ठहरता है तो वह फिर आखो मे खटकने लगता है। अतिथि केवल दो दिन का होता है, तीसरे दिन फिर वह बुरा लगने लगता।[1]

कहावतो मे सम्बन्ध चित्रण

पारिवारिक जीवन मे सम्बन्धी और रिश्तेदार किसके साथ क्या व्यवहार करते हैं, और कौन सा व्यवहार सुन्दर और आदर्श व्यवहार है, तथा कौन सा निकृष्ट—आदि विषयक कहावतें बीकानेरी कहावतो मे बहुत मिलती हैं।

(१) बाप पर बेटो'र घोडै पर घोडो, घणो नही तो थोडो थोडो—पुत्र और घोडे का बच्चा अपने बाप जैसे ही होते है। अगर उनमे उनके जैसे पूरे गुण नही होते तो भी आंशिक रूप से अवश्य होगे।

(२) पाघरै नातो—व्यक्ति विशेष के अनुसार रिश्ता होना। इस प्रसग म एक पद्यात्मक कहावत प्रचलित है। यथा—

सासू तीरथ, सुसरा तीरथ, तीरथ साला साली।
बचने-बचने साढू तीरथ, बडा तीरथ घर वाली॥

सास श्वसुर साले, साली के साथ तो सम्बन्ध है ही, थोडा-थोडा सम्बन्ध साढू के साथ भी है, किन्तु विशेष सम्बन्ध तो पत्नी के साथ ही होता है।

(३) होत, री माण'र अण होत रा भाई—पास मे कुछ होने पर तो बहिन रहती है किन्तु पास मे कुछ न रहने पर भी भाई मददगार होता है।

---

१ दो दिन पावणो, तीजै दिन अणखावणो
या एक दिन पावणो, दूजै दिन अणखावणो, तीजै दिन बापरो मुधावणो।

(४) जेठो घेटो र जेठी बाजरी कठै पड़्यो है—अर्थात् ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ मास मे बोया जाने वाला बाजरा कठिनाई से ही प्राप्त होता है।

(५) सासू बिना किसो सासरो—[1] बिना सास के ससुराल का महत्व नहीं होता।

(६) सासरो सुख रो आसरो—ससुराल मे चूकि खूब आदर और सत्कार होता है इसलिए दामाद के लिए तो वह सुख का घर ही है। वैसे कहा भी है— भाण यै भाई सास यै जवाई' किन्तु दामाद के लिए यह सुख का आसरा कभी-कभी जाने पर ही होता है।

(७) दूर जवाई फूल बराबर, गांव जवाई आदो।
घर जवाई गधै बराबर, मन आवै ज्यूं लादो॥

ससुराल मे दूर रहने वाला जवाई फूल की तरह प्रिय होता है। एक ही गाव या स्थान पर रहने वाला अर्द्ध-प्रिय होता है किन्तु घर जवाई तो गधे के समान होता है, इच्छा आये उतनी ही मेहनत करवा सकते हो।

(८) सोक तो माटी री ही बुरी—अर्थात् सौत तो मिट्टी की ही अच्छी नही होती—क्योंकि 'एक म्यान मे दो तलवारा को समावैनी।'

बुआ और फूफा भी कहावतो के विषय बने है। 'भुवा जाऊं जाऊं करै फूफो लेवण आयो'—अर्थात् बुआ को ससुराल जाने की जल्दी ही थी कि फूफाजी लेने भी आ गये अगर फूफाजी रूठ भी जावे तो क्या बिगाड सकते हैं हां बुआ को नही भेजेंगे।[2] जहा गरीबी होती है वहा यही कहते हैं 'भुआ जी फाका करै है।' जेठ के पुत्र-पुत्री का विशेष महत्त्व भी प्रतिपादित किया गया है। जेठूती का आगण मे आना भी गम्भीर पुण्य का कार्य है।[3] और जेठूते का भोजन करना भी कम महत्त्व का कार्य नही माना जाता।[4]

नाना, नानी भी अपना महत्त्व रखते है। दौहित्र के लिए उनम विशेष

---

१ पाठा०—सालै बिना किसो सासरो।
२ फूफोजी रुठ सी तो भुआ जी नै राखसी।
३ जेठूती आंगणै आई।
४ जेठूतो जिमावण।

स्नेह होता है, और आतिथ्य का शुभ प्रतीक दही रोटी खिलाना [1] वे अपना पावन कर्त्तव्य समझते हैं। यही नही बात-बात मे 'टाबरारी मानी न देख म्हारै कानी' कहकर भी नानी का महत्त्व प्रतिपादित किया जाता है।

इस प्रकार उपर्युक्त कहावतो मे सामाजिक सम्बन्धो के विभिन्न रूप प्रतिपादित हुए हैं।

भोजन व पेय पदार्थ सम्बन्धी

(१) बाजरै री रोटी'र फोफलिया रो साग[2]

बीकानेर क्षेत्र के लिए 'सेलर, काचर साह-वाह बीकाण वाह' उक्ति प्रसिद्ध है। बाजरे की रोटी और फोफलिया की सब्जी का बड़ा मेल है। यह भोजन यहा अतिथियो को विशेष रूप से पुरसा जाता है।

चावला रो खाण फल सूँ तक जाए—चावल बहुत ही हल्का भोजन है, अत उसको खाकर दरवाजे तक जाते ही भूख लग जाती है।

(४) चोखी लागै राबडी, दात घसै न जावडी—राबडी बहुत स्वादिष्ट लगती है, क्योकि इसको खाने मे कोई तकलीफ नही होती, दात और जबाड़े बिल्कुल ही नही घिसते। इसके साथ ही साथ 'राबडी'र काचा कादा रो मजो इण न्यारो ई हुवै है' जैसी कहावत भी प्रचलित है।

(५) तेल न ताई राड मरै गुलगचाई—[3] अर्थात् घर मे तेल तथा अन्य सामग्री नही हैं, फिर भी स्त्री को गुलगुले खाने की उत्कट इच्छा है।

(६) अन्न देवता—[4] अन्न को खाकर ही मनुष्य जीवित रहता है, अत इसे 'अन्न देव' के नाम से पुकारा जाता है। कई बार ऐसा होता है, कि जिसको जितना अधिक मिलता है वह उतना ही अधिक मरू-मरू करता रहता है।[5]

---

१. नानी कै जावणो र दही बाटियो खावणो।

२. फोफलिया—टींडियो के सुखे हुए रूप को फोफलिया कहते है।

३. मिला०—गुडकोनी गुलगुला करती, ल्याती तेल उधारो।

पलींडै मे पाणी कायनी, बलीतो कोनी न्यारो,

कडायो तो मांग'र ल्याती, पण आटे रो दुख न्यारो।

४ अन्न रो नाम मोटो।

५. घणो खावै बो घणो मरै।

किन्तु जिसकी किस्मत खराब और फूटी हुई हो, वह ही अन्न को छोडता है।[1]

(७) भाग मागै भू गडा, सुलफो मागे घी।
दारु मागै खूंसडा मर्जी आवे तो पी ॥

अर्थात् भाग का नशा भू गडो से, सुलफे का नशा घी से, और शराब का नशा जूते खाने से ही उतरता है। अत जिसकी इच्छा हो वही इसका सेवन करे।

घरो मे अधिकाश तौर पर दाल बनने पर लोग खाते खाते अघा जाते हैं। इसलिए दाल रो मु ह बाल' जैसी कहावत चल पडी। कढी मे घी डालकर खाना भी आवश्यक है।[2]

घी और गुड क्रमश पलियो और डलिया स समाप्त हो जाता है।[3] घी डालने के बर्तन को घीलोडी और तेल डालने के बर्तन को तिलोडी कहा जाता है।[4] गुड बीकानेर के ग्रामीण क्षेत्रो मे विशेष पसन्द किया जाता है। अत उसकी भेलिया खरीदी जाती हैं उनके फूटने पर थाडा बहुत अश तो मिलता ही है।[5]

(८) पाणी पीणो छाण'र करणा मन री जाण'र—अपने मन मे सोच विचार कर कार्य करना चाहिये और स्वास्थ्य की दृष्टि से पानी छानकर ही पीना चाहिए।

(९) काल मर्‌या, आज मरा, मरया मराया फिरा।
घाल कटो रै राबडी, बनडा होया फिरा ॥

अर्थात कल मर जायेंगे, आज मर जायेंगे, मरणावस्था मे ही घूम रहे हैं, अत कटोरा राबडी का भर दें इस समय तो दुल्हा बने हुए फिर रहे हैं।

उतावलेपन के सम्बन्ध मे भी उक्ति है कि घाल राबडी मरयो हुगायो' किन्तु इसके साथ ही बहुत से कगल रईस ऐसे होते हैं, जो भूखे तो सो जाते हैं मगर जौ का दलिया नही खाते।

(१०) खीर खीचडी मदी आच—खीर और खीचडी मदी आच पर पकाई जानी चाहिये।

---

१ *भाग फूटया, अन्न छूटया।*
२ कढी रो ब्याव।
३ घी पलिया, गुड डलिया।
४ घी री घिलोडी'र तेल री तिलोडी।
५ गुड री भेली फूटै तो मोरो तो खीडै हो।

इसी प्रकार से भोजन और पेय पदार्थों के बारे में अनेक कहावतें मिलती है।

अनाज सम्बन्धी कहावतें :—

भोज्य पदार्थों के अलावा, गेहूँ, जौ, चने, चावल, मोठ, बाजरा, तिल आदि अनाज के विविध रूपों पर भी कहावतें मिलती हैं।

(१) तिल वधै न राई घटै — किसी वस्तु का न तिल जितना अधिक और न राई जितना कम होकर, पूरा-पूरा होना।

(२) थोथो चिणो, बाजै घणो —
थोथा चना अधिक बजता है। अर्थात् कमजोर अधिक शोर करता है।

(३) बाजरी रो काई काचो[1] — बाजरा कभी कच्चा नही होता।

(४) सुदामें रा चावल — अर्थात् गरीब मित्र की भेंट।

(५) मोठ'र चणो पेट मे फूलै — मोठ और चना पेट मे जाकर फूलता है। इनको खाने पर प्यास अधिक लगती है।

इस प्रकार अनाज सम्बन्धी कहावतें भी बीकानेरी कहावतो मे मिलती हैं, जिनमे अनाज-प्रकृति का प्रतिपादन होता है।

ई- फुटकर सामाजिक कहावतें

(१) रोटी कै हूँ आऊ जाऊ खीच कहै हू ठेठ पुगाऊ।
घाट कहै म्हारो फुसकर नाव, म्हारे भरोसै मत जाये गाव।।

रोटी कहती है मुझे खाकर, बाहर जाकर, वापस आसानी से आ सकते हैं, खीचड़ी कहती है, मुझे खाकर, बाहर जाकर, निर्दिष्ट स्थान तक पहुचा जा सकता है। घाट कहती है मैं तो तत्वहीन हूँ। मुझे खाकर कोई भी रास्ते नही चल सकता।

(२) अमरूद कहै म्हारै मे बीज नी हूता तो जहर हो — अमरूद मे अगर बीज नही होता तो वह बीमारी का घर होता।

(३) नींबू कहै म्हारै बीज नी हूता तो म्हे अमरत होतो — अर्थात् नींबू में अगर बीज नही होता तो, वह बडा ही गुणकारी होता।

(४) दिन मे मूली, रात मे सूली — अर्थात् दिन मे खाई जाने वाली

१— बाजरी रो कांई काचो, सुनार रो कांई साचो

मूली रात को पेट मे खराबी करके मूल का कार्य करती है।

व्यवसाय

बीकानेर की अधिकांश कहावतें जो कि व्यवसाय व रोजगार को निर्देशित करती है, नौकरी को हेय ठहराती है । कृषि कार्य और व्यापार कार्य ही श्रेष्ठ बतलाया गया है।

(१) धन खेती, धिक चाकरी, धन धन वणिज व्योहार

(२) नौकरी ना करी ।

(३) नौकरी रै नकारँ रो वेर ।

(४) नौकरी गुलामी रो दूसरो नाम ।

(५) मालिक री हा मे हा ही नौकरी ।

(६) ब्याज नै घोडो ही को पूगँनी –

खेती धन्य है, नौकरी को धिक्कार है, और व्यापार-कार्य वास्तव मे धन्य है । नौकरी न करना ही अच्छा है । मालिक जब चाहे नौकर को हटा सकता है । नौकरी करने वाले किसी कार्य करने मे ना नही कर सकते क्योंकि गुलामी का ही दूसरा नाम नौकरी है । अत मालिक की हा मे तो रात को दिन भी बतलाना पड़ता है।

अत नौकरी से अच्छा तो व्यापार ही है । ब्याज पर रुपये देन लेन करने से बडा फायदा रहता है, क्योंकि उसकी कमाई की गति घोडे से भी तीव्र रहती है। फिर भी ब्याज के कार्य से श्रेष्ठ तो व्यापार कार्य ही है क्योंकि ब्याज तो व्यापार का ही चाकर है।[1]

(७) चालज्या दुकानदारी, तो काई करे तहसीलदारी –
व्यापार चल निकले तो उसके सामने तहसीलदारी भी मन्दी है ।

(८ रिपिया हाटा नीपजै — अर्थात रुपये बाजार मे ही पैदा होते हैं । यही नही 'रिपिये नै रिपियो कमावै भी है।

इस प्रकार व्यवसाय सम्बन्धी कहावतो में खेती, व्यापार, नौकरी-चाकरी सम्बन्धी अनेक कहावतें मिलती हैं ।

१— ब्याज व्यापार रो गोलो है।

३ शिक्षा व विद्या सम्बन्धी कहावतें :—

भारतवर्ष में विद्या का महत्त्व अनन्तकाल से चला आ रहा है। शिक्षा और दीक्षा पर भारतीय आचार्यों का बडा ध्यान था। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली भारतीय संस्कृति की एक महान् विशेषता थी। पातजल महाभाष्य मे कहा गया है—

साहतैं पाणिभिघ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।
लाल नाश्रयिणो दोषास्ताडना श्रयिणो गुणा.॥

अर्थात् अमृत भरे हाथो से गुरु शिष्यो को पीटते हैं, विषसिक्त हाथो से नहीं। शिष्य लाडचाव से बिगड जाते हैं ताडना से उनका सुधार होता है। वास्तव में यह बात है भी सत्य कि बिना दण्ड के भय के छात्र वर्ग विद्या ग्रहण करने मे असमर्थ रहता है। गुरू जितनी चोटें लगायेगा विद्या भी उतनी ही अधिक आयेगी। यहा कहावत प्रचलित है—'सोटी बाजै चमचम, विद्या आवै घमघम'

अर्थात् सोटी जब चमचम बजती है, तभी विद्या घम-घम आती है। तुलसीदास जी ने भी कहा था—'भय बिन प्रीत नही गोसाई।' अर्थात् हे तुलसी! बिना भय के किसी चीज से लगाव नहीं हो सकता। विद्यार्जन भी बिना भय के नही हो सकता।

यह बात नही कि गुरु-शिष्य के सम्बन्ध केवल ताडना पर ही आधारित हैं, बल्कि उनके मधु सम्बन्ध भी हैं। कबीर ने कहा भी है—

गुर कुम्हार सिष कुम्भ है, गढि-गढि काढे खोट।
भीतर हाथ सहार दे, बाहर बाहर चोट॥

सच्चा गुरू हमेशा अपने शिष्य का भला ही चाहता है और उसकी चोट में भी भलाई ही निहित होगी। विद्या के सम्बन्ध मे कुछ कहावतें इस प्रकार है—

(१) रूखत विद्या, पचत सेती—अर्थात् विद्या भ्मने से आती है और सेती मे मेहनत करनी पडती है।

(२) खेलोगा कूदोगा तो होवोगा खराब।
पढोगा लिखोगा तो बणोगा नवाब॥

अर्थात् खेलने कूदने मे ही यदि समय गवा दिया तो फिर जीवन

नष्ट हो जायेगा । पढने लिखने मे समय लगाने पर मजे से जिन्दगी व्यतीत होती है ।

(३) माया अट की, विद्या कठ की—अर्थात् धन सम्पत्ति गाँठ की और विद्या कठस्थ की हुई काम आती है ।

(४) घोटत विद्या, खोदत पाणी—विद्या रटने से याद होती है । जमीन खोदने मे पानी निकलता है ।

बीकानेर मे स्त्री-शिक्षा को भी पहले अच्छा नही समझा जाता था अत किसी लडकी को पढने पढाने की बात आने पर 'काई पढा'र मास्टरणी बनावणी है' जैसी उक्तियो का प्रयोग किया जाता था ।

(५) *अज भणिया घोडै चढै, भणिया मागे भीख—बिना पढे लिख* तो घोडो पर चढे घूमते है, जबकि पढे लिखे भीख माग रहे हैं । उक्त कहावत म समाज के पढे लिखो की करुण दशा की झलक है । साथ म बिना पढे लिखे का ही महत्व स्वीकारा गया है ।

(६) जहा एक ओर— हाथ कगन को आरसी क्या, पढै लिखै नै फारसी-क्या'—जैसी कहावतें प्रचलित हैं तो दूसरी ओर 'पढया फारसी बेचे तेल' जैसी कहावतें भी पढाई और पढने वालो पर कटाक्ष करती है ।

(७) मेटरिक पढ मान्दा भया बी ए रा बुरा हाल ।
एम ए सरग सिधारिया, ए विद्या रा हाल ॥

अर्थात् मैट्रिक करते-करते तो स्वास्थ्य खराब हो जाता है बी ए तक आकर बुरे हाल हो जाते हैं । एम ए करने के साथ विद्यार्थी स्वर्गारोहण कर जाते है—ये हाल विद्या के हो गये है ।

४ कृषि सम्बन्धी कहावते

बीकानेर क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र रहा है । यद्यपि यहा अकाल 'पग पूगल' जैसी कहावतो के अनुसार, बहुत पडते हैं फिर भी कृषि का पल्ला लोगो ने नही छोडा है । कृषि सम्बन्धी अनेक कहावतें यहा प्रचलित है—

कृषि सम्बन्धी धारणा

(१) *धन खेती, धिक चाकरी, धन धन ब्योपार*

अर्थात् कृषि-कार्य धन्य है नौकरी निकृष्ट और व्यापार कार्य भी अच्छा है । लोगो के मन मे कृषि के प्रति अगाध आस्था रही है और अब भी है ।

वर्षा और खेती का बडा सम्बन्ध है। इसीलिए किसान कृषि-दिवसो में बादल की ओर ताकता है, बादल बरसे तो खेत मे अनाज की पैदावार होती है।[1] खेती करने के लिये बडी मेहनत की आवश्यकता होती है।[2] खेती मे तो खुद मालिक ही कार्य करता है, तभी वह लाभदायक सिद्ध होती है,[3] सन्देशो और समाचारो से खेती नही होती।[4]

कृषि सम्बधी

(१) चाली पिरवा पून मतीरो पिल गई।
पलिया पलिया ढोल सगीजो, बापुल तो गई॥

अर्थात् पूर्व दिशा की हवा चलने से मतीरो पीली पडकर गल जाती है। फिर चाहे उसकी कितनी ही सिंचाई की जावे, वह अपनी पूर्वावस्था में नही आती।

(२) सावण मे तो सुरिणे चालै, भादुडै पुरवाई।
आसोजा मे पिछवा चालै, भर-भर गाडा ल्याई॥

यदि श्रावण मे उत्तर पश्चिम की हवा, भादों मे पूर्व की हवा और अश्विनी मे पश्चिमी हवा चले तो फसल बहुत अच्छी होती है।

(३) खेत हमेशा निचाई मे होना चाहिये। "ऊचा ज्यारा बैठवा, ज्यारा खेत निवाण"[5] जैसी कहावतो मे खेत की स्थिति का उल्लेख किया गया है।

---

१ खेती बादल मे।

२. भाखत विद्या, पचत खेती।

३ खेती धणिया सेती—
पाठा०—खेती खसम सेती।
खेती सेचल सेती।
खेती बादला सेती।
खेती खात सेती।
खेती जमी सेती।
खेती बाड सेती।

४ सन्देशा खेती को नोपजैनी।
परहाथ विणज सदेशो खेती, विन देखे ब्यावै बेटी।
द्वार पराये मेले थाती, ये चारू मिल कूटै छाती॥

५ नीचलो तो खेत दीजे, बीच मे दीजे नाडो।
घर हाली ने छोरी दीजे, भैंस ल्यावै पाडो॥

"नाडी हालो खेत" में भी यही भाव व्यंजित हुआ है।

कृषि कार्य की बडी महत्ता मानी गई है। इसलिये घर तो चाहे छोटा ही हो खेत की जमीन बडी होनी चाहिये।[1] जिस वर्ष फसल अच्छी होती है, उस वर्ष हरियाली ही हरियाली नजर आती है, और गांव के आस पास की जमीन को ही देखकर पता लग जाता है कि फसल अच्छी है।[2] हमारे यहा ज्येष्ठ पुत्र की बडी महत्ता है और ज्येष्ठ म बोया जाने वाला बाजरा भी, कभी ही प्राप्त होता है।[3] ज्येष्ठ के बाजरे के बारे म प्रचलित लोकोक्ति है—

जेठ बायो बाजरो, सावण घाल्या थूंट।
भर भादू म भर देसी बा बाजरी का ऊंट॥

अर्थात् ज्येष्ठ म बोया हुआ बाजरा सावन म फलता फूलता है तथा भादवा मे फसल पक जाती है जिसको काटकर ऊंट के ऊंट भरकर ले आया जाता है।

एक प्रचलित कहावत है कि खेतो म कुछ म होने पर भी कई लोग डीग मारते रहते हैं। यथा— *आये गय नैं पूछे बात खेती मे मय आथ नैं साथ।*"

कृषि-उपकरण सम्बन्धी

(१) टूटी चऊ गया मऊ

अर्थात् हल मे लगने वाली चऊ के टूट जाने पर मऊ (परदेश) जाना पडता है।

(२) टूटी पीनणी, आई बीनणी

पीनणी टूटणें पर विश्वास कि घर मे किसी का विवाह होकर बहू आती है।

(३) खेत बलदा र राज घोडा'र

खेत बैलो और राज्य कार्य घोडों की शक्ति से चलता है।

(४) हलके विषय मे भी विभिन्न पेडो की लकडी का निर्देश हुआ है। कई पेडो की लकडिया हल निर्माता के लिये अशुभ मानी गई है—कीकर की लकडी

---

१ खेत बडा घर साकरा।
२ खेत री बात तो खेडा ही कहदो
३ जेठा बेटा'र जेठा बजरा कठै पड्या है।

श्रेष्ठ और पीपल की निकृष्ट बताई गई है । यथा–

"कीकर काटी हल घड्या, रस बस की राघी खीर ।
न्यूत जिमावै भाणजो, कदे न निरफल जाय ।।
सीव काट खेती करै खर्चे कन्या घर जाय ।
पीपल काट'र हल घडै, वो जडा मूल से जाय ।।

(५) खात पड खेत, नी तो कूडो रेत

खाद देने से ही खेत वास्तव मे उपजाऊ होता है, नही तो वह कूडा करकट और मिट्टी के सिवाय कुछ नही है ।

वर्षा सम्बन्धी कहावतें

बीकानेर एक कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण यहा वर्षा के सम्बन्ध मे अनेक कहावतें प्रचलित हैं ।

(१) अम्बर राच्यो मेह माच्यो —
अर्थात आकाश म बादल आने पर मेह प्रारम्भ हो जाता है ।

(२) आधी साथै मेह आया करै –
आंधी के साथ वर्षा आया करती है । जब बादल बरसने प्रारम्भ कर देते हैं और सारा आकाश एक जैसा ही बादलो से आच्छादित हो जाता है, तो उसे दूध वरणो हुग्यो' कहा जाता है ।

(३) जब आधी प्रचण्ड वेग मे आती है और उसके पीछे वर्षा भी आ जाती है तो उसका वेग दब जाता है इसलिए 'आधी राड मेवा ऊ दबै' जैसी लोकोक्ति प्रचलित है ।

(४) एक मेह एक मेह करता तो बडका मरग्या —
अर्थात् फसल अच्छी होने के लिए एक वर्षा और हो जाये तो अच्छा रहे- ऐसा सोचते हुए ही हमारे पूर्वज मर गये, किन्तु उनकी इच्छा-पूर्ति नहीं हुई ।

(५) मेवा री माया बिरखा री छाया —
विश्व म हरियाली और सुखी जन जीवन वर्षा के कारण ही होता है । वृक्षो की छाया अच्छी होती है यद्यपि वर्षा से ही जीवन बनता है, किन्तु यह तो जब होनी होनी है तब ही होती है और चाहे वर्षा होने के लिए कितनी ही पुकार करें ।[1] आसोज मे होने वाली वर्षा मोती के समान कीमती होनी है ।

१— मोरिया करलाआ चाहू बरसणो तो इन्दरिये रै हाथ है ।

उपर्युक्त कहावतो के अलावा वर्षा की कुछ भविष्यवाणी सम्बन्धी कहावतें भी यहाँ प्रचलित हैं।

६ ऋतु व महीनो सम्बघी कहावतें

बीकानेरी कहावतो में ऋतु और महीनो के लक्षण और उनके गुणावगुण अभिव्यक्त हुये हैं :—

(१) सर्दी भोगी री गर्मी रोगी री — अर्थात् सर्दी तो भोग विलास करने वालो के लिये, तथा गर्मी रोगी और गरीब के लिए उपयुक्त है।

(२) आप ही मर ज्यावै जेठ चालतो बार —
ज्येष्ठ मे गर्मी का चरमोत्कर्ष होता है, लुयें चलती हैं, ऐसी अवस्था में यात्रा करने वाला रास्ते मे ही मर जाता है।

(३) पो खालडी रो खो — पोष मास मे अत्यधिक सर्दी पडती है, अत चमडी भी ऐसी सर्दी मे नही रहती।

(४) माघ आधं, कामल कांधं— अर्थात् माघ मे सर्दी कम हो जाती है, अत कम्बल उतार कर कधे पर रख लिया जाता है।

(५) सावण सुरगो — सावण बडा हो सुरगा अर्थात हरियाली लिय हुए होता है।

(६) चेत चिडपडो — चैत्र मे कुछ-कुछ वर्षा की सम्भावना रहती है, तथा गर्मी सर्दी बराबर सी रहती है। अत इसे चिपचिपा कहा जाता है।

(७) कआर कातिक कूकर रोवै, गधा रोवै जेठा की भार।
रण्डवा रोवै सावण मे, सुण सुण विधुआरी झनार ॥

अर्थात् कातिक मे कुत्तों पर, जेष्ठ में गधो पर और श्रावण मे पुरुषो पर कामदेव का प्रहार होता है। अत इन महीनों से ये मादाओ को देख देख कर कामोत्तेजित हो जाते हैं।

७ तिथि व वार सम्बघी कहावते

भारतीय समाज, विशेष कर राजस्थान मे कई वार (Day) और तिथिया शुभ और कई अशुभ मानी गई है। इन शुभ और अशुभ दोनो पर ही कहावतें प्रचलित है.—

(१) थावर कीजे थरपना, बुध किजे व्योपार — अर्थात् किसी नय

कार्य को शनिवार के दिन और व्यापार-कार्य बुधवार के दिन प्रारम्भ करना चाहिये – ये शुभ होते हैं।

मगल मुखी सदा सुखी — मगलवार का दिन सदा सुख देने वाला होता है।

(३) मगल बुध, बिस्पतवार, कपडा पैरीजै तीन बार — अर्थात् मगलवार, बुधवार और वृहस्पतिवार को ही नये वस्त्र धारण करने चाहिये।

(४) होली सुक्र शनीचरी मगलवारी होय ।
चाक चोहड़ै मेदणी विरलाजो यँ कोय ॥

अर्थात होली अगर शुक्रवार, शनिवार और मगलवार के दिन आती है तो फिर यह बडी अशुभ होती है और कोइ भाग्यवान ही बचा रहता है।

(५) मगलवारी मावसी, फागण चैती जोय ।
पशु वेचो अन्न सग्रहो अवस दुकालो हाय ॥

अर्थात अगर फाल्गुन या चेत मे अमावस्या मगलवार को आ जाती है तो यह निश्चित है कि अगले दो वर्षो मे अकाल पडेगा ।

(८) शकुन सम्बन्धी कहावतें

भारतवर्ष मे शकुन और अपशकुन का सदा से महत्व रहा है। बीकानेर क्षेत्र के लोग बिना शकुन लिये एक कदम भी बाहर नही निकालते थे । आज भी बहुत से ऐसे लोग हैं, जिनका शकुन विज्ञान पर पूरा विश्वास है। शकुन का निश्चय शरीर के अगो, जाति विशेष और पशु पक्षियो के आधार पर किया जाता है। जिनका विश्लेषण हम क्रमश नीचे करेंगे —

शारीरिक अगो द्वारा —

(१) आख फड्कै बाई कै वीर मिलै कै साई — अर्थात स्त्री की अगर बाई आख फडकती है तो उसे या तो भाई मिलता है या पति।

(२) आख फड्कै दहणी, लात घमाका सहणी — अगर स्त्री की दायी आख फडकती है तो निश्चय ही किसी से झगडा होता है।

(३) छीकणी पडगी – छीक का शकुन विज्ञान मे अपना निराला स्थान है। किसी मागलिक अवसर पर छीकना अशुभ होता है । यात्रा पर जाते समय छीक देने पर भी अशुभ माना गया है। वैसे दो बार की छीक अशुभ नहीं होती।

(४) छींकत खाजै, छींकत पीजै, छींकत रहिये सोय ।
छींकत पर घर न जाइये, चाहे सब सोना ही होय ॥

अर्थात छींक पर खाना, पीना और सोना कर लेना चाहिए, किन्तु पर घर कभी नहीं जाना चाहिए । इससे बिगाड़ की ही आशंका रहती है । 'छींकत पर घर जाय आछा कदे न होय' जैसी उक्तिया भी इस सम्बंध में प्रचलित हैं ।

जाति विशेष द्वारा

(१) बामण जो तिलक किया सामों आय मिलन्त ।
सकुन विचारे पथिया आसा सकल फलन्त ॥

अर्थात तिलकधारी ब्राह्मण रास्ते में मिलने पर कार्य सफल हो जाता है ।

(२) आटो काटो घी घड़ो, सुना वैसा नार ।
बाया भलो न दाहिणो स्याडी जरख सुनार ॥

अर्थात् आटा काटा, घी का घड़ा और विधवा स्त्री रास्ते में मिले हुए शुभ नहीं हैं और न ही जरख गीदड़ और सुनार मिले हुए शुभ है ।

पशु-पक्षियों द्वारा

(१) बाऊ तितर बाऊ स्याल बाऊ खर बोलें असराल ।
बाऊ घू घू घमका करें तो सबा को राज विभिषण करें ॥

अर्थात् तीतर सियार, गधा और उल्लू बायें बोले हुए बहुत ही शुभ होते हैं ।

(२) सदा भवानी दाहिणी, सन्मुख होय गणेश ।
पाच देव रिच्छा करें, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

भवानी से तात्पर्य यहा सोन चिडी या 'सकुन चिरैया' से है जो दाहिनी ओर आने पर शुभ मानी जाती है ।

यद्यपि शकुनों के पीछे मानव-मनोविज्ञान कार्य करता है, किन्तु जहां ईश्वर के प्रति आस्था हो और ईश्वर की कृपा हो तो शकुन कुछ भी नहीं कर सकते । 'सुगण बडा क स्याम' जैसी कहावतों में यह निश्चित रूप से व्यक्त हुआ है कि ईश्वर की ही सत्ता और शक्ति सर्वोच्च है

६ मनोवैज्ञानिक कहावतें—

कहावत और मनोविज्ञान का गहरा सम्बंध है । कहावतों के माध्यम से जाति विशेष और व्यक्ति विशेष के विभिन्न क्रिया-कलापों का अध्ययन किया जा

सकता है।

कई बार हम देखते हैं, कि झगड़ा हमारा किसी दूसरे से होता है और क्रोध घर के किसी व्यक्ति पर उतारते हैं। दफ्तर में क्लर्क पर अफसर की डाट पड़ती है, वह घर आकर बच्चों को डाट कर बदला ले लेता है। विद्यार्थियों के परीक्षा में कम अंक आने पर आमतौर पर सुना जाता है कि 'परीक्षक बीबी से लड़कर बैठा होगा।"

कहावतों का सम्बंध मुख्यतः जीवन के क्रिया-कलापों से रहता है। दर्शन शास्त्र की तरह उन मे तात्विक विश्लेषण तो नही मिलता किन्तु फिर भी बहुत सी कहावतों म मानव मन की अभिव्यक्ति स्पष्टतः होती पाई जाती है।[1]

बीकानेरी कहावतों में मनोविज्ञान सम्बंधी कहावतें बहुत प्रचलित हैं —

(१) कुंभार रो कुंभारी पर जोर चालै कोयनी र, गधेडै रा कान मरोडै — अर्थात कुम्हार अपनी पत्नी को डाट नही सकता अतः वह गधे को पीटता है। यह स्वभाविक भी है मनुष्य अपने गुस्से का निवारण कमजोर पर करता है।

(२) बकरी दूध तो दे पण मींगणी मिला के—अर्थात बकरी दूध तो देती है मगर मैंगणी मिला कर देती है।

आदत से लाचार होने के कारण मजे को किरकिरा करके कार्य करने वाले के लिए उक्त लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

(३) खाली घडा झाल मारै[2]—आधा भरा हुआ घडा झाल मारता है। अर्थात् अधूरे ज्ञान वाला व्यक्ति ही अधिक उछलता फिरता है। जब कोई व्यक्ति बुराई की ओर अग्रसर हो जाता है तो, उसे कोई नहीं रोक सकता। झूठ बोलने वाला फिर और भी अधिक झूठ बोलता चला जाता है। 'धरत्या सोवणियों र झूठ बोलणियों सकडेलो क्यूं भुगते"—अर्थात् धरती पर सोने वाला और झूठ बोलने वाला तगी क्यो भुगते ? मन के लड्डू खाने वाला थोडे और फीके ही क्यों खावे ?[3]

जिसने शर्म लज्जा को छोड ही दिया है उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है ?[4] जिस व्यक्ति को कोई कार्य करना है वह करेगा ही, देखने वाला चाहे कुछ

---

१ डॉ० कन्हैयालाल सहल--राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन, पृ० १८५

२ मि० अधजल गगरी छलकत जाय।

३ मन रा लाडू फीका क्यूं ?

४ उतार दी लोइ तो करै ला कोई

मि० 'छाड दई कुलकी कानि, का करि है कोई । (मीरां पदावली

भी रहता रहे ।[1]

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जो जितना कमजोर होगा, उसे उतना ही अधिक गुस्सा आयेगा ।[2] झगड़े में कोई हाथों से कार्य लेता है, और कोई मुंह से गालियां बकता है ।[3] किन्तु झगड़ा कभी एक पक्षीय भी नहीं हो सकता ।[4]

(४) आपरी मा नै भुण डावण कवै — अपनी मां को कौन डायन बताये । अपनी चीज को कोई बुरा नहीं बताता । लेकिन यह भी एक शाश्वत सत्य है कि दोषी व्यक्ति अपनी हानि के लिए खुलकर किसी को भी नहीं कह सकते ।[5] अपराधी के साथ बात-चीत करने पर वह हमेशा चौकन्ना रहता है, और 'पाळो हालो पैली करकै'[6] वाली कहावत चरितार्थ कर देता है ।

(५) चोर चोरी ऊ गयो पण हेरा फेरी ऊ को गयो नी[7] — अर्थात् चोर चोरी छोड़ देता है किन्तु चीजों को इधर-उधर करने की आदत उसमें फिर भी रहती है ।

जिद्दी आदमी कभी अपनी जिद्द नहीं छोड़ता । "नकटा थारी नाक कटी, म्हारी तो सवा हाथ बधी" अर्थात् नकटे को कहते हैं तुम्हारी नाक कट गई है, तो जवाब देता है मेरी तो सवा हाथ बढ गई है । इसी के समानान्तर एक लोकोक्ति प्रचलित है — "नकटा थारै माई रूख उग्यो म्हारी छाया बैठ सू" कहते हैं नकटा तेरे अन्दर पेड़ उग गया है, तो कहता है कि ठीक है मैं इसकी छाया में बैठूंगा ।

अज्ञानी आदमी के लिये अगर अच्छा कार्य करेंगे तो भी वह समझेगा कि मेरा बुरा किया जा रहा है ।[8]

१— नीचो कर्‌यो काधो देखणियो आदो ।
२— कमजोर गुस्सो घणो
३— कीरा हाथ चालै, की रो मुंह ।
४— ताली एक हाथ सू को बाजै नी ।
५— चोर री मा ओवरी म रोवै ।
६— मि० चोर की दाढी मे तिनका ।
७— पाठा० चोर चोरी ऊ गयो पण, जूती सरकाणऊ थोडो गयो ।
मि० — उ ठ लादणै ऊ गयो तो पादणै ऊ थोडो गयो ।
८— गधे री आख मे घी घालै, क मेरी फोडै है ।

पशु-पक्षियो सम्बन्धी कहावतें

(क) पशु सम्बन्धी

ऊट:—

यह सर्व विदित है कि ऊट रेगिस्तान का जहाज हैं। बीकानेर क्षेत्र एक रेगिस्तानी क्षेत्र है। 'करहल्ल बीकानेर' जैसी कहावतो मे बीकानेर के ऊट की उपादेयता अभिव्यक्त हुई है।

(१) ऊट नै चढता ही ठाए नही घालणो

ऊट की तेज चाल को ठाण कहते हैं। ऊट पर सवार होते ही, तेज चाल पर नही छोडना चाहिये, क्योकि इससे वह जल्दी ही थक जाता है।

(२) टीबडी री ओट मे टोडिये रै लापडन री मन मे

अर्थात् जैसे ही धोरे का ढलान आता है, टोडिया (ऊट का बच्चा) उछलने की सोचता है। क्योंकि ऐसी जगह में उछलने मे आसानी रहती है।

(३) अकल बिना ऊट उभाणा फिरै

अर्थात् अकल के अभाव मे ऊट नगे पाव फिरता है। किसी ज्यादा खाने वाले को थोडा खाने को दिया जाता है, तो ऊट के मुह मे मानो जीरा दिया जा रहा है।[1] ऊट फाल्गुन मास में मस्ती करता है, जिससे उसकी खोपडी से मद-रस भी झरता है।[2] ऊट की लात से हमेशा बचना चाहिये।[3] ऊट के बारे मे प्रसिद्ध है कि यह बोले बिना नही रह सकता चाहे उसे फिटकरी खिलाओ चाहे गुड।[4]

घोडा

ऊट के पश्चात घोडे का भी बीकानेर म अपना विशिष्ट महत्व है। इस पर भी अनेक कहावतें मिलती हैं—

(१) चोथी पीठ तुरग री, सरग निसानी च्यार

अर्थात् स्वर्गिक सुख के लिये घोडे की सवारी आवश्यक है।

(२, खेल खिलाडया रा, घोडा असवारा रा —

खेल खिलाडियो के लिये है और घोडे सवारो के लिये ही लाभदायक

१— ऊट रै मुह मे जीरै रो भुगार।

२— ऊटा रै मद झरै।

३— ऊट री टाप खोटी।

४— ऊट फिटकडी दिया ही अरलावै'र गुड दिया भी।

होते हैं।

(३) गधो घोड़ो एक भाव

किसी उत्कृष्ट और निकृष्ट वस्तु के बारे मे समान विचारों के सन्दर्भ में उक्त लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

(४) घोडो, मकोडो पकड्या पछै छोडै थोडो

घोडा और मकोडा पकडने के बाद कम ही छोडता है।

किसी के घर मे जान बूझकर किसी आफत को ले आने को भी घर म घोडो घाल लियो' कह कर अभिव्यक्त किया जाता है। किसी कार्य में रिस्क उठाने से पहले भी नया तो घोडो घोडा म, नया चोरां लेली" जैसी कहावत सुनी जाती है।

बल

बैल गाडी तथा हल में जोतने के काम मे लाया जाता है। तेली का बैल तो बेचारा अपनी दयनीयता के लिये प्रसिद्ध है। बैल मूर्खता का भी प्रतीक माना जाता है।

(१) नयो बलद खूंटो तोडै — नया बैल खूंटा तुडाने का प्रयत्न करता है, अपने पुराने मालिक के पास जाने के लिये।

(२) चाल बलदिया तेरो धणी कै जिया — अर्थात बैल उतना निरीह पशु है, कि उसका मालिक जिधर ले जाना चाहे उधर ही चल पडता है। बैलो की नस्ल मे नागोरी बैल श्रेष्ठ माना जाता है, किसी मूर्ख को भी बैल की सज्ञा देना बहुतायत से प्रचलित है।

'बलद पिलाणू गोरियो" — जैसी कहावतो से पता चलता है कि सफेद रग के बैल का अपना महत्त्व है। अनपढ आदमी के लिये लिखी हुई चीज बैल के मूत्र से बनी लकीरें ही होती हैं।[1]

इस प्रकार बीकानेरी कहावतो मे बैल के विभिन्न रूपो का प्रतिपादन हुआ है।

गाय

भारतीय सस्कृति मे गाय को माता का प्रतीक माना गया है। गाय दूध

१— बलद मूतणी।

देकर हमारा पालन पोषण करती है।

परवशता, आत्म समर्पण, दया आदि के प्रतीक के रूप में 'काली गाय' की उक्ति प्रयुक्त की जाती है। गाय का दूध अत्यत ही पौष्टिक होता है। अतः उसकी तो लातें भी अच्छी लगती हैं,[1] किन्तु बिना दूध वाली को कोई नही पूछता।[2]

वैसे आज के युग में गाय रखना खर्चीला होता जा रहा है। अतः जिसके घर गाय नही होती वह आराम से सोता है,[3] किन्तु कभी कभार कोई व्यक्ति घर में गाय ले भी आता है, तो वह उपालम्भ का भागी बनता है।[4] पितरों की मुक्ति के लिये गाय का दान आवश्यक है।[5]

भैंस

भैंस दूध अधिक देती है। घर में भैंस ही रखनी चाहिये, चाहे सेर दूध देने वाली ही हो।[6] भैंस मूर्खता की प्रतीक है। अतः उसके सामने अगर रिझाने हेतु बीन या बासुरी की राग सुनाई जावे, तो उल्टा ही परिणाम होता है।[7] वैसे मोटापे पर भी भैंस का आरोप किया जाता है।[8] भैंस का रग भूरा अच्छा माना जाता है।[9] भैंस दूध तो देती है, किन्तु वह खाती बहुत है, और अपनी कमाई अपने पर ही खर्च कर लेती है।[10] किसी भैंस के कटिये की मृत्यु हो जाती है तो वह गवार आदि खा कर दूध देने लगती है।[11]

भैंस का रग काला होता है किन्तु छाते के रंग को देख कर चमक

१— दूजती गायरी तो लात्या भी सैणी पडै।
२— धीणेडी रै सार्थं, हीणेडी मारी जा।
३— गाय न बाछी नीद आवै आछी।
४— हे मेरी मावडी ! बावै नै काई मावडी, ल्या बांधी गावडी।
५— गऊ दान — महा कल्याण।
६— दूणो भैंस रो ही चाहे सेर ही हो।
७— भैंस आगै बीण बजाई, गोबर रो इनाम।
८— भैंस होरी है।
९— भूरली भैंस कालियो पाडो।
१०— भैंस आपरो गोबर ही को छोड़नी।
११— चाट माथै हिलेडी भैंस।

जाती है।[1] और उनके वश की समाप्ति होने लगती है, तो थानने बच्चे जनने प्रारम्भ कर देती है [2]

भेड

भेड भी एक मूर्ख जानवर है । एक भेड जिधर चल पडती है, सब उधर ही चल देंगी । इससे "भेड चाल" या 'भेडिया धसान" कहा जाता है । मेढो की लडाई विख्यात है। उनकी टक्कर बडी ठोस होती है [3] किसी के शर्त हार जाने पर भेड की बोली बोलने को कहा जाता है ।[4]

कुत्ता

कुत्ते स्वामी भक्ति के लिये प्रसिद्ध है । बनिजारा का कुत्ता तो लोक-गाथाओ म प्रसिद्ध हैं । वैसे कुत्ते को 'बिना भोगो रो फकीर कह कर दया का पात्र बताया गया है ।

'कुत्ता सम्पत' तथा "ब्राह्मण नाई कूकरो जात देख गुर्राय' जैसी लोको कितयो मे कुत्तो की लडाकू प्रवृत्ति का उल्लेख किया गया है । किसी के साथ दुर्व्यवहार करने को 'खायन कुत्ता खीर' की लोकोक्ति म अभिव्यक्त किया जाता है। गाली गलोज मे कुत्ते से रिश्तेदारी भी स्थापित की जाती है।[5] कुत्ते मे काम भावना कातिक म उद्दीप्त होती है ।[6]

बकरी

बीकानेर क्षेत्र रेगिस्तानी भू भाग म फैला हुआ है। यहा का प्रमुख पशु धन भेड और बकरी है। अत इनके सम्बन्ध मे अनेक कहावतें प्रचलित है।

बकरी दूध तो देती है लेकिन मेंगनी करे के ।[7] प्रसिद्ध है कि गूगा जाटी अर्थात भाद्र-कृष्ण-नवमी के बाद बकरिया दूध देना बद कर देती हैं[8] बकरे की

१— भैंस आपगे रग को देखैनी छतै नै देख बिद कैं ।

२— भैंस री मौत आवे जणा ब्यानणा पाडा जणनो सरू करदे ।

३— मीढ री टक्कर।

४— भेड बोली म्या ।

५— कुत्तै री ओलाद ।

६— क्वार कातिक कूकर रोवै ।

७— बकरी दूध तो दे, पण मींगणी मिला के ।

८— आई गगा जाटी र बकरी नाटी ।

मां कब तक कुशल मनावे ?[1] आखिर तो उसकी बनी हो ही जाती है। शनिवार को पाडे व बकरी की बलि की जाती है। अतः बकरे की मां कितने क शनीवार टालेगी।[2] बकरी को जितना अधिक खिलाया जायेगा, वह उसी अनुपात में दूध अधिक देगी।[3]

गधा

गधा मूर्खता के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। वैसे गधा एक सहनशील और परिश्रमी जीव है, किन्तु मूर्ख और अदूरदर्शी भी कम नहीं। वह कभी मर्यादित और संयमी नहीं हो सकता। उसका यती बनना उतना ही असम्भव है, जितना कि कौए का हंस और वेश्या का सती बनना।[4] गधा वास्तव में गधा ही है, और अन्य प्राणियों की तुलना में विपरीत आचरण करता है। उसमे काम भावना भी गर्मियों में ही तेज होती है।[5]

मानव का यह स्वभाव है कि मतलब के लिये गधे को भी बाप बना लेता है।[6] गधा इतना मूर्ख और नासमझ होता है कि वह समझता है कि "सावण सदा ही हर्यो रहसी" गधा बेचारा इतने बुरे रूप में प्रतिष्ठित है कि मूर्ख व्यक्ति की तुलना भी उससे की जाती है।[7]

यौवन मे हर मादा सुन्दर हो जाती है, अतः गधी भी यौवन आने पर सुन्दर लगने लगती है।[8] "उयो मन माने की बात" की तरह अगर मन को गधी के समान सुन्दर-गुणवाली स्त्री भी अच्छी लग जाती है, तो फिर श्रेष्ठ सौंदर्य वाली स्त्री भी कुछ नहीं।[9]

जहां गधे की दुलती प्रसिद्ध है, वहा "गधो, घधोडो मर्द सकोडो पकड जर्ण छोड नहीं" जैसी कहावत मे गधे की पकड शक्ति का प्रतिपादन होता है।

१— बकरै री मां कितने दिन खेर मनासी।

२— बकरै री मा किता थावर टालसी।

३— बकरी री जाड मे दूध।

४— काग हंस न वेस्या सती न गधो जती।

५— गधडै रै जेठ मे धूधो चढै।

६— आपरै मतलब गधो बाप।

७— ढोल् बायरो गधेड़े ज्यूं।

८— जोबण मे तो गधी भी फूटरी लागै।

९— मन मिल्या गधी सैं तो परी कांई चीज है।

पक्षियो सम्बन्धी कहावतें

कौआ

कौआ एक निकृष्ट पक्षी के रूप में माना जाता है, किन्तु श्राद्ध-पक्ष में तो "आदरू दे दे बोलियत वायस बलो की बेर"[1] के अनुसार वह सम्माननीय भी बन जाता है। शकुन विज्ञान के क्षेत्र में भी कौए का स्थान महत्वपूर्ण है। घर में सुबह सुबह कौए का बोलना किसी अतिथि के आने का पूर्वाभास है। "उड उड रे म्हारा काला रे कागला" जैसे लोक गीतों में कौए का संदेश-वाहक का रूप भी चित्रित हुआ। चालाकी में तो कौआ अद्वितीय है। 'काग रो भाग बडो री सजनी, हरि हाथ सू ले गयो माखण रोटी" (रसखान) जैसे कथनों मे उसकी धृष्टता का भी उल्लेख मिलता है।

बीकानेरी कहावतो म कौए का निकृष्ट रूप ही चित्रित हुआ है। यथा

(१) काग पढायो पींजरै, पढग्यो चारू वेद।
समझायो समझ्यो नहीं, रह्यो ढेढ को ढेढ ॥

अर्थात् कौए को पीजरे मे रख कर चारों वेदो का अध्ययन करवाया गया किंतु समझाने पर भी वह नही समझ सका और अन्त म कौआ का कौआ ही बना रहा।

कौआ पक्षियो म सर्वाधिक चालाक पक्षी होता है।[2] कौआ हस बनने का प्रयास करे तो भी नही बन सकता[3] और परिणाम स्वरूप अपनी गति भी भूल जाता है।[4] कहते हैं अगर कौए के पास पहनने को वस्त्र हो, तो उडते हुए भी नजर आ जायें।[5] सर पर कौआ बोलने का तात्पर्य वहाँ पिटाई होने का सन्देश होता है।[6] जितना अधिक कौआ समझदार होगा, उतना ही अधिक मैल मे अपनी चोंच देगा।[7]

१— मरत प्यास पिंजरे परयो सूआ समै के फेर।
आदरू दे द बोलियत, वायस बलो की बेर ॥ — रहीम

२— नरा मे न०वा, पख्या मे क०वा। पाठा० नरों में नाई पखेरू म काग।

३— कागो हस न गयो जति।

४— कागलो हस री चाल सिखै हो, पण आपरी ही भूलग्यो।

५— कागला के काछडा हो तो उडता के ही दीसै।

६— माथै पर कागलो बोलै।

७— स्याणों कागलो घणो गू मे चाच दे।

चील

चील मांस भक्षिणी होती है। किसी चीज को खाने वाले के घर मे उस चीज को ढूंढना, चील के घोंसले मे मास के ढूंढने के बराबर है।[1] कहते हैं चील सोने की बड़ी प्रेमिका होती है, और घोंसले मे सोना रखती है।[2] वायुयान को भी चील गाडी के नाम से पुकारा जाता है।[3]

कबूतर

कबूतर एक भोला और ब्राह्मण पक्षी माना जाता है। उस पर कोई संकट आने पर वह कुयें की तरफ दौडता है।[4] धीरे-धीरे बोलना भी "कबूतर की गुटरगू" की तरह होता है। कबूतर नहाने के विषय मे नियम का पक्का माना जाता है।[5] जब बिल्ली खाने के लिये झपटती है तो कबूतर अपनी आखें बन्दकर लेता है, और सोचता है कि बिल्ली नही आ रही है।[6]

कमेड़ी

कमेडी बीकानेर की लोक-कथाओ मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती आई है। 'जाट की ज्वार' और कमेडी तो लोक कथाओ का विशेष आकर्षण रहे हैं। इसे 'मोडी' भी कहते हैं। ओले कमेडी को विशेष दुख पहुचाते हैं।[7] बाज और कमेडी के स्वभाव मे बहुत अन्तर होता है।[8]

निकृष्ट शिकारी को भी "कमेडी मार" की सज्ञा दी जाती है।

चिड़िया

चिडिया शोर मचाने के लिये कुख्यात है। वैसे चिडी हिन्दी साहित्य मे

---

१. चील रै आलणै मे मास ढूंढणो।
२. चील रै आलणै मे सोनो।
३. एक लोकगीत की पंक्तिया—आकासा मे तो चील गाडी धास दौवै है, कायनी खाऊ रै सूजो रो सीरो वास आवै है।

४. कबूतर नै कूवो दीसै।
५ कबूतर नहाण।
६ बिल्ली नै देख'र कबूतर आंख्या मोचलै।
७ ओलै मार्‌योडी कमेडी।
[illegible] को पूगैनी

अपने प्रारम्भिक काल से ही महत्त्व पाती रही है। 'चिड़ी चोंच भर ले गई नदी न घट्यो नीर' एक प्राचीन कहावत है। 'चूहू-चूहू चिरियन करे अति सोर" जैसी पंक्तियाँ भी हिन्दी साहित्य में चिड़िया के महत्त्व को प्रतिपादित करती है। लोक-कथाओं में भी—'उडी चिडी, फुर्रर, उडी चिडी फुर्रर " जैसी उक्तियाँ लोकोक्तियों के रूप में प्रचलित हैं।

(ग) अन्य जीव जन्तुओं सम्बंधी कहावतें

पहले पशु पक्षियों के सम्बन्ध में प्रचलित लोकोक्तियों का अध्ययन किया गया। इनके अलावा और भी अन्य निकृष्ट कोटि के जीव जन्तु हैं जिन पर लोकोक्तियाँ मिलती हैं—

चूहा

चूहे की अपनी प्रकृति है और उसके जन्म लेने वाला बच्चा बिल ही खोदता है।[1] भूख लगने पर पेट में चूहे जैसे कूदने की अनुभूति होती है।[2] इस 'पेट में उन्दरा कुदती करें" की कहावत से अभिव्यक्त किया जाता है। चूहे के दांत अत्यंत ही पैने होते हैं।[3] और मूँछें फरकाने की भी छटा अलग ही है।[4]

खेतों का दुश्मन चूहा है— आधो धन उंदर ख्यावै' जैसी कहावत में इस ओर स्पष्ट संकेत किया गया है।

साँप

सर्प का विष तीक्ष्ण होता है। वह चाहे छोटा हो चाहे बड़ा समान रूप से दंश करता है।[5] सर्प चूहे आदि के बिल पर ही अपना अधिकार करके, अपना बना लेता है।[6]

किसी विशेष चीज को देखकर 'साप सलीटिया तो सदा ही देख्या इजगर बाबो अबकै देख्यो' जैसी कहावत का प्रयोग किया जाता है। साप डसने में किसी

१ ऊन्दरे रा जाया बिल ही खोदै।
२ पेट म ऊन्दरा कूदै।
३ ऊन्दरे री दाँतर्‌या।
४ ऊन्दरे री मूछ्‌या।
५ साप रो बचियो क्या छोटो क्या बडो।
६ साप किसा बिल खोदै है।

के साथ रिश्तेदारी नही बरतता[1] दो समान गुणो वाले व्यक्तियों के लिए भी सांप-
नाथ और नागनाथ की संज्ञा दी जाती है।[2] सर्प का काटा व्यक्ति कम ही बच
पाता है। अतः उसे मौत के नाम से भी पुकारा जाता है।[3]

छिपकली

छिपकली मांस भक्षी होती है। छोटे-छोटे जीवों को खाकर अपना पेट
पालती है। जितनी शरीफ छिपकली होगी, वह उतने ही अधिक जानवर खाने मे
सफल होगी।[4] छिपकली का जहर बड़ा खतरनाक होता है,[5] किसी को छिपकली
छू जाने पर मोने के पानी के छीटे देकर जहर उतारा जाता है।

मक्खी

मक्खी समाज की दुश्मन होती है। बहुत सी बीमारियां मक्खियो के
कारण फैलती है। मक्खियो के विषय में बहुत सी कहावतें प्रचलित हैं।

किसी व्यक्ति को व्यग्य-व्यंग्य में ही कह देते हैं "जींवता रो माख्या रै
भाग नै" अर्थात् मक्खियों के भाग्य के लिये जीवित रहो। किसी व्यक्ति विशेष
की कठोरता पर कटाक्ष करते हुए, कठोर गुड से तुलना कर देते हैं, जिसे मक्खियां
नहीं खा सकती।[6] कृपण व्यक्ति मक्खियो का रस चूसने वाले माने जाते हैं,[7]
तो बेकार बैठा व्यक्ति मक्खी मारने वाला कहलाता है,[8] किसी मीठी चीज से
विशेष प्रेम रखना मक्खीपन के लक्षण हैं,[9] और जानबूझ कर झूठ
बोलना मक्खी को निगलना है।[10] वैसे आजकल चेचक के दाग युक्त मुंह को
"मों माख्या रो छतो" कहा जाता है।

---

१. सांपा रै किसी मासी।
२. जिसा साप नाथ, विसा नाग नाथ।
३. सांप सामे चालती मौत है।
४. सुदो छिपकली घणा जिनावर खा।
५. छिपकली रो जहर को उतरैनो।
६. इसो गुड गीलो कोनी क माखी चाटज्या।
७. मक्खी चूस
८. माखी मार।
९. माखी हुग्यो।
... माखी गिटणो।

भूंडिया

यह गुंगले की जाति का छोटा जीव होता है। इसका निवास गोबर मे होता है।[1] यह कालेपन का प्रतीक है। और काले रग के व्यक्ति के लिए यह सशक्त उपमा का काम देता है।[2]

चीटी

चीटिया एकता और परिश्रम की प्रतीक है। चींटिया अनाज लेजा लेजा कर इकट्ठे करती रहती हैं, खाती नही है।[3] इनके सचय को आधार मान कर ही 'कीडी सींचे तीतर खाय' जैसी कहावत का प्रचलन हुआ है। तुच्छ व्यक्ति भी कोई शैतानी का कार्य करने का प्रयास करता है तो वह कार्य चींटी के पर निकालने के समान होता है।[4] वैसे कहा जाता है कि चींटी के पर निकलने का तात्पर्य उसके अन्तकाल निकट आने से है। 'कीडी नगरो' पर आटा आदि डालने की परम्परा इस क्षेत्र मे विशेष पुण्य का कार्य समझा जाता है।

मच्छर

मच्छर रोग के घर होत हैं। जहा मच्छर अधिक होते हैं, उस जगह को राज्यस्थली घोषित कर दिया जाता है।[5] 'माछर तो कान मे बोले' कहावत मे मच्छरो की प्रवृत्ति का प्रतिपादन हुआ है।

पशु-पक्षी एव जीव-जन्तु तुलनात्मक कहावतें

पहले हमने पशु-पक्षियो और जीव-जन्तुओ क विषय मे प्रचलित कहावतो का अध्ययन किया। इनकी कुछ तुलनात्मक कहावतें भी यहा दी जा रही हैं —

(१) काग पडै, कुत्ता लुवै।

(२) कागा हस न गधो जती।

१— भूंडयो गोबर खोदे।

२— कीडी रै पेट मे गाठ।

३— कीडी सींचे तीतर खाय
पापी रो धन प्रलय जाय।

४— कीडी रे पाख निकलग्या।
कीडी री मोत आवे जणा उडणो सरू कर दें।

५— माछरां रो राज।

(३) गादड री हुक हुकी, ऊंट री लुटलुटी ।

(४) खटमलियो लोई रो पिऊ, माछर मान मे बोलै ।
पिस्सू इक उछल के मारै, राल्यूं छाती छोलै ।।

(५) चिड़कली रै च्यार कान, ल्योल्या रै नो कान ।

(६) गाय माता गोमती, बाछो गणेस ।
भैंस राड भूतणी, पाडो पलेत ।।

(७) गार्गैरी गाय, सार्गैरी बाछी ।

११ धर्म और जीवन-दर्शन सम्बन्धी कहावतें

बीकानेरी कहावतो मे धर्म और जीवन-दर्शन सम्बन्धी काफी कहावतें प्रचलित हैं । इनके अन्तर्गत ईश्वर, नैतिक मूल्यांकन, लोक विश्वास और जन्मान्तर वाद सम्बन्धी कहावतें रखी जा सकती हैं ।

(क) ईश्वर सम्बन्धी

(१) घट घट रो वासी — अर्थात् ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के शरीर मे निवास करता है ।

(२) आत्मा सो परमात्मा— प्रत्येक आत्मा परमात्मा का ही अंश है ।

(३) कण कण मे भगवान — सृष्टि के प्रत्येक अणु-परमाणु मे ईश्वर का निवास है ।

(४) भोलै रो भगवान — अर्थात् नासमझ और निर्दोष का ईश्वर ही सहायक होता है, इसी सन्दर्भ मे कहा जा सकता है – "आधे री माखी राम उड़ावै" ।

(५) मानै तो देव नहीं भीत रा लेव — आस्था रखने पर ही देवत्व की स्थापना होती है, अन्यथा तो वह भीत पर लगाया जाने वाली मिट्टी ही है ।

(६) भगवान तो बासना रा भूखा है– ईश्वर तो उपासना से ही प्रसन्न हो जाते हैं । जो पैदा करता है, वही उसका भरण पोषण भी करता है,[1] वह ईश्वर सबको देता है, यहा तक कि अजगर जगल मे पडा रहता है, तो भी उसका

१— चाच दी भकोही चुग्गो देसी ।

भरण पोपण होता है ।[1] हा ईश्वर के घर में देर अवश्य हो सकती है, अधेर नही होता ।[2] जिस पर ईश्वर की कृपा होती है, उसे अकस्मात ही बहुत कुछ प्राप्त हो जाता है ।[3]

(ख) नैतिकता सम्बन्धी

(१) साच नै आंच कायनी — सांच को आच नही है ।

(२) नीत गेल बरकत — नीयत के अनुसार बरकत होती है ।

(३) जहर खासी कको मरसी — जो विष पान करेगा वही मरेगा ।

(४) चरसी चूगणा, तो होसी दूणा ।

अर्थात जितना अधिक दान दिया जायगा, उतना ही अधिक लाभ होगा।

(५ भूसै री थावडियावै, पण भूठै री को थावडैनी — भूला सम्हल सकता है भूठा कभी नही ।

(६) तरवारा रा घाव भरज्या, पण बात रा को भरे नो — तलवार का लगा घाव ठीक हो जाता है, मगर बात का नहीं होता।

(७) दूसरे री भैण बेटी न आपणी समभणी — दूसरे की बहन बेटी को अपनी भी बहिन बेटी समझनी चाहिये ।

(ग) लोक विश्वास

यह असत्य विश्वास का ही दूसरा नाम है । लोक-विश्वास अध विश्वास नही हो सकता । अध विश्वास का प्रश्न तो तब खडा होता है, जब किसी व्यक्ति अथवा समाज के बौद्धिक विश्वास के साथ लोक-विश्वासा का सामजस्य न बैठता हो ।[4]

बीकानेरी कहावतो म लोक विश्वास भी व्यक्त हुए है —

(१) सिर बडा सरदारा रा पग बडा मरदार रा —

१— अजगर पडो उजाड मे दाता देवण हार ।

मि० अजगर करे न चाकरी पछी करे न काम ।

दास मलूका कह गये सबके दाता राम ॥ — (मलूकदास)

२— देर है अन्धेर कायनी (राम रे घर म)

३— देवण हालो छात फाड र दे दे ।

४— डॉ० कन्हैयालाल सहल — राजस्थानी कहावतें - एक अध्ययन पृ० २१५

अर्थात् सरदार का सर और कायर के पांव बड़े होते हैं।

(२) थावर री थावर, बिसा गांव बलै है — प्रत्येक शनिवार को गाव थोड़ा ही जलता है।

(३) काणो, खोडो, खाबलो ऐंचा ताणो होय।
इनसे बात तब करे जद हाथ पेसलो होय।

अर्थात् काने खोड़े और हाथ टूटे हुए तथा आंखों में फर्क वाले व्यक्ति से बात कठोरता के साथ करनी चाहिये।

(४) काणो कै बात नही, खोड़ै नै बुलाश्रो सही।
खोडो करी आगे पुकार, मैं खाई गजे सैं हार,
गंजो बोल्यो जिसकी छाती पर नही बाल,
ऐं'सू परमात्मा पासै टाल।

ऐसा लोक-विश्वास है कि काना खोडा गन्जा और जिसकी छाती पर बाल नही होते हैं, ऐसे व्यक्ति से तो ईश्वर भी बच कर रहते हैं, अर्थात् ये बड़े ही श्रौगणगारी होते हैं।

जीवन-दर्शन सम्बन्धी

(क) भाग्य व कर्मवाद

भारतीय संस्कृति कर्म-प्रधान संस्कृति रही है। भाग्य और कर्म के सम्बन्ध मे बीकानेरी कहावतों का खजाना खाली नही कहा जा सकता।

(१) करम मे पोडी नो खोल के कुण ले जाय — भाग्य मे घोडी लिखी हुई है, तो कोई खोल कर नहीं ले जा सकता।

(२) करमा मे कंकर तो काई करे शिव संकर — भाग्य मे कंकर ही लिखे हुए हैं, तो शिवजी भी कुछ नही कर सकते।

(३) करम आगै काकरो — भाग्य के सामने अवरोधक आना।

(४) बेमाता रा लिख्योडा को टल्'नी— भाग्य लेखिका माता के लिखे हुए कभी टल नहीं सकते।

(५) हुणी नै निमस्कार — होनी वाली को नमस्कार।

(६) करमहीण खेती करै, काल पड़ै क बलद मरै — भाग्यहीन खेती करता है, या तो अकाल पड़ता है, या फिर बैल ही मर जाते हैं।

सबकी किस्मत एक जैसी नही होती है और सब अपने अपने किस्मत का लिखा ही खाते है,[1] जगल मे पडो अजगर को भी तो भाग्य से ही मिलता है ।[2] रूप-सौन्दर्य से कुछ नही होता अगर भाग्य साथ नही है । अगर भाग्य साथ हो तो बिना रूप सौन्दर्य के भी आनन्द के साथ जीवन व्यतीत होता है ।[3] प्रत्येक दाने पर खाने वाले का नाम अकित होता है ।[4]

व्यक्ति ससार मे जैसा करता है, वैसा फल भी प्राप्त करता है ।[5] अपने किये का मनुष्य स्वय ही उत्तरदायी होता है ।[6] इस किये की सजा चाहे बाप हो, चाहे पुत्र सबको समान रूप से मिलती है ।[7] पूर्व जन्म के पुण्य का भी बडा भारी महत्त्व है । यथा —

बिना पुरबलै पुन्न किया, माग्या मिले न च्यारि ।
धन सन्तान जीवन-सरीर, विद्या और वर-नारि ॥

अर्थात् पूर्व जन्म के पुण्य के बिना धन, सन्तान, यौवन, विद्या और सुन्दर पत्नी प्राप्त नही होती ।

जन्मान्तर वाद

(१) जलम-जलम रा वैर ।

अनेक जन्मो की शत्रुता । सात जन्मो का स्नेह भी विख्यात है ।[8] अनैतिक और निकृष्ट कार्य करने वाला, भारतीय सस्कृति के अनुसार अगले जन्म मे कुत्ता बनता है,[9] और इस प्रकार के चौरासी लाख योनियो मे दुख भोगता है ।[10]

१— आपरै भाग रो खावै ।
२— इजगर पडी उजाड मे दाता देवण हाल ।
३— रूप की रोवै करम की खा ।
४— दाणै-दाणै पर मोहर छाप है ।
५— जैसी करणी, वैसी भरणी ।
६— अपणी करणी पार उतरणी ।
७— करणी भोगै आपकी, क्या बेटो क्या बाप ।
८— सात जलम रो प्यार ।
९— अगले बोहत्तर मे कुत्तो बणसी ।
१०— चौरासी जूण पूरी करणी ।

ईश्वर-भजन करके जन्म सुधारना ही हमारा परम कर्त्तव्य है ।[1]

१२ अंग-उपांग सम्बन्धी कहावतें

बीकानेरी कहावतों में शारीरिक अंग-उपांग का चित्रण भी बहुत अच्छे ढंग से हुआ है । अंग-उपांगों में नाना भावाभिव्यक्तियां की गई हैं । यथा —

(१) पींच पणिहारी गावे है –

पैदल ही अधिक मार्ग तय करने पर पिंडलियों में दर्द होने लगता है तब इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है । 'पणिहारी' एक राग विशेष है ।

(२) पांचू आंगली एक सी को होवे नीं ।

हाथ की पांचों अंगुलियां एकसी नहीं होती, अर्थात् सभी व्यक्ति एकसे नहीं होते ।

(३) ओछी गोडी पहलवान —

कद में छोटे व्यक्ति को ओछी गोडी पहलवान कहते हैं ।

(४) सिर लियां जाणी भूण हो —

किसी के बड़े सर की तुलना कुयें पर लगी हुई चर्खी से की जाती है ।

(५) सौ नीच एक आख मींच —

अर्थात् सौ नीचों जितना दुष्ट एक काना व्यक्ति होता है ।

(६) या ईलाई दे लुगाई, पन्दरा सोला साल की ।
पतली कमर, तिरछी निजर, टाग्यां बिन बाल की ।।

अर्थात् हे खुदा ! पन्द्रह या सोलह वर्ष की आयु की पत्नी दे, जिसकी कटिक्षीण, नजर कटीली हो और टांगो पर रोमावली न हो । स्त्री के अंगो सम्बन्धी एक कहावत के अनुसार उसकी जंघायें, नितम्ब और स्तन पुष्ट ही होने चाहिये ।[2]

पुरुष की इज्जत उसकी मूछों में है । इज्जत जाना मूछों के पत्थर बंधने के बराबर है ।[3] ज्यादा यात्रा करने वाले व्यक्ति के बारे में कहा जाता है कि

१— जलम सुधारणो ।
२— लुगाई री जांघ, नितम्ब'र स्तन मठाई चोखा ।
३— मूछ्यां रै भाटो बांधणो ।

इसके पग मे चक्कर है ।[1] इज्जतदार व्यक्ति हमेशा नाक का स्वामी होता है ।[2]

इस प्रकार बीकानेरी कहावतो मे अग उपागो की स्पष्ट अभिव्यक्ति देखने को मिलती है ।

बीकानेरी कहावतो मे हास्य एव व्यग्य

बीकानेरी कहावतो मे अनेक ऐसी कहावतें है, जो बहुत ही चटपटी और साथ ही हास्य व्यग्य से आपूरित है । यथा—

(१) ठाकरॉं घोडी ठेसा देसी तीन, दो तो एकली हो देसी म्हेतो पैलॅ म ही मीचे प्रास्या ।

अर्थात ठाकुर साहब घोडी तीन उछाले खायेगी । दो तो अकेले ही खायेगी, मैं तो पहले मे ही गिर जाऊगा । प्रस्तुत लोकोक्ति मे ठाकुर के कथन म हास्य की उत्पत्ति होती है ।

(२) साधा कॅ किसो स्वाद, अरण बिलोयो ही खाले ।

अर्थात् सन्तो के क्या स्वाद है ये तो बिना मथा हुआ ही खा लेते हैं । तात्पर्य यही है कि दही ही खा लेते हैं ।

(४) अरण मिलिय रा त्यागी ।

अर्थात् कोई चीज मिलती नही है इसलिए त्यागी बन गये हैं । इसी सन्दर्भ म कहा जाता है ।

'मेरा रमज्यानिया सवा सेर की लपसी खाले पग खाले किस भडवे की ?'

(५) ऐरण री चोरी करॅ करॅ सुई री दान ।

चढ-चढ पिरोल देखसी कद आवॅ बीमाण ।।

अर्थात् कुल्हाडे की तो चोरी करत हैं तथा सुई का दान करते हैं फिर भी छत पर चढ कर स्वर्ग के विमान के आने की प्रतीक्षा मे रहते हैं ।

अज्ञानियो पर कटाक्ष करते हुए कहा गया है 'सारी रात रामायण बाची दिनगे पूछे सीता कीरो बाप हो ?' इसी तरह 'सारी रात रोया मरयो एक नहीं अथवा मरयो पडोसी रो जैसी कहावतें भी पूर्ण हास्य और व्यग्य का उत्कृष्ट उदाहरण हैं ।

१४ आशीर्वादात्मक कहावते

हमारे समाज म बहुत सी ऐसी कहावत प्रचलित हैं, जो अनन्त काल स

१— पाठा० पगथना री चक्कर ।

२— नाक री धणी ।

आशीर्वाद के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं। बीकानेरी कहावतों में चिरायु से लेकर पुत्रवति होने तक के आशीवंचन मिलते हैं।

—जब कोई वधू अपनी सास या सास के दर्जे की औरत के चरण स्पर्श करती है, तो वह आशीर्वाद देती हुई कहती है—'सीली हो सपूती हो सात टाबरां री मा हो।' वैसे आजकल सात टाबरों की महत्ता नहीं है, और परिवार नियोजन विभाग की ओर से 'घणा टाबर घणो दुख, थोड़ा टाबर घणो सुख' जैसी उक्तियां प्रचलित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशीवचन के रूप में बूढ सुहागण हो, हजारी उमर हो' और 'दूधां न्हाओ पूतां फलो' जैसी लोकोक्तियां भी प्रचलित है। 'पगे लागां' अभिवादन की, बीकानेर में जन प्रचलित लोकोक्ति है। और उत्तर स्वरूप 'राजी रंवो' प्रचलित है। चिर आयु की कामना करते हुए 'जुग-जुग जियो' का लाभ उठाते हुए 'बेटा पोता रा सुख देखो' जैसी कहावतें भी सुनने को मिलती है। वंश-वृद्धि की कामना करते हुए एक रा इक्कीस होवो' भी कहा जाता है।

इस प्रकार बीकानेरी कहावतों में आशीर्वाद के रूप में प्रचलित अनेक प्रकार की कहावतें हैं, जिनमें भारतीय संस्कृति के उत्कृष्ट रूप का दिग्दर्शन हुआ है।

खेल-कूद सम्बन्धी कहावतें

जहां आशीर्वाद स्वरूप बोले जाने वाले कथनों में कहावतें मिलती हैं वहाँ पर बच्चों द्वारा खेल जाने वाले अनेक खेलों में भी कहावतों का प्रयोग होता है।

(१) म्हें ही खेल्या म्हें ही ढाया —अर्थात् हमने खेल में बनाया और हमने ही नष्ट किया। बच्चे खेल-खेल में अनेक प्रकार के घर आदि बनाते हैं, और खेल समाप्त होने पर वे उन्हें नष्ट करते समय उक्त लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं।

(२) मेह बावो आओ सीटा फली ल्यायो—अर्थात् मेह बाबा आया है, सीटा फली आदि अनेक फल लाया है। वर्षा में स्नान करते हुए बच्चे उक्त लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। इसके साथ 'ढक्कणी ■ ढोक्लो मेह बावो मोक्लो' जैसी कहावतें भी बच्चे बोलते हैं।

(३) माणी माणी व गांटियो, बावोजी रो चोटियो —

बच्चे खेल खेल मे एक गोल चक्कर मे घूमते हुए उक्त लोकोक्ति बोलते हैं।

(४) अग्गड बुहार बाई बग्गड बुहार, तु बो पटकूं तेरे द्वार—बच्चों के एक साधु और गृहस्थी के खेल मे यह कहावत प्रयुक्त की जाती है।

(५) गोपी चन्दर भर्यो समुन्दर—बोल मेरी मछली कितणो पाणी।

(६) एक दो तीन सिगल की मशीन,
आगरे से आई, दिल्ली मे टकराई.
क्या करूं भाई, घर म नही लुगाई ॥

(७) गाडी आई गाडी आई परमल री
लाल घाघरो पानी को हर्यो पोमचो छाती ग,
मुगला टोपी टिकुरा, धोला दात नानी रा ॥

(८) अक्कड बक्कड बम्बे बो, अस्सी नब्बे पूरा सौ
सौ सलेटा, अस्सी बेटा, पान फूल ठाई ठस्स,
निन्नाणों मे घर मे चिड़िया बोली चराम चयूं चस।

(९) पाटी-पाटी सूख ज्या।
नल रो पानी नल मे ज्या ॥

(१०) अरण-मरण री ठेकरी, सरणाटा करती जाय।

इस प्रकार से बच्चो के खेल सम्बन्धी कहावतें बीकानेर क्षेत्र मे प्रचलित हैं। इधर १९६५ मे भारत पाक युद्ध के पश्चात् बच्चो मे एक नई लोकोक्ति भी प्रचलित हो गई। यथा —

(११) पाकिस्तानी बडो हरामी, टेढी टोपी राखै है।
तीन पैसा रो तेल मगावै, खुद रै सिर मे न्हावै है ॥

अन्य —

(१२) तेरी लकडी तोड तेरा बाट फोड, सिव गगे —अर्थात् शिव शकर ! तेरे तराजु को तोड देंगे, और बाटो को फोड देंगे, जिससे हम बिना तोले ही चीज खा लेंगे।

(१३) चोक च्यानणी भाटुडो, करदे मा लाडुडो।
लाडुडै मे घी घणो, मा बेटै रै जी घणो ॥

(१४) पिया बाबा रेवडी, घाल गले में जेवडी ।
जेवडी मे काटो, पीथो बाबो आटो ॥

उपर्युक्त कहावत मे 'पिया' व्यक्ति विशेष के नाम का उल्लेख है । बच्चे "टिकु-टिकु टिक्सो" की तरह अनेक व्यक्तियो के नाम पर उसके गुणावगुणो के आधार पर कहावतें बनाकर मनोरजन किया करते हैं ।

१६ आलस्य सम्बन्धी कहावतें

समाज का और देश का नाश आलस्य के कारण होता है । जहा पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने 'आराम हराम है' जैसा नारा दिया है, वहा बहुत से लोग आलस्य मे ही अपना जीवन त्याग देते है। इस सन्दर्भ मे बीकानेरी कहावतें देखिये —

१) न्हावै धोवै आलसी कुल्ला करे कपूत ।[1]
बिना मुह धोये रोटी खा, बो बेटो है सपूत ॥

अर्थात नहाना धोना आलसी करते हैं, कुपुत्र कुल्ले करते है, बिना मुह धोये रोटी खाने वाला पुत्र ही सुपुत्र होता है ।

(२) न्हार काई सासरे जाणो है ?—अर्थात् स्नान करके कौन सा सुसराल जाना है । नहाने धोने से कतराने वाले आलसियो के प्रति यह लोकोक्ति प्रचलित है ।

(३) दिवाली रो न्हायो होली पुग्यो—अर्थात् आलसी दीपावली पर स्नान करने के पश्चात होली पर ही स्नान करता है ।

(४) गोली जगत रा मगधो धाई पण आपरो धोना माथो दुखै.—
आलसी दासी बहुत से लोगो को स्नान करा देती है मगर खुद के लिए आलस्य आ जाता है ।

कई बार जब आलसियो से स्नान आदि करने को कहते हैं तो वह देते हैं कि "न्हायेडा चुल्ले में चल्या जासी, म्हें बेवणी मायँ हो पड्या रैस्यां"[2] अर्थात् स्नान करने वाले चुल्हे के अन्दर चले जायेंगे और हम तो बाहर ही रह लेंगे ।

---

१ पाठा०—न्हावै धोवै सूरडा, कुरल्ला करै कूकरो ।
बिना मुह धोये रोटी खावै, बो ही मर्द पूतरो ॥

२ पाठा०—न्हायोडा कुये मे चल्या जासी, म्हें वगड में पड्या रहस्यां ।

बच्चे खेल खेल मे एक गोल चक्कर मे घूमते हुए उक्त लोकोक्ति बोलते हैं।

(४) अगड़ बुहार बाई बगड बुहार, तु बी पटकू तेरे द्वार—बच्चों के एक साधु और गृहस्थी के खेल मे यह कहावत प्रयुक्त की जाती है।

(५) गोपी चन्दर भर्‌यो समुन्दर—बोल मेरी मछली कितणो पाणी।

(६) एक दो तीन सिगल की मशीन,
आगरे से आई, दिल्ली मे टकराई.
क्या करूं भाई, घर म नही लुगाई ॥

(७) गाडी आई गाडी आई परमल री
लाल घाघरो पानी को हरयो पोमचो छानी रा,
भुगला टोपी टिकुरा, धोला दात नानी रा ॥

(८) अक्कड बक्कड बम्बे बो, अस्सी नब्बे पूरा सो
सो सलेटा, अस्सी बेटा, पान फूल ठाई ठस्स
निम्नाणे मे घर मे चिडिया बोली च्याम च्यूं चस।

(९) पाटी-पाटी सूख ज्या।
नल रो पानी नल मे ज्या ॥

(१०) अरणा-मरणा री ठेकरी, सरणाटा करती जाय।

इस प्रकार से बच्चो के खेल सम्बन्धी कहावतें बीकानेर क्षेत्र मे प्रचलित है। इधर १९६५ मे भारत पाक युद्ध के पश्चात् बच्चो मे एक नई लोकोक्ति भी प्रचलित हो गई। यथा —

(११) पाकिस्तानी बडो हरामी, टेढी टोपी राखे है।
तीन पैसा री तेल मगावे, खुद रै सिर मे न्हावे है ॥

अन्य —

(१२) तेरी तकडी तोड तेरा बाट फोड, सिव गये —अर्थात् शिव शकर ! तेरे तराजु को तोड देंगे, और बाटो को फोड देंगे, जिससे हम बिना तोले ही चीज खा लेंगे।

(१३) चोक च्यानणी मादुडो, करदे मा लाडुडो।
लाडुडे में घी घणो, मा बेटे रै जी घणो ॥

(१४) पिया बाबा रेवडी, घाल गलै मे जेवडो ।
जेवडो मे काटो, पोयो बाबो आटो ॥

उपर्युक्त कहावत मे 'पिया' व्यक्ति विशेष के नाम का उल्लेख है । बच्चे "टिकु-टिकु टिक्सो' की तरह अनेक व्यक्तियो के नाम पर उसके गुणावगुणो के आधार पर कहावतें बनाकर मनोरजन किया करते हैं ।

१६ आलस्य सम्बन्धी कहावतें

समाज का और देश का नाश आलस्य के कारण होता है । जहा पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने 'आराम हराम है' जैसा नारा दिया है, वहा बहुत से लोग आलस्य मे ही अपना जीवन त्याग देते हैं । इस सन्दर्भ मे बीकानेरी कहावतें देखिये —

१) न्हावै धोवै आलसी कुल्ला करे कपूत ।[1]
बिना मुह धोये रोटी खा, बो बेटो है सपूत ॥

अर्थात् नहाना धोना आलसी करता है कुपुत्र कुरले करते हैं, बिना मुह धोये रोटी खाने वाला पुत्र ही सुपुत्र होता है ।

(२) न्हार कई सासरे जाणो है ?—अर्थात् स्नान करके कौन सा सुसराल जाना है । नहाने धोने से कतराने वाले आलसियो के प्रति यह लोकोक्ति प्रचलित है ।

(३) दिवाली रो न्हायो होली पुग्यो—अर्थात् आलसी दीपावली पर स्नान करने के पश्चात होली पर ही स्नान करता है ।

(४) गोली जगत रा पगधो धाई पण आपरो धोना मायो दुखै —
आलसी दासी बहुत से लोगो को स्नान करा देती है मगर खुद के लिये आलस्य आ जाता है ।

कई बार जब आलसियो से स्नान आदि करने को कहते हैं तो वह देते हैं कि न्हावेडा कुल्ले में चल्या जासी, म्हे बेवणी मायं ही पड्या रैस्यां'[2] अर्थात् स्नान करने वाले कुन्डे के अन्दर चले जायेंगे और हम तो बाहर ही रह लेंगे ।

---

१ पाठा०—न्हावै धोवै सूरडा, कुरल्या करै कूकरो ।
बिना मुह धोय रोटी खावै, बो ही मर्द फूटरो ॥
२ पाठा०—न्हायोडा कुये मे चल्या जासी, म्हे बगड मे पड्या रह्स्यां ।

इस प्रकार से उपर्युक्त कहावतो मे आलस्य और आलसियो का बखूबी विश्लेषण हुआ है।

१७. वार्ता सम्बन्धी कहावतें

लोक-कथायें अथवा 'बातें' कहते समय भी कहावतो का उपयोग किया जाता है। इससे बात कहने वाले का और बात का विशेष प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। इन कहावतो से कहानी के प्रति उत्सुकता बराबर बनी रहती है। ये कहावतें परम्परागत हैं।

बीकानेरी कहावतो मे भी इनकी एक बडी सख्या विद्यमान है। कहानी कहने वाला बीच-बीच मे "रामजी थानैं भला दिन दे" जैसी उक्तिया कहता रहता है।

'बाता मे हुकारा और फौजा में नगारा लागैं" का कहावत तो लोक-कथाओ मे बडी प्रसिद्ध है। कहानी मे वर्णित मार्ग को तय करने के सम्बन्ध मे "घर कू चा घर मजला" जैसी लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

प्रतिज्ञा-पालन के सम्बन्ध मे "तीजो वचन चूकू तो धोबी री कुड म पडू" जैसी उक्तिया प्रचलित हैं। बातो मे 'हुँकारो' के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है।

> "काणी कू रै कातरा, हुकारा भर रै मैय्या।
> आन्धलिये रै घर मे चोर बडग्या, भाग रै पागलिया।'

इस प्रकार वार्ता और कहानी सम्बन्धी अनेक कहावतें बीकानेरी-कहावती साहित्य मे उपलब्ध हैं।

= =

अध्याय / ५

बीकानेरी कहावतें और उनका भविष्य

कहावतें मानव-मनोविज्ञान की एक अद्भुत देन है। इनके द्वारा किसी देश, समाज विशेष और व्यक्ति विशेष के उत्थान-पतन, आचार-विचार, सभ्यता-संस्कृति तथा धर्म-धारणा आदि का सांगोपांग अध्ययन का द्वार उपलब्ध होता है। वास्तव में ये कहावतें लोक-जीवन का इतिहास होती हैं, और लोक-साहित्य की अद्भुत निधि।

आज का युग विज्ञान का युग है। इस युग को यांत्रिक युग, कलियुग, बुद्धिवादी युग और अन्तरिक्ष युग भी कहा जाता है। मनुष्य आज प्रकृति के समक्ष सीना तानकर खड़े रहने में सक्षम हो गया है। नयी-नयी ज्ञानोपलब्धियां मनुष्य प्राप्त करता चला जा रहा है। वे रहस्य जो अनन्तकाल से ही मनुष्य के लिये रहस्य थे, और जिनके बारे में केवल अटकलें लगाई जाती थी, वे आज खुली पुस्तकों के रूप में हमारे सामने हैं, इन्ही सन्दर्भों में आकर हमारे लोक-जीवन की और लोक-साहित्य की अमूल्य निधि कहावतें अपना महत्व घटा हुआ पाती हैं।

यद्यपि कहावतें ज्ञान का एक अक्षुण्ण भण्डार हैं, और उनके द्वारा निर्देशित विभिन्न विचार धारायें शाश्वत काल पर दृष्टि रखने वाली होती हैं; किन्तु समय परिवर्तनशील है। सृष्टि की हर वस्तु बदलती है। प्रकृति का प्रत्येक उपकरण नया चोला धारण करता है, जो नया चोला धारण नही कर सकता वह नष्ट हो जाता है। यही बात कहावतों पर होती है। जो कहावत अपना

शरीर अपनी आत्मा और अपने अर्थ के साथ अपकर्ष या उत्कर्ष करने को तैयार हो जाती है, वह तो अपना अस्तित्व बनाये रख सकती है, शेष नष्ट हो जाती है। कई बार कहावतें अपने अधिक प्रयोग से इतनी घिस जाती हैं कि फिर उनके अर्थ मे वह शक्ति और सामर्थ्य रहती, जितनी कि एक कहावत मे होनी चाहिए और एक समय ऐसा आता है कि वह अपना अस्तित्व समेट कर लोक-जीवन व लोक-साहित्य की दुनिया से विदा हो जाती है । जैसे कि 'जिसी राजा, बिसी प्रजा' कभी अपने आप मे और कहावती विश्व की सरताज और विशिष्ट कहावत मानी जाती थी, किंतु आज इसकी दुर्गति अपने चरमोत्कर्ष पर है।

एक ओर जहा कहावतें लुप्त और नष्ट होती जा रही हैं, वहा दूसरी ओर नई कहावतो का जन्म भी प्राय नही हो रहा है। इस बीमारी स न केवल बीकानेरी क्षेत्र का कहावती साहित्य ही ग्रसित है, बल्कि विश्व वाङ्गमय मे भी यही हाल है। नई कहावतें न जन्मने के कुछ प्रमुख कारण निम्नांकित हैं —

विद्या का प्रसार

आज का युग विद्या के प्रसार-प्रचार व अर्जन का युग है। प्रत्येक मनुष्य विद्यार्जन की होड मे आगे निकलने के प्रयास मे दृष्टिगोचर हो रहा है। कहावतें प्रमुख रूप से अनपढ लोगो का साहित्य है। लोक-जीवन मे ज्ञान का निचोड कहावतो के रूप मे उपलब्ध होता है । इन कहावतो के निर्माता न किसी पाठशाला मे गये, न किसी महाविद्यालय म गये बल्कि कार्य क्षेत्र और कर्त्तव्य-मैदान के मेनानो के रूप मे उनके मुख से निकल पड़न वाली उक्तिया ही कहावतें बन गई। जब ये कहावतें पढे-लिखे और उच्च शिक्षित वर्ग क सामने आती हैं तो ये मात्र उपहास की वस्तु बन कर रह जाती है, और 'तू म्हारी आव कर हूँ थारी आव करस्यू' — वाली कहावत के अनुसार नष्ट हो जाती है। इसी सन्दर्भ मे नई कहावत का पैदा होने का सवाल ही पैदा नही होता। इसलिये हम देखत हैं, आज हमारे बीकानेर क्षेत्र मे ही नही राजस्थान भर के ग्रामीण क्षेत्र म कहावतो का प्रचलन अधिक है, और शहरी क्षेत्र म नाम मात्र को और वो भी उनक बीच में जो किसी न किसी प्रकार से ग्रामीण क्षेत्र स सम्बन्धित हैं।

मनुष्य की सशयात्मकता

परिस्थिति जन्य विकास और विद्या-प्रसार के कारण मनुष्य आज अपेक्षाकृत अधिक सशयशील हो गया है। अत किसी न किसी चीज के प्रति उसका लगाव शीघ्रता स नही हो पाता। नई चीज के प्रति उसक मन में हजारो विचार

श्रोर शकायें जन्म लेती हैं, उन शकाओं के निवारणार्थ अनेकों सकल्प-विकल्पों के बीच कहावतें प्रचलित नहीं हो पाती हैं । पुरानी कहावतों के प्रति भी सशया-त्मकता के कारण अनेको प्रकार के विचार विनिमय करने के कारण वे भी अपना अस्तित्व समाप्त करने को तैयार हो जाती है ।

वैज्ञानिक मस्तिष्क की प्रतिक्रिया

यह युग प्रमुखत विज्ञान का युग है । इस युग मे प्राय मनुष्य भी वैज्ञानिक मस्तिष्क वाला प्राणी बनता जा रहा है । नाप जोख और प्रामाणिक नतीजे पर पहुचना वैज्ञानिक मस्तिष्क की मनोवृत्ति है । प्रत्येक चीज का सूक्ष्म से सूक्ष्म विश्लेषण करना आज आवश्यक प्राय हो गया है । बाल की खाल निकालने की प्रक्रिया में कहावती साहित्य अपने आप में पूरा नहीं उतरता । अत इसकी ओर से मनुष्य का मन उचट जाता है, विश्वास मे बाधा उत्पन्न हो जाती है । वैज्ञानिक विचारधारा वाला व्यक्ति कभी भी स्वीकार नहीं करेगा कि केवल 'चलती को नाम ही गाडी' है, या 'माथै मे दियां किंचा बोलै' ।

(४) अंधविश्वास का अत

ज्यो ज्यो शिक्षित वर्ग बढता जा रहा है और उनमें अन्धविश्वासो के प्रति अनास्था जागृत होती जाती है त्यो त्यो कहावती साहित्य भी प्रभावित होता जा रहा है । बहुत सी कहावतें केवल अन्धविश्वासों पर ही आधारित होती है. जब इनका अन्त हो जाता है तो फिर 'मानो तो देव नही तो भीत'रा लेव' नही रहता बल्कि मानने पर भी 'भीत का लेव' और न मानने पर भी ऐसा ही रहता है । इसी तरह 'न तीन रो नाम भूंडो' तथा न 'तीन तिगाडा काम बिगाडा' की सम्भावना रहती है ।

नये विषयों का अभाव

कहावतें विभिन्न विषयों पर आधारित होती हैं । यद्यपि मानव मन और उसके कर्म अपरिमित हैं और ज्ञान का भण्डार भी अक्षुण्ण है फिर भी नई कहावतों के लिए ठोस आधार व नपे तुले अनुभवात्मक विषयों की आवश्यकता होती है । चूंकि न केवल बीकानेर क्षेत्र और राजस्थानी भू-भाग में ही कहावतों का प्राचुर्य है बल्कि विश्व के अन्य देशो मे भी इनकी बहुलता मिलती है । अकेले योरप में तीस चालीस हजार से कम कहावतें नही होगी । केवल स्पेन म १५००० कहावतें होगी ।[1] मनुष्य के आचार-विचार, स्वभाव, पशु-पक्षी स्त्री, विषयक,

1... R C Trench, Dession in Proverbs, P. 51-52

ईश्वर विषयक, कृषि विषयक, नीति और आदर्श विषयक आदि विषयों पर बहुतायत से कहावतें मिलती हैं । हमारे यहाँ बीकानेर में भी उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त देवी, देवता, राजा प्रजा, और रेगिस्तान सम्बन्धी हजारों कहावतें उपलब्ध हैं।

परिवर्तित परिस्थितिया

समय और परिस्थितिया परिवर्तित होते रहते हैं । अत बहुत सी कहावतें जिनका जन्म एक परिस्थिति म हो गया हो, और कालान्तर म वह नष्ट हो गई हो । फिर ऐसी परिस्थितिया आयेगी नही और न ही ऐसी कहावतें जन्म ले गी । राजतन्त्र पहले विश्व म प्रमुखतम राजनीतिक व्यवस्था थी, किन्तु अब लोकतन्त्र प्रमुख हो गई है । अत राजतन्त्र की समस्त मान्यतायें और धारणायें व्यर्थ हो गई हैं । अत न राजा भगवान री रूप' है और न 'राजा जिसी प्रजा' है। बहुत सी कहावतें अपनी अश्लीलता के कारण नष्ट हो जाती हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बहुत सी प्राचीन कहावतें लुप्त हो जाती हैं नई कहावतो के जन्म की सम्भावना नही रहती । फिर भी ऐसी बात नही है कि नई कहावतें बनती ही नही हैं बनती तो है, किन्तु उस बहुतायत से नहीं जिस बहुतायत से पुराने जमाने मे बनती थी । बीकानेर क्षेत्र का यह सौभाग्य प्राचीन काल से ही है अर्थात अपने स्थापना काल से ही जोधाणो सो बिकाणो' 'रण बका राठोड' तथा 'गढ मे बीको र शहर म कोको जैसी सवमान्य उक्तियो मे विकसित होता हुआ कहावती साहित्य अपने विकास के चरमोत्कर्ष पर बणाज्या रतन' और वारे राजा गणेस थारी माला फेरू हमेस तथा अपोलो बणाणो' तक पहुच गया है । वैसे तो कहावत निर्माण काय म विशेष आशा नही की जा सकती । हा यह निश्चित है कि- भविष्य म इस क्षेत्र का कहावती साहित्य मरेगा नही उसमे नई सम्भावनायें और शोध का दृष्टिया बढेंगी ।

==

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची—

(१) बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग), गौरीशंकर हीराचंद ओझा।

(२) बीकानेर परिचय—गौरीशंकर आचार्य।

(३) राजस्थान का इतिहास—कर्नल टॉड।

(४) श्री कपिलायतन तीर्थ महात्म्यम्—पं० विष्णुदत्त शर्मा।

(५) बीकानेर राज घराने का केन्द्रीय-सत्ता से संबंध—डा० करणीसिंह।

(६) बीकानेर का राजनीतिक विकास और प. मघाराम वैद्य—सम्पादक सत्यदेव विद्यालंकार।

(७) राजस्थानी कहावतां (भाग १-२) सम्पादक-नरोत्तमदास स्वामी और पं० मुरलीधर शर्मा।

(८) राजस्थानी कहावतें-एक अध्ययन—डा. कन्हैयालाल सहल।

(९) हिन्दी मुहावरे—गयाप्रसाद शुक्ल।

(१०) मुहावरा मिमांसा—डा. ओम प्रकाश।

(११) किसन रुकमणी री वेलि—सं. नरोत्तमदास स्वामी।

(१२) कबीर ग्रंथावली—स. श्यामसुन्दर दास।

(१३) राजस्थान भारती—अप्रेल, मई, जून—सन् १९४६।

(१४) ग्रामोत्थान पत्रिका (राजस्थान दिवस विशेषांक) अप्रेल, मई—१९५६।

(१५) Gazzatear of the Bikaner state—Captain P. W. Powlett.

(१६) Lessons in Proverbs—R. C. Trench.

(१७) A Treasury of English aphorims—Logan, Pearsallsmith.

(१८) The people of India—Sir Harbert Resley.

(१९) स्वातन्त्र्योत्तर बीकानेर की काव्य चेतना—बनवारी लाल सहू (पाण्डुलिपि)